The heroine (náyiká) is Vasantasená, a beautiful and wealthy lady, who although "according to the strictest standard of morality, not irreproachable in character, might still be described as conforming to the Hindu conception of a high minded liberal woman Moreover, her naturally virtuous disposition becomes strictly so from the moment of her first acquaintance with Charudatta" (Monier Williams) "The masterpiece of the play, however, is Samsthanaka, the Raja's brother in law A character so utterly contemptible has perhaps been scarcely ever delineated, his vices are egregious, he is coldly and cruelly malicious, and yet he is so frivolous as scarcely to excite our indignation, anger were wasted on one so despicable, and without any feeling of compassion for his fate, we are quite disposed, when he is about to suffer the merited punishment of his crimes, to exclaim with Charudatta, 'Loose him and let him go' He is an excellent sample of a genus too common in every age in Asia, whose princes have been educated by sloth and servility, and have been ordinarily taught to cherish no principle but that of selfish gratification"*

Dr Grierson has mentioned two other Hindi translations of this play in his Modern Vernacular Literature of Hindustan These seem to be out of print The importance of the play, however, I believe, will be considered sufficient apology for my including a fresh translation of it in the present series

CAWNPORE }
28th August, 1899 } SITARAM

पहिली आवृत्ति की भूमिका

—'o—

अवधपुरी सुखमाअवधि तामधि स्वर्गद्वारि।
जगपावनि सरयू जहाँ बहत सुहावन वारि॥
तहाँ रह्यो कायस्थ एक श्रीशिवरत्न उदार।
श्रीरघुपतिपदकमल महँ ताकी भक्ति अपार॥
सियरघुबरयुगचरनरत तासुत सीताराम।
रसिनाम कवितासुगम धरत भूप उपनाम॥
श्रीसुरसरि के तट नगर कानपूर करि वास।
नाटकमाला के रतन कीन्हें चारि प्रकास॥
संवत ऋतुशरनन्दशशि नभ सित छठ शनिवार।
मृच्छकटिकभाषा विरिचि करत लोकउपहार॥
देशकालइतिहास जो जानत चतुर प्रवीन।
गनैं विक्रमहु से अधिक यह नाटक प्रचीन॥
इहाँ विलोकैं रसिकजन लोकरीति कुल-चाल।
साधारण जन महँ रही सब जैसी तेहि काल॥
दोष न गनत कुलीन करि प्रेम पातुरो सग।
देइ निरादृत प्रानहूँ पातुर प्रेम अभग॥
जाय अदालत माँह ज्यो दुष्ट प्रकृति के लोग।
झूठ जाल रचि सिध करत नारिवधनअभियोग॥
सभ्यन सग हाकिम करत ज्यो अभियोग विचार।
निर्णय परिपाटी सकल दृढदेनव्यवहार॥
युक्ति अनूठी सहित सब शूद्रक रच्यो सवारि।
पढ़ैं मुदित मन सुजन तेहि मेरे दोष बिसारि॥

सीताराम

नाटक के पात्र

पुरुष—

चारुदत्त—एक बिगड़ा रईस और नाटक का नायक।
रोहसेन—चारुदत्त का लड़का।
मैत्रेय—नाटक का विदूषक और चारुदत्त का साथी।
वर्द्धमानक—चारुदत्त का नौकर।
संस्थानक—राजा पालक का साला और उज्जयिनी का कोतवाल।
स्थावरक—संस्थानक का नौकर।
आर्यक—एक अहीर जो राजा पालक को मारकर पीछे राजा हुआ।
शर्विलक—एक ब्राह्मण, आर्यक का मित्र।
संवाहक—एक जुआरी, जो पीछे, बौद्धसंन्यासी हो गया।
माथुर—जुए की नालवाला।
दर्दुरक—एक जुआरी।

कर्णपूरक }
कुम्भिलक } बसंतसेना के सेवक।

फौजदारी अदालत का हाकिम।
सेठ और कायस्थ—अदालत के सभ्य (असेसर)।

वीरक }
चन्दनक } नगर की रक्षा के अधिकारी (पुलिस के अफसर)

शोधनक—अदालत का नाजिर।

स्त्री—

बसंतसेना—एक परम उदार पातुरी और नाटक की नायिका।
बुढ़िया—नायिका की मा।
मदनिका—बसंतसेना की लौंडी।
धूता—चारुदत्त की स्त्री।
रदनिका—चारुदत्त की लौंडी।
विट (मुसाहिब), जुआरी, वधुल, सिपाही, चांडाल, चेरियाँ आदि।

श्रीसीतारामाभ्याम्नम

मृच्छकटिकभाषा

प्रस्तावना

[स्थान—एक कमरा]

(नान्दी)

जय घुटनन लपटत भुजङ्ग बैठे योगासन।
जय रोके निज प्रान किए निज बस इन्द्रिय मन॥
जयति करत संहार सृष्टि सन दृष्टि हटाये।
जयति समाधि अभंग ब्रह्म निज माहिं लगाये॥
जय जयति बैठि साकार प्रभु लाय दृष्टि निज ज्ञानमय।
निज ब्रह्मरूप आकार बिन निरखत श्रीगौरीश जय॥

शम्भुकण्ठ जनु श्याम घन, सदा करे कल्यान।
गौरीभुज सोहत जहां, बिज्जुरीरेख समान॥

(नान्दी के पीछे सूत्रधार आता है)

सूत्र—बस, बस, बहुत हो चुका, लोग उकता गये। आप लोगों से हाथ जोड़कर विनती करता हूँ कि आज हम लोग मृच्छकटिक नाटक खेलना चाहते हैं जिसको संस्कृत में राजा शूद्रक ने रचा था।

सुघडशरीर चकोरदृग ससिमुख भ्राजनचाल। हाथी
द्विजवर शूद्रक नृप रह्यो बल सोइ धरत बिशाल॥
सामवेद ऋग्वेद गणितविद्या पढ़ि डारी।
गजशिक्षा सब सीखि, कला वैशिकिहु सारी॥
शिव की कृपा प्रसाद जोति दृग की फिर पाई।
अश्वमेध को यज्ञ कीन्ह निज कीर्ति दृढ़ाई॥

करि पूर्ण काम निज जन्म कर देइ राज निज पुत्र कहँ।
सौ बरिस दिवसदस आयु लहि पैठे नृप सोइ अग्नि महँ॥
समर चहत तप करत अरु जागत वेद अथाह।
रिपुगज से निज भुज भिरे श्रीशूद्रक नरनाह॥

श्रार उनके इस ग्रंथ में

चारुदत्त एक द्विज भयो निर्धन गुणी उदार।
सोइ नगरी उज्जैनि में करत बनिज ब्योपार॥
बसन्तसेना तहँ रही गनिका परम सयानि।
चारुदत्त के देखि गुन तापे रही लुभानि॥
तिन की प्रेमकथा सफल हुए खलन की नीति।
राजा शूद्रक यह रची न्यायालय की रीति॥

इस अपूर्व ग्रन्थ का श्री अवधवासी सीताराम ने यथाशक्ति देशभाषा में अनुवाद किया है। आशा है कि आप लोग कृपा-दृष्टि से हमारा अभिनय देख कर ग्रन्थकार के परिश्रम को सफल करेंगे।

(घूम कर देख कर) अरे! हमारी संगीतशाला सूनी क्यों देख पड़ती है? नट कहाँ चले गए? (सोच कर) हाँ जाना—

पुत्रहीन घर सून है, मित्रहीन जग सून।
मूरख को सब सून है, दारिद सब से ऊन॥

गाना हो चुका, अब बड़ी बेर से गाते गाते गर्मी में घाम के सूखे कमल के बीजों की नाईं भूख के मारे मेरी आँखें कड़कड़ा रही हैं, तो अब घरवाली को बुलाकर पूँछू कि कुछ कलेवा है कि नहीं। अरे, अरे, बेर से गाते गाते सूखे कमल के डंडे की नाईं मेरे हाथ पैर कुम्हलाए जाते हैं, तो अब घर में जाकर देखूँ कि घरवाली ने कुछ बनाया है कि नहीं। (घूम के देख कर) है मेरा घर, तो अब चलूँ। (घूम कर देख कर)
तो हमारे घर बड़ा सामान हो रहा है—मौ

रही है, कटाहो के मारे रसोई का घर ऐसा जान पड़ता है माने धरती के मुँह पर गोदना गोदा गया है, भोजन की सुगध से मेरे पेट की आग और भी भड़क उठी। क्या कोई पहिले का रक्खा धन मिल गया है या हमी को भूख के मारे घर में भात ही भात देख पड़ता है! हमारे घर में कलेवा करने को कुछ है नहीं और भूख के मारे हमारे प्राण निकले जाते हैं। और यहाँ समान नया हो रहा है, एक रंग पीस रही है, एक फूल गूँथ रही है। (सोच कर) यह क्या है? अच्छा, घरवाली को बुलाकर पूछूँ (नेपथ्य की ओर देख कर)— प्यारी! इधर तो आओ।

(नटी आती है)

नटी—कहिए।

सूत्र—बहुत अच्छे आई।

नटी—कहिए क्या आज्ञा है?

सूत्र—बड़ी देर से गाते २ (इत्यादि फिर पढ़ता है)—कुछ हमारे घर में खाने पीने को है?

नटी—जी, सब कुछ है।

सूत्र—क्या क्या है?

नटी—मीठा भात है, घी है, दही है, जो जो आप खा सकते सो सब कुछ है, सब तो भगवान ने दिया है।

सूत्र—क्या हमारे घर में सब कुछ है! या हँसी कर रही हो?

नटी—(आपही आप) अच्छा तो हँसी ही करूँ (प्रकाश) ...में सब है।

...—(क्रोध से) अरे तेरा सत्यनाश हो! तू मुझे मिट्टी ...की नाईं आकाश पर चढ़ा कर गिरा रही है।

...ी—(हाथ जोड़कर) क्षमा कीजिए, मैंने हँसी की थी

सूत्र—तो आज यहाँ क्या सामान हो रहा है? एक रंग पीसती है, दूसरी माला गूँथती है, आँगन में फूलों का चौक पूरा हुआ है।

नटी—आज व्रत है।

सूत्र—क्या नाम है इस व्रत का?

नटी—'अभिरूपपति'।

सूत्र—इसको क्यों किया?

नटी—जिसमे अच्छा वर मिले।

सूत्र—इस लोक में या परलोक में?

नटी—जी परलोक में।

सूत्र—(क्रोध से) देखिये, देखिये, आप लोग! यह हमारा भात लुटाकर परलोक का भतार माँगती है।

नटी—क्षमा कीजिए, मैंने इस लिए किया है कि दूसरे जन्म में भी आपही मिलें।

सूत्र—यह व्रत किसने बताया है?

नटी—आपके मित्र चूर्णवृद्ध ही ने तो।

सूत्र—(क्रोध से) अबे चूर्णवृद्ध! एक दिन तुझे भी राजा पालक नई बहू के जूड़े की नाईं बाँध देंगे।

नटी—क्षमा कीजिए, आपही के लिये यह व्रत किया गया है। (हाथ जोड़ पैरों पर गिरती है)।

सूत्र—उठो, उठो, कहो अब इस व्रत में क्या करना चाहिये।

नटी—हम लोगों के बराबर का ब्राम्हन खिलाना चाहिये।

सूत्र—अच्छा, तो तुम जाओ, हम भी अपने बराबर ब्राम्हन ढूँढें।

नटी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

सूत्र—(कुछ चलकर) अरे इतनी बड़ी उज्जयिनी में बराबर का ब्राम्हन कहाँ ढूँढें (देखकर) अरे, चारुदत्त का मित्र मैत्रेय इधर ही आ रहा है, तो इसी से पूछें—मैत्रेय जी! आप का आज हमारे घर न्योता है।

(परदे के पीछे)

अजी, तुम और ब्राह्मन न्योतो, हमे छुट्टी नहीं है।

सूत्र—सब भोजन तैयार है और वहां आपी आप होंगे और कुछ दक्षिणा भी आप को मिल जायगी।

(परदे के पीछे)

एक बेर तो तुम को जवाब देही दिया, क्या बार बार हठ कर रहे हो?

सूत्र—यह तो चला गया, अब चलूँ और किसी से कहूँ।

(बाहर जाता है)

पहिला अङ्क

[स्थान—चारुदत्त के घर के आगे सड़क]

(दुपट्टा हाथ में लिए मैत्रेय आता है)

मैत्रेय—अजी तुम और ब्राह्मन न्योतो, अब हम को और और के घर न्योता खाना पड़ेगा। हा, अब ऐसी दशा हो गई! जब चारुदत्त की बढ़ती थी तब तो हम दिन रात बिना झगड़े बखेड़े के महँकती महँकती मिठाइयां खाते थे। और फाटक पर बैठे रंग रंग के भोजनों से चितेरे की नाईं अपनी अँगुली रंगते थे या चौक में सांड की नाईं बैठे पागुर सी किया करते थे, अब वह दरिद्र हो गये तो पालतू कबूतर ऐसे इधर उधर दाना चुग चुग कर यहां रात को बसेरा लेने आते हैं! आज चारुदत्त जी के मित्र चूर्णवृद्धि ने चमेली के फूलों से बसा दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब चारुदत्त जी सन्ध्या पूजा कर चुकें तो उनको दे देना। (घूमके देखकर) अरे, चारुदत्त जी तो पूजा करके बलि देते हुए इधर ही आ रहे हैं, तो हम भी इन के पास चलें।

[दूसरा स्थान—चारुदत्त की बैठक]

(चारुदत्त बलि का कटोरा हाथ में लिये हुए खड़ा है और रदनिका उस के पीछे खड़ी है)

चारु—(ऊपर देख कर साँस लेकर)

मेरे घर की देहरी धारत साँझ सकार।
खाई सारस हंस जो झुकि झुकि वारहिं वार॥
सोई बलि अब द्वारपै जमत घास फँसि जात।
ताहि खाय के हाथ सब कीटहुँ नाहिं अघात॥

(धीरे धीरे चल कर बैठ जाता है)

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—(आगे बढ़कर) जय हो, बढ़ती हो!

चारु—अरे मैत्रेय, आओ आओ बैठो।

मैत्रे—बहुत अच्छा। (बैठ कर) अजी आप के मित्र चूर्णवृद्ध ने चमेली के फूलों का बसा हुआ यह दुपट्टा दिया है और कहा है कि जब चारुदत्त जी पूजा कर चुकें तब उन्हे दे देना, सो यह लीजिये (दुपट्टा दे देता है)

चारु—(दुपट्टा लेकर कुछ सोचता है)

मैत्रे—अजी क्या सोचते हो?

चारु—भाई, सुखरस मिलै दुःख कछु पाई।
घन अँधेर दीपक की नाई॥
सुख लहि जे दरिद्र हैं जाहीं।
ते जीवत मृत सरिस लखाहीं॥

मैत्रे—तो आपको क्या अच्छा लगता है, दरिद्र रहना या मरना?

चारु—मोहिं दारिद अरु मरन में दारिद नाहिं सोहाय।
मरन होत दुख एक ही, दारिद दुखसमुदाय॥

मैत्रे—आप को सोच करना नहीं चाहिए। आपने अपना धन बाँट दिया अब आप अमावस के से चांद हो गये जिस का अमृत ... पी गये हैं।

चारु—भाई हमको कुछ धन का सोच नहीं ।

मो कहँ एक दुख बड़ लागत ।
मो घर अतिथि लोग अब त्यागत ॥
सूखत मनहुँ कुम्भ पर दाना ।
होत हीनमद द्विरद समाना ॥

मैत्रे—अजी धन भी बड़ा पाजी होता है कि बरैयो के डर के मारे अहीरो के लौंडे सा जहाँ उसे कोई खा न डाले वहीं जाता है ।

चारु—मोहिं धन नास सोच कछु नाहीं ।
मिलैं भाग सन धन अरु जाहीं ॥
एक दुख मोहिं नित्य जरावत ।
अब मित्रहु कछु ढील जनावत ॥

और भी—धन नसत उपजत लाज तेहि मन तेज सकल नसात है ।
बिन तेज परिभव लहत परिभव पाइ मन मरिजात है ॥
मन मरे उपजत सोच बुद्धिहु सोचबस सब नसत है ।
बिन बुद्धि को छय होत, दारिद सकल अनरथ बसत है ॥

मैत्रे—अजी धन के लिये कब तक सोच करेंगे ?

चारु—भाई दरिद्रता भी,
चिन्ता घेरे रहत और से लहै अनादर ।
मित्रहु देखि घिनात व्यर्थही बैर करत नर ॥
सगे पराये होत करत आदर नहिं नारी ।
सोचत ही दिन बितत रहै नर सदा दुखारी ॥

मैत्रेय, हमने कुल देवताओं को बलि दे दी, अब तुम जाके चौराहे पर बलि दे आओ ।

मैत्रे—हम तो न जायँगे ।

चारु—क्यों ?

मैत्रे—अजी पूजा करने से देवता तुम पर प्रसन्न नहीं होते तो क्यों पूजा करते हो ?

चारु—भाई, ऐसा न कहो, यह तो गृहस्थ का धर्म है,

तन मन वच बलिकर्म सो पूजे सुर ससार।
होत प्रसन्न मनुष्य पर, यहि में कौन विचार॥

तो जाओ देवियो को बलि चढ़ा आओ।

मैत्रे—हम न जायँगे और किसी को भेज दीजिये। हम तो बाम्हन हैं, हमसे सब उलटे का पुलटा हो जाता है, जैसे दर्पनो में परछाईं, दहिने का बाँया और बायें का दहिना, और एक बात और है, रात की बेर सड़क पर रंडी, बटमार, राजा के लग्गू भग्गू सब घूमते फिरते हैं, इनके बीच में जो कहीं पड़े तो मेढक के धोखे साँप के मुँह मे मूसे की दशा हमारी हो जायगी, आप यहाँ बैठे बैठे क्या करते हैं?

चारु—अच्छा ठहरो हम जप करते हैं?

(परदे के पीछे)—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो।

(बसन्तसेना और उसके पीछे सस्थानक, उसका सङ्गी विट और टहलुआ दौड़ते हुए आते हैं)

विट—खड़ी रहो बसन्तसेना, खड़ी रहो।

क्यो डर बस निज अङ्ग की सुकुमारता बिहाय।
नाच माहि लीला करत डारत सो निज पाय॥
घबरानी चचल नयनि इत उत चकित निहारि।
मृगी सरिस भागति चली पीछे व्याध विचारि॥

सस्था—खड़ी रह, बसन्तसेना, खड़ी रह,

गिरति पड़ति भागी तू जाहि।
ठाढी रहु तू मरिहै नाहि॥
तो पर हियरा जरै हमार।
जैसे मांस परे अङ्गार॥

टहलुआ—बाई जी ठाढो रहो,

डर से मोसे भागी जाय।
जैसे मोरी पूँछ फुलाय॥

आय गये हमरे सरकार।
जैसे कूकुर करैं सिकार॥

विट—खड़ी रहो, वसंतसेना, खड़ी रहो।
नव कदली सी देह कँपावत॥
वायु-वेग निज वस्त्र हिलावत॥
टाँकी सन ज्यों मनसिज फारत।
लाल कमल पद पद पर डारत॥

सस्या—खड़ी रहो, वसंतसेना, खड़ी रहो,
मेरे मन महँ चाह बढ़ावति।
तेरे बिना नींद नहिं आवति॥
भाग न तू परिहै मेरे बस,
रावन हाथ परी कुन्ती जस॥ सीता

विट—वसंतसेना,
क्यों भागति वेगहिं तू ऐसी।
गरुड़ त्रास सम नागिनि जैसी॥
सकत धाय मैं लाँघि बयारी।
मैं चाहत नहिँ अपति तुम्हारी॥ गिर रहा कैला

सस्या—अजी सुनो,
चोरन की मनहरनिहारि यह नाचनवारी।
मछरीखानेहारि काम की रुचिर पिटारी॥
परधन नासनहारि वसङ्कवावनहारी।
सुन्दरि गहनेधारि नहीं बैस आवनहारी॥
यदि पातुर रंडी बेसवा नाम अनेकन हम कहत।
पै नीच पातुरी दुष्ट यह तऊ हमे नाहीं चहत॥

विट—क्यों डर बस व्याकुल तू धावति।
कुहल सन निज गाल बसावति॥
बाजत मनहु चतुर कर बीना।
गर्जत घन हँसी ज्यों दीना॥



सस्था—गहना धाजति जब तू भागति।
राम के डर द्रुपदी अस जागति॥
धरध तुमहि जैसे हनुमान।
धरी सुभद्रा अब तैं जान॥
टहलुआ—आउ राजसारे के पास।
तब तू लैहै मछरी मांस॥
जब पावत हैं मछरी मास।
तब नहि कूकुर छुवैं जहास॥
विट—बसंतसेनाबाई,
कटितट सुन्दर किंकिनि छाजत।
तारागन सम लसत विराजत॥
मुखछबि सेंदुररंग लजावति।
डर बस पुरइवो सम धावति॥
सस्था—अरबराय के भागति नारि।
कूकुर से जैसे सीयारि॥
जल्दी जल्दी दौरत जाय।
मोरा चित तैं लियो चुराय॥

वसंतसेना—पल्लविका! पल्लविका! परभृतिका! परभृतिका!

सस्था—भाई, कोई और भी है?

विट—डरो न, डरो न,

वसंत—माधविका! माधविका!

विट—अजी, वह तो अपनी लौंडियो के पुकार रही है।

सस्था—भाई, लुगाई ढूँढ़ती है।

विट—हां, हां।

सस्था—लुगाई तो हम सौ मार सकते हैं—हम बड़े सूर हैं।

वसंत—(सूना देख कर) हाय, हाय, क्या सब पीछे रह गईं! हाय, तो अकेली ही हूँ!

विट—ढूँढ़ो, ढूँढ़ो!

सस्था—बसंतसेना, रे रे, परभृतिका को बुला चाहे पल्लविका को, हमसे तुझे कोई छुड़ा नहीं सकता।

भीमसेन जमदग्नि का बेटा।
कुन्ती सुत ज्यों दसकंधर था॥
अब हम झोंटा धरब तुम्हार।
दु सासन केरी अनुहार॥

अरे देख, देख—हम मारब पैनी तरवार।
काटब अबहीं मूँड़ तुम्हार॥

तो भाग, न, जो मरने को होता है सो जीता नहीं।

बसंत—हम तो अबला हैं।

विट—जभी तो जीती हो।

सस्था—जभी तो न मरेंगी।

बसंत—(आप ही आप) यह सीधी बातें कहता है तब भी जी डरता है, अच्छा यह कहूँ। (प्रकाश) आप लोग मेरे गहने लेंगे।

विट—राम, राम, बसंतसेना जी, बाग की लता से कोई फूल चुराता है? गहनों का नाम न लो।

बसंत—तो फिर क्या करोगे?

सस्था—हम बासुदेव हैं, हमारे पास रह।

बसंत—चुप रे चुप, ऐसी बात न कह।

सस्था—(ताली बजा कर हँसता है)

विट—बसंतसेना जी, आप अपने वेश्यापन के विरुद्ध क्यों बातें करती हैं?

उद्यानन की सँग रहनहीं परमधर्म निज मानु।
डगी लता सी राह पै निजहि पातुरी जानु॥
तेरो तन जोबन अहै धन के हाथ बिकान।
नीको लगै कि ना लगै मिलु गनि सबहि समान॥
पंडित बाम्हन मूरख नीच नहात सबै जल्नु एक तलाई।
बैठत बायस फूली लता सोइ पख के भार जो मोर नवाई॥

बाम्हन छत्रिय वैश्य और शूद्र उतारत एकहि नाव चढ़ाई।
तूहुँ लतासी, तलाईसी, नावसी, पातुरि है; सबसे मिलु धाई॥

बसत—गुन देख के मन लगता है, बरजोरो से नहीं।

सस्था—यह पतुरिया जब से कामदेव के मन्दिर में गई, तब से दरिद्र चारुदत्त से इस का मन लग गया है, हमै नहीं चाहती। उसका घर बायें हाथ है, देखिए यह हमारे हाथ से निकल न जाय।

विट—(आप ही आप) जो छोड़ना चाहिये वही गधा कह रहा है। क्या बसतसेना चारुदत्त को चाहती है? ठीक है, रत्न रत्न ही के साथ रहता है, इस मूर्ख को लेके क्या करेगी। (प्रकाश) चौधरी का घर क्या बायें है?

सस्था—हां, हां, बाईं ओर घर है।

बसत—(आप ही आप) अरे, उनका घर बाईं ओर है तो इन पापियो ने मेरे साथ बडा उपकार किया जो मुझे पीतम के घर पहुँचा दिया।

सस्था—अजी, बडा अँधेरा है। बसतसेना ऐसी हेराय गई है जैसे उर्द की ढेरी में मसीका टुकडा।

विट—बड़ा अँधेरा है।

यद्यपि सब कुछ लखि सकैं परे अँधेरे माहि।
खुले तऊ मूँदे सरिस देखैं द्दग कछु नाहि॥
और, बरसै जनु काजल गगन।तम लिपटत सब गात।
दीठि नीचसेवा सरिस बिफल भईसी जात॥

सस्था—अजी हम तो बसन्तसेना को ढूँढ़ते हैं।

विट—तुम्हे कोई चिन्ह मिलता है?

सस्था—कैसा चिन्ह?

विट—गहनों की झनझनाहट या फूलों की महक?

सस्था—अजी, हम फूलों की महक सुन रहे हैं और नाक में ... है तो भी गहनों की झनझनाहट साफ देख रहे हैं।

विट—(अलग बसंतसेना से) बाई जी!

तुम तम बस लखि परौ न कामिनि।
छिपी मेघ भीतर ज्यों दामिनि॥
मालगन्ध औ नूपुर की धुनि।
तुमहि जनावत लेहु हिये गुनि॥

बाई जी, आपने सुना?

बसंत—(आपही आप) सुना और समझ भी लिया। (गहने उतार डालती है और माला फेंक देती है—कुछ चल कर हाथ से छूकर) अरे भीत टटोलने से खिड़की जान पड़ती है सो भी संयोग से बन्द है।

चारु—(भीतर से) भाई, हमारा जप हो गया है। अब तुम चौराहे पर बलि दे आओ।

मैत्रे—(भीतर से) मैं न जाऊँगा।

चारु—हाय! हाय!!

दारिद्र बस कोउ तासु कहने माहिं नाहीं रहत है।
रिपु बनत नेही मीतहू, नित विपति नई सो सहत है॥
बल घटत ताके शीलससि की ज्योतिहू घटि जात है।
जो औरहू कोउ पाप कीन्हो ताहि सबै सुनात है॥
साथ नहीं कोउ ताको करे अरु आदर से नहिं बोलत कोई।
उत्सव में घर आत धनीन के देखैं अनादर से सब लोई।
थोरेहि वस्त्र धरे तन लाजसे दूरि चले सब लोग से सोई।
पाँचहों पाप बड़े हैं लिखे हम जानें छठो यह दारिद होई॥

दारिद सोच होत मोहिं यहा।
हित सम रहत मोरि तुम देहा॥
जैहैं निसरि जबै मम प्राना।
रहिहैं कहाँ तुम्हार ठिकाना॥

मैत्रे—(उदास होकर) अच्छा, जो हमीं को जाना है तो हमारे साथ रदनिका को कर दो।

चारु—रदनिका, मैत्रेय के साथ जाओ।

रदनि—बहुत अच्छा।

मैत्रे—तुम दिया लेलो और बलि उठालो, हम खिड़की खोलते हैं। (खिड़की खोलता है)

बसंत—यह मेरे ही लिए खिड़की खुली है, मैं घर में घुस जाऊँ। (देख कर) हाय दिया कहाँ से आया? अंचल से दिया ठंढा करके घुस जाती है)।

चारु—मैत्रेय, क्या हुआ?

मैत्रे—अजी खिड़की खुलते ही बयार का झोंका जो लगा तो दिया बुझ गया। रदनिका तुम बाहर चली जाओ, हम भीतर के चौक से दिया बारे लाते हैं। (बाहर जाता है)

सस्था—अजी, बसंतसेना को कब से ढूँढते हैं, नहीं मिलती।

विट—ढूँढिये।

सस्था—(विट को पकड़ कर) यह पकड़ी, यह पकड़ी।

विट—अजी यह तो हम हैं।

सस्था—अच्छा तो तुम अलग खड़े हो (फिर टटोल के टहलुए को पकड़ कर) अब पकड़ा।

टहलुआ—सरकार, मै तो चाकर हूँ।

सस्था—इधर चाकर, इधर सगी, सगी चाकर, चाकर सगी तुम एक ओर खड़े हो। (फिर टटोल कर रदनिका को पकड़ कर) अब पकड़ा बसंतसेना को।

मागत निशि अँधियार में सूँघि मालतीवास।
द्रुपदी को चाणक्य ज्यों धरी पकरि कचपास॥

विट—यह गणिका जोबनमदमाती।
गुनी कुलीन पुरुष रँगराती।
गूँधि फूल जेहि नित्य सँवारा।
खैंचत गहि सोइ केश शकारा॥

संस्था—हम पकरा धरि तोर कपार।
जूरा झोंटा केसा बार॥
रोउ विघरु श्रो सोर मचाउ।
शंकर शिव महदेव बुलाउ॥

रदनि—(डरके) आप क्या करेंगे?

विट—अजी यह तो किसी और की बोली है।

संस्था—अजी जब बिल्ली दही चुराने को होती है तो कैसी बोली बदल लेती है?

विट—अरे, क्या बोली बदल डाली? बडा अचरज है और अचरज भी क्या है—

सिखे बोल बहु जानि के यह नाटक के हेत।
नहिं अचरज बानी बदलि जो यह धोखा देत॥

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—अरे, सांझ की बयार मे दिया ऐसा फुरफुराता है जैसे बलिदान के बकरे का जी। (बढ़के) अरे रदनिका!

संस्था—विट जी, कोई और आगया।

मैत्रे—देखो, यह अच्छी बात नहीं है कि चारुदत्तजी दरिद्र हो गये तो उनके घर जिसका जी चाहे घुस आवे।

रद—देखो मैत्रेय जी! हमारी कैसी बेइज्जती करते हैं।

मैत्रे—यह तुम्हारी बेइज्जती नहीं, हमारी है।

रद—और क्या आपकी तो हई है।

मैत्रे—तो क्या बरजोरी करता है?

रद—जी हां।

मैत्रे—सच?

रद—सच।

मैत्रे—(क्रोध से लाठी उठाके) राम, राम, अपने घर में तो कुत्ता भी सेर होता है, हम तो बाम्हन हैं। तो अब इसी लाठी से जो हमारे भाग की नाईं टेढ़ी है पाजी का सिर तोड़ डालेंगे।

विट—देवता! छमा करो छमा करो।

मैत्रे—(विट को देख कर) इसने कुछ नहीं बिगाड़ा (सस्थानक को देखकर) अबे क्यों वे राजा के साले पाजी! यह कौन मलमसी है कि आज चारुदत्त जी दरिद्र हो गये तो क्या उनके गुनो से उज्जयिनी की बड़ाई नहीं है जो तू उनके घर मे घुस के नौकर चाकर को सताता है।

बुरा होत धन नसे न कोई।
दैव सौंह सो बुरा न होई॥
सदाचार जो छांड़त लोगा।
धनी रहेहु निन्दनजोगा॥

विट—(घबड़ा के) महाराज! छमा करो, छमा करो। और के धोखे ऐसा अपराध किया, कुछ गर्व से नहीं किया।

हम ढूंढ़त एक कामिनी—

मैत्रे—हम को?

विट—राम राम— जो तन निज आधीन।
सो भागी धोखा परे यह कलंक हम लीन॥

तो अब कृपा करके छमा कीजिए (तलवार रख कर हाथ जोड़, पैरों पड़ता है)

मैत्रे—तुम बड़े भले मानुस हो, उठो उठो, हमने बिना जाने तुम्हें कहा, अब जान गये तो छमा मांगते हैं।

विट—आप भी हमारा अपराध छमा कीजिए। हम तो तब उठेंगे जब आप हमारी एक बात मान लेंगे।

मैत्रे—कहो कहो।

विट—कृपा करके यह बात चारुदत्त जी से न कहियेगा।

मैत्रे—न कहेंगे।

विट—विप्र अनुग्रह तोर यह हम धारैं निज माथ।
हम हारे गुणशस्त्र से यदपि शस्त्र निज हाथ॥

सस्था—(रोष से) तुम्हें क्या हुआ जो पाजी बनर के हाथ जोड़ के पाँव पड़ते हो?

विट—हम डरते हैं।

सस्था—किसको डरते हो?

विट—चारुदत्त के गुणों को।

सस्था—उसमें कौन गुण है जिसके घर में खाने को नहीं है?

विट—ऐसा न कहो।

हम सम जन पालत भयो, चारुदत्त धनहीन।
नहि याचक अपमान तिन, कयहुँ रहे धन कौन॥
ग्रीषम ऋतु महँ जल भरे, विमल तड़ाग समान।
नित प्रति व्याकुल नरन की प्यास बुझाय सुजान॥

सस्था—(क्रोध से) कौन है लौंडी का बच्चा?

श्वेतकेतु वह अमित प्रभाऊ।
पांडव राधापूत जटाऊ॥
कुंतीसुत जायो जेहि रामा।
धर्मपुत्र के अश्वत्थामा॥

विट—अजी तुम कैसी मूर्ख की नाईं बातें करते हो? वह चारुदत्त हैं,

दीन काज कल्पवृक्ष, गुनन झुके हैं सोई,
सज्जन के हेत सगे बंधु के समान हैं।
सभ्यन के दर्पन, कसौटी से चरित्र के हैं,
शील के तरंगन के सागर महान हैं।
करते भलाई चित्त काहू को दुखावैं नाहि,
सरल उदार गुनमनि के निधान हैं।
गुन अधिकाई से है जीना उनहीं को धन्य,
भाषी से तो और सबै धारतेई प्रान हैं॥

तो यहाँ से चल दो।

सस्था—बिना वसंतसेना को लिये?

विट—गई वसंतसेना।

संस्था—कैसे?

विट—अन्धे की ज्यों दीठि, रोगजागे तन बल ज्यों।
आलस कीन्हें सिद्धि मूरख की बुद्धि सकल ज्यों॥
जती पुरुष को पठन करै जो नहिं अभ्यासा।
रति सी तुम पहँ आइ गई बैरी के पासा॥

संस्था—हम तो बिना वसन्तसेना को लिये न हटेंगे।

विट—अजी तुमने यह भी सुना है—
गज को फन्दा डारि, हय बस कीजे रास गहि।
मनही बस करु नारि, जाओ न जो यह करि सको॥

संस्था—तुम जाते हो तो जाव हम न जायँगे।

विट—हम जाते हैं। (बाहर जाता है)

संस्था—जाओ भाड़ में—(मैत्रेय से) अरे पाजी बरुए! तेरे तो कौए के पजे से सिर में बाल हैं, बैठ, बैठ।

मैत्रे—हम तो बैठे ही हैं।

संस्था—किसने बैठाया?

मैत्रे—दई ने।

संस्था—उठ उठ।

मैत्रे—उठेंगे।

संस्था—कब?

मैत्रे—जब फिर भगवान् सीधे होंगे।

संस्था—अरे रो रो।

मैत्रे—रुलाए तो जाते हैं।

संस्था—कौन रुलाता है?

मैत्रे—अभाग।

संस्था—अरे हँस हँस।

[illegible]

—कब?

मैत्रे—जब फिर चारुदत्त की बढ़ती होगी।

सस्था—हेरे पाजी बरुए! हम तुझ से कहते हैं, तू हमारी ओर से दरिद्री चारुदत्त से कह कि यह सोनेवाली नया नाटक देख कर उठी सूत्रधारी सी रही की लड़की बसतसेना कामदेव के बाग के मेले के दिन से तुम्हें चाहती है, हम लोग उसे बरजोरी पकड़ना चाहते थे सो तुम्हारे घर में घुस गई, उसे तुम आके हमारे हाथ सौंप दो नहीं तो मरते दम तक हमारा तुम्हारा बैर रहेगा। और देखो—

> कुम्हिड़ा डठल माँहि जब गोबर धरो लगाय।
> माँस बघारी घीव में धरै जो साग सुराय॥
> (पकाया) सुरयो ऋतु हेमंत को धरो राति को भात।
> धरो रहै बासी तऊ कबहूँ नाँहि बसात॥

अच्छी तरह कहना और झट पट कह डालना और ऐसा कहना कि हम अपने महल में बँगले पर से बैठे बैठे सुनें। न कहोगे तो कैथे के गोले की नाईं तुम्हारा सिर तोड़ डालेंगे।

मैत्रे—अच्छा कह देंगे।

सस्था—(अलग टहलुए से) चिट जी गये?

स्थावरक—जी हाँ।

सस्था—तो हम भी भागें।

स्थाव—लीजिये, तलवार लीजिये।

सस्था—तुम्हीं लिये रहो।

स्थाव—नहीं सरकार, आप लीजिये।

सस्था—(उल्टी तलवार पकड़ कर)।

> अहे रग खुली तरवारि।
> डारि म्यान महँ कांधे धारि॥
> जखि कुक्कुर ज्यों पीछे लागत।
> स्यार सरिस मैं घर को भागत॥

(सस्थानक और स्थावरक बाहर जाते हैं)

मैत्रे—रदनिका तुम अपना हाल चारुदत्त जी से न कहना उन्हें धन जाने का योंही दुख है और भी उदास हो जायंगे।

रद—मैत्रेय जी मै रदनिका हूँ मेरे मुँह से बात न निकलेगी।

मैत्रे—बहुत अच्छा।

चारु—(बसंतसेना से) रदनिका! रोहसेन हवा में सो गया है उसे जाड़ा लगता होगा उसे भीतर पहुँचा के यह दुपट्टा ओढ़ा दो। (दुपट्टा फेंक देता है)

बसन्त—(आप ही) मुझे अपनी टहलनी समझ रहे हैं।

(दुपट्टा उठा कर सूँघ कर) अरे चमेली के फूलों से बसा हुआ है, आप जवानी का सुख भूले नहीं बैठे हैं। (दुपट्टा ओढ़ लेती है।

चारु—अरी रदनिका रोहसेन को भीतर पहुँचा दे।

बसन्त—(आपही आप) मेरे ऐसे भाग कहाँ कि आप के घर के भीतर जाऊँ।

चारु—अरी रदनिका बोलती तक नहीं! हा!

नसी जवै धनसंपति सिगरी।
भगवतकोप दशा जब बिगरी॥
मित्र होत रिपु, जन अनुरागी।
रहे सदा सो होत बिरागी॥

(रदनिका और विदूषक आते हैं)

मैत्रे—यह है रदनिका।

चारु—और यह कौन है।

अन जाने दूषित करी जेहि मैं वस्त्र उढ़ाय।

बसंत—नहीं, मेरी बड़ाई हुई।

चारु—चंद्रकला सी शरद के घन मे ढकी लखाय॥

ई स्त्री को देखना न चाहिये।

जी! आप मुझ पर कृपा करते हैं तो मै यह चाहती हूँ कि यह गहने आप के यहां छोड़ जाऊँ ये पापी गहनो के लिये मेरे पीछे पड़ते हैं।

चारु—यह घर इस कामका नहीं है कि इसमें थाती रक्खी जाय।

वसन्त—आप क्या कहते हैं थाती भले मानसों को सौंपी जाती है कि घरों को?

चारु—मैत्रेय गहने ले लो।

वसन्त—आपने बड़ी कृपा की। (गहने देती है)

मैत्रे—(लेकर) जय हो आप की।

चारु—क्या बकते हो यह थाती है।

मैत्रे—(अलग) थाती है, जो इसे चोर लेजायँ!

चारु—आजही कल में।

मैत्रे—इस थाती को?

चारु—हम आप ही के पास भेजवा देंगे।

वसन्त—मै चाहती हूँ कि बाम्हन देवता मुझे घर पहुँचा दें।

चारु—मैत्रेय, चले आओ आप के साथ।

मैत्रे—अजी बाई जी की हंसो की सी चाल है, तुम जाओगे तो हंस पैसे लगोगे। हम ठहरे बाम्हन, हमै चौराहे के उतारा ऐसा कुत्ते नोच खांयगे।

चारु—अच्छा हमीं आप के साथ जायँगे तो मशाल जलवाओ।

मैत्रे—वर्द्धमानक! मशाल जलाओ।

वर्द्ध—(अलग बिदूषक से) तेल तो है नहीं मशाल कैसे जले?

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) अजी हमारी मशालें दरिद्री यार रंडियों की नाईं बिना सनेह की हो गईं।

चारु—क्या करोगे मशाल ले के?

वसंत—क्या नाम है उनका बताओ।

मद—जी वही जो सेठों के चौक में रहते हैं।

वसंत—अरी नाम बता।

मद—जी उनका तो भला सा नाम है। चारुदत्त जी!

वसंत—(हर्ष से) वाह मदनिका वाह! तूने खूब जाना!

मद—(आप ही आप) तो यह कहूँ (प्रकाश) वह तो दरिद्र हैं।

वसंत—इसीसे तो चाहती हूँ। दरिद्र से आँख लगने से पातुर को कोई बुरा नहीं कहता।

मद—कहीं भौंरे भी बेबौर के आम के पास जाते हैं।

वसंत—तभी तो उन्हें मधुकरी कहते हैं।

मद—जो वही हैं तो चलिये। उनसे आप मिलिये।

वसंत—अरी उनके पास यो जाना अच्छा नहीं। वह कुछ दे तो सकते नहीं ऐसा न हो उनका मिलना कठिन हो जाय।

मद—इसी लिये अपने गहने उनके घर छोड़े।

वसंत—हाँ।

(परदे के पीछे)

अरे भाई, पकड़ो! पकड़ो! दस मोहर हार कर जुआरी भागा जाता है!! खड़ा रह रे कहाँ भाग के जायगा!

(घबराया हुआ सवाहक आता है)

सवा—जुआरी की भी बुरी गति है। हाय, हाय बन्धन तोड़ कर भागे गधे की नाई मुझे मारते हैं और अब नहीं बचता। जुआरी मेरे ऊपर ऐसे दौड़ रहे हैं जैसे कर्ण की शक्ति घटोत्कच पर गिरी थी।

भागौं अवसर पाय, लेखक सन अरुभ्कत सभिक।\
राह बीच महँ आय जाउँ कौन की सरन अब॥

तो अब इस सभिक जुआरी से बचने का यह उपाय उलटे पाँवों चल कर इस सूने मंदिर में देवी बन जाऊँ।

चेरी—बाई जी! अम्मा ने कहा है कि पूजा कर लीजिये।

बसंत—अरी अम्मा से कह दे आज न नहाऊँगी, आज बाम्हन पूजा करले।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

मद—(हाथ जोड़कर) बाई जी! कसूर माफ हो? जी नहीं मानता, एक बात पूँछती हूँ—आज कल आप का क्या हाल है?

बसंत—अरी मैं कैसी हो रही हूँ?

मद—आप सुध बुध भूली कुछ सोचा करती हैं इससे जान पड़ता है कि आप का मन किसी से लगा है?

बसंत—तूने ठीक जाना, तू और का मन जानने में बड़ी चतुर है।

मद—तो बहुत अच्छा है। किस जवान के आज भाग खुले! कोई राजा या राजा का प्यारा है जिसके सेवने का मन है।

बसंत—अरी सेवना नहीं चाहती, रमना चाहती हूँ।

मद—तो कोई पढ़े लिखे बाम्हन से मन लगा है।

बसंत—अरी बाम्हन को तो मैं पूजती हूँ।

मद—तो क्या कोई देश देश घूम कर व्योपार करने वाले धनी बनिया महाजन से?

बसंत—अरी, व्योपार करनेवाले प्रीति लगा के परदेश चले जाते हैं और उनके वियोग में मरना पड़ता है।

मद—तो न राजा, न राजवल्लभ, बाम्हन, न महाजन, तो फिर ऐसा कौन है जिसे आप चाहती हैं?

बसंत—अरी, तू मेरे साथ कामदेव के बाग गई थी?

मद—जी हाँ गई थी।

बसंत—तो फिर क्यों अजान ऐसी पूँछती है?

मद—जो जाना, जिनके घर आप छिप के बची थीं।

माथुर—(पकड कर) क्यों बे, अब तो पकड़ गया! ला दस मोहर।

सम्वा—देंगे?

माथुर—अभी दे।

सम्वा—कृपा कीजिये, दे दूँगा।

माथुर—नहीं अभी ला।

सम्वा—मैं तुम्हारे पाँव पड़ता हूँ (माथुर के पाँव पड़ता है दोनों उसे मारते हैं)

माथुर—चल तू जुआरियों की मंडली में पकडा गया।

सम्वा—(उठकर रोता हुआ) हाय, क्या मुझे मण्डली ने पकड़ लिया! हाय, अब क्या करूँ, मण्डली से बच कर कहाँ जाऊँ कहाँ से दूँ।

माथुर—अच्छा जिम्मा करो।

सम्वा—अच्छा (जुआरी के हाथ जोड़कर) आधा छोड़ दो तो आधा हम तुम्हे दे दें।

जुआरी—बहुत अच्छा आधा ही दो।

सम्वा—(माथुर से) आधे का मैं जिम्मा करता हूँ आधा आप छोड़ दीजिए।

माथुर—क्या हर्ज है, ऐसा ही सही।

सम्वा—(प्रकाश) आधा आपने भी छोड़ा?

माथु—छोडा।

सम्वा—(जुआरी से) आधा आपने भी छोडा?

माथु—हाँ छोड़ा।

सम्वा—अच्छा तो अब मैं जाता हूँ।

माथु—जायगा कहाँ, दस मोहर दे।

सम्वा—देखते हैं आप लोग!

जिम्मा किया दूसरा कहता है कि

भी रहे हैं।

(मन्दिर के भीतर घुसकर देवता के स्थान पर खड़ा हो जाता है)

(माथुर और एक जुआरी आता है)

जुआरी—जाउ इन्द्र की सरन कै भागि पैठु पाताल।
शिवहु समिक सो नहिं सकै तेहि, बचाय यहि काल॥

माथुर—दै समिकहि धोखा कहँ जात।
मेरे डर से कांपत गात॥
गिरत परत उठि उठि पुनि धाय।
अपने कुल जस कारिख लाय॥

जुआरी—(पैर के चिह्न देखकर) इधर गया है, इधर आगे देखो पैर के चिह्न नहीं मिलते।

माथुर—(देखकर, सोचकर) अरे उलटे पांव हैं यह सूनी मठिया है, (सोचकर) धूर्त जुआरी उल्टे पांवों से मन्दिर में घुस गया है

जुआरी—तो चलो मन्दिर में चलें।

माथुर—अच्छा।

(मन्दिर में घुसकर देखते हैं और एक दूसरे को इशारा करते हैं

जुआरी—क्या काठ की मूरत है?

माथुर—नहीं, नहीं पत्थर की तो है (मूर्ति को हिला चला कर) आओ यहीं जुआ खेलें।

(दोनो बैठ कर जुआ खेलते हैं)

संवा—(जुआ खेलने की घबराहट जानता हुआ) अरे
पैसा जाके पास नहि परत दावँ घबराय।
सुनत नगारा और को गये राज जिमि राय॥

जुआरी—हमारा दाँव है हमारा दाँव।

माथुर—नहीं, नहीं, हमारा दांव है।

संवा—(झटझट आगे बढ़ कर) अजी हमारा दांव है।

जुआरी—(संवाहक को पकड़ कर) क्यो बचा, अब तो पकड़े गये।

किये जुआ से भोग बिलासा।
भयो जुआ मे सर्वसनासा॥
तीये से सर्वस गयो नक्की उपजी आस।
सूलि दुआ मे देह अरु चौक भयो सबनास॥

(आगे देख कर) अरे! यह तो पुराने समिक माथुर इधर ही आ रहे हैं। अब तो हम भाग भी नहीं सकते, तो मुँह लपेट कर अलग खड़े हो जायँ (दुपट्टे को देख कर)

यदि पट मे हैं छेद हजार।
यहि के देखि परैं सब तार॥
यह पट ओढ़े काह छिपावै।
यह पट गठरी बँधी सुहावै॥

क्या करैगा यह हमारा?

एक पाँव भुइँ माँ धरे एक धरे आकाश।
तौलौं इहाँ खड़ो रहौं जौलौं दिवसबजास॥

माथुर—दे या दिला दे।

सम्बा—कहाँ से दूँ? (माथुर उसको फिर घसीटता है)

दर्दु—यह क्या हो रहा है? (आकाश से) "इस जुआरी को समिक मार रहा है और कोई छुड़ाता नहीं। अच्छा अब दर्दुरक छुड़ायेगा"। (आगे बढ़ कर) हटो। (देखकर) अरे, यह तो माथुर है और बेचारा संवाहक है, यह क्या खाके जुआ खेलैगा।

सीस झुकाय सबेरे से साँझ लौं बैठि सकै जो जुआ मढ़ँ नांहीं।
हारे पै मारत खींचत पीठ पै जाके न ईंट के दाग लखाहीं।
कूकुर ऐसे जुआरी सदा मिलि जाकी न जाँघ को माँस चबाहीं।
सो बपुरा अति कोमल देह को नाहक आय फस्यो यहि माँहीं॥

अच्छा तो अब माथुर को मना करैं। (प्रणाम करके) माथुर जी, राम राम।

माथुर—राम राम!

दर्दु—माथुर जी, यह क्या कर रहे हो?

माथु—(पकड़ कर) अरे धूर्त ! हम माथुर हैं, हमारे तेरी धूर्ताई न चलेगी, लेआ अभी सब धर दे।

सम्वा—कहाँ से दूँ।

माथु—बाप को बेंच के दे।

सम्वा—मेरे बाप कहाँ ?

माथु—मा को बेंच के दे।

सम्वा—मेरी माँ कहाँ है ?

माथु—अपने को बेंच के दे।

सम्वा—अच्छा चलिये सड़क पर चलें।

माथु—चल,

सम्वा—बहुत अच्छा (कुछ चल कर) अरे भाई ! इस सभिक के हाथ से मुझे कोई दस मोहर को लेते हो ? (आकाश में) क्या कहते हो 'क्या करोगे'। तुम्हारे घर के टहल करेंगे। अरे इन्होंने तो कुछ उत्तर न दिया और चले गये ; तो अब और किसी से कहँ (अरे भाई ! इत्यादि फिर कहता है) हाय, ए तो मेरी सुनते ही नहीं ! चारुदत्त जी के कंगाल हो जाने से मेरी यह गति हो गई।

सम्वा—कहाँ से दूँ ? (धरती पर गिर पड़ता है—माथुर उसे घसीटता है)

सम्वा—अरे भाई मुझे कोई बचाओ !

(दर्दुरक आता है)

दर्दु—जुआ भी बेसिंहासन का राज है। |

हरत देत धनहीं नित सोई ।
हार जीत मोइ गनत न कोई ॥
राजा सम नित धनहि दिखावत ।
जन अनेक निज साथ नचावत ॥
मिली जुआ से सम्पति सारी ।
मिले जुआ से हित औ नारी ॥

दर्दु—क्यों वे, हमारे पीछे दिक किया तो किया, हमारे सामने भी दिक करेगा ?

(माथुर संवाहक को खींच कर उसकी नाक में एक घूँसा मारता है, संवाहक की नाक से लोहू निकल आता है और वह धरती पर गिर पड़ता है, दर्दुरक बीच में पड़ जाता है । माथुर दर्दुरक को मारता है)

माथु—अबे छिनाल के लड़के पाजी, देख तो तुझे इसका कैसा फल मिलता है ।

दर्दु—अबे, आज तो हमने तुझे सड़क पर मारा, कल तुझे कचहरी में मारेंगे तब देखना ।

माथु—अच्छा देखेंगे ।

दर्दु—कैसे देखोगे ?

माथु—(आखें फाड़ कर) ऐसे देखेंगे ।

(दर्दुरक माथुर की आंख में धूल झोंक देता है और संवाहक से भाग जाने का इशारा करता है, माथुर आंख बंद करके बैठ जाता है और संवाहक भाग जाता है)

दर्दु—(आप ही आप) माथुर का बड़ा अधिकार है, उससे मैंने वैर कर लिया तो अब यहां रहना ठीक नहीं , मेरे प्यारे मित्र शर्विलक ने कहा था कि एक सिद्ध का वचन है कि अहीर का लड़का आर्यक राजा होगा और यही समझ कर हम ऐसे बहुत लोग उसके साथ हो रहे हैं तो हम भी उसी के पास चलें ।

(बाहर जाता है)

संवा—(डर से देख कर) अरे, यह तो किसी की खिड़की खुली है, तो इसमें घुस चलूँ (घुस कर वसन्तसेना को देख कर) तुम्हारी सरन हूँ ।

वसन्त—सरनागत को अभय । अरी खिड़की बन्द कर ले ।

(लौंडी खिड़की बन्द कर लेती है)

वसन्त—तुमको किसका डर है ?

माथु—अजी यह दस मोहर हारा है।

दर्दु—तो कौन बड़ी बात है?

माथु—(दर्दुरक की काँख से दुपट्टा खींच कर) देखते हैं आप लोग, यह सत्तर छेद का दुपट्टा लिये है और कहता है कि दस मोहर कौन बड़ी बात है।

दर्दु—अबे, हम दस मोहर एक दांव में जीतते हैं और जिसके धन होता है क्या वह काँख में दाबे फिरता है।

महा नीच तैं नष्ट तैं दस मोहर के काज।
पाँच इन्द्रियन को मनुज मारे डारत आज॥

माथुर—भाई, तुम्हें दस मोहर कुछ नहीं हैं हमें तो बहुत कुछ हैं।

दर्दु—अच्छा तो इसे दस मोहर और दो, यह फिर जुआ खेले।

माथुर—तो क्या होगा?

दर्दु—जो जीतेगा तो देगा।

माथुर—जो न जीते?

दर्दु—तो न देगा।

माथु—क्या बकते हो, जो तुम्हें नहीं अच्छा लगता तो तुम्हीं दे दो। तू बड़ा धूर्त है, माथुर तुझसे डरे नहीं, जा दूर हो, हमने तुझ ऐसे लुच्चे बहुत देखे हैं।

दर्दु—कौन है लुच्चा?

माथु—तू है लुच्चा!

दर्दु—तेरा बाप है लुच्चा! (संवाहक से भाग जाने का इशारा करता है)

माथु—क्यों बे छिनाल के लड़के! तू इसी लिये जुआ बना है!

दर्दु—हां, हमने ऐसे ही जुआ खेला है।

माथु—अबे संवाहक, दे दस मोहर।

संवा—देता हूँ (माथुर उसे घसीटता है)

एक ऐसे भलेमानुस की सेवा की जो बड़े सुन्दर हैं, बहुत ही मीठा बोलते हैं, किसी को कुछ देते हैं तो जनाते नहीं और उनका कोई कुछ बिगाड़े तो चित्त में नहीं लाते। कहाँ तक कहूँ पराये को भी अपना समझते हैं और जो कोई उनकी सरन आजाय उसे तो बहुत ही मानते हैं।

मद—उज्जैनी में ऐसा कौन है जो बाईजी के भावते के गुन चुरा रहा है?

बसन्त—वाह री वाह! मैंने भी अपने मन में ऐसाही समझा था।

मद—जी, तो फिर?

सवा—बाई जी! वह दीन दुखियों को अपना धन दे देकर—

बसन्त—क्या कगाल होगये?

सवा—आपने कैसे जान लिया?

बसन्त—इसमें जानने की कौन बात है। गुन और धन इकट्ठा नहीं रहते। जिस तालाब का पानी पीने लायक नहीं होता वह सदा ही भरा रहता है।

मद—उनका क्या नाम है?

सवा—बाई जी! इस संसार के चन्द्रमा उनका नाम कौन नहीं जानता! वह सेठों के चौक में रहते हैं। उनका नाम चारुदत्त जी—

बसन्त—(हर्ष से आसन से उतर कर) तब तो यह आपही का घर है। अरी आपको आसन दे और पखा ले। आप थके जान पड़ते हैं।

(चेरी आसन लाकर रख देती है और पखा उठा लेती है)

सवा—(आपही आप) क्या चारुदत्त जी के नाम लेने ही से इतना आदर बढ़ गया! वाह चारुदत्त जी वाह! संसार में आपही का जीना ठीक है और सब लोग तो लोहार की भाथी की साँस लेते हैं। (बसन्तसेना के पाँव पड़ कर) बाई चुका आप आसन पर विराजिये।

सवा—धनी का।

वसन्त—अरी खिड़की खोल दे।

संवा—(आप ही आप) अरे, क्यों यह भी धनी से डरती है। लोगों ने ठीक कहा है,

अपने बल को जानिकै बोझ उठावै जोय।
अरबराय सो सकत नहिं, गिरै खड़ु नहिं सोय॥

माथु—(आँखें मीच कर जुआरी से) दे वे दे।

जुआरी—हम लोग जब दर्दुरक से झगड़ा करते थे तभी यह भाग गया था।

माथु—अजी हमने उसकी नाक में घूँसा मारा था। सो उसकी नाक फूट गई थी, चलो लोहू देखते हुए चलें।

जुआरी—वह वसन्तसेना के घर में घुस गया है।

माथुर—तो अब मोहरें मिल गईं।

जुआरी—चलो कोतवाली में चल कर कह दें।

माथु—यहीं खड़े रहो जब वह निकल कर और कहीं जाना चाहेगा तब घेर कर पकड़ लेंगे।

(वसन्तसेना मदनिका को इशारा करती है)

मद—आप कौन हैं, कहां से आते हैं, किसके लड़के हैं, कौन उद्यम करते हैं, किसका डर है।

सवा—बाई जी सुनिये, मेरा जन्म पटने में हुआ था, एक भलेमानुस का लड़का हूं, अब भलेमानुसों के हाथ पाँव दबा कर पेट पालता हूं।

वसन्त—आपने बहुत अच्छी कला सीखी है।

सवा—जी, पहले तो कला समझ के सीखी थी, अब उसी से रोटी मिलती है।

— बहुत उदास होकर बोलते हैं, तो फिर?

—मैं जब अपने घर ही में था तो लोगों से सुन सुन कर देस देखने को यहां आया। यहां उज्जैनी में आकर

मद—उसी के लिये हमारी बाई जी ने यह कड़ा भेजा है, नहीं नहीं, मैं भूल गई उन्हीं ने भेजा है।

माथु—(हर्ष से लेकर) अरी तुम जाकर उनसे कहो कि तुम्हारी मातबरी हो गई, आओ फिर जुआ खेलें।

मद—(वसन्तसेना के आगे जाकर) बाई जी! सभिक और जुआरी दोनों खुश होकर चले गये।

बसंत—तो आप भी जाइये, आपके भाईबन्द घबरा रहे होंगे।

सवा—बाई जी, आप कृपा करें तो मैं इस कला से आप ही की सेवा किया करूँ।

बसन्त—आपने जिनके लिये यह कला सीखी थी और जिनके साथ आप इतने दिन रहे उन्हीं के पास जाइये।

सवा—(आपही आप) इन्होंने कैसी चतुराई से बहुत ठीक जवाब दिया। अब इनके साथ मैं कौन सा उपकार करूँ जिससे उरिन हो जाऊँ। (प्रकाश) बाई जी! इस जुए की दुर्गति से मैं बहुत घबरा गया अब मैं बौद्धसन्यासी हो जाऊँगा। जब कभी औसर पड़े तो आप न भूलियेगा कि जुआरी सवाहक बौद्धसन्यासी हो गया।

बसन्त—ऐसा साहस न कीजियेगा।

सवा—मैंने अपना मन पक्का कर लिया है।

जुआ पति उतराई मोरि यह जूआ बीच बजार।
सिर मुँडाय अब छाँडि भय करिहों तहँहिं बिहार।

(परदे के पीछे हल्ला होना है)

सवा—(सुनकर) अरे यह क्या हुआ? (आकाश में) "क्या कहते हो, बसन्तसेना का खुटमोटक दुष्ट हाथी खुला फिर रहा है" तो चलके बाई जी के मतवाले हाथी को देखूँ। अहँ, अब जो निश्चय किया है उसे चलकर करूँ। (बाहर जाता है)

(घबराया हुआ विकट रूप में उजला दुपट्टा ओढ़े कर्णपूरक आता है)

बसन्त—(आसन पर बैठ कर) आपका धनी कौन है ?

सं॰—सज्जन धन सतकार है धन बहुतन के होइ ।
पूजन मसुफत है सोई पूजा जानत जोइ ॥

बसन्त—कहिये फिर क्या हुआ ?

सवा—उन्होंने मुझे चाकर रख लिया था । जब उनके धन न रहा तब मैं जुआ खेलने लगा । आज अपने अभाग से दस मोहर हार गया ।

माथु—अरे ठग गये ! लुट गए !

सवा—यही सभिक जुआरी मुझको ढूँढ़ रहे हैं, इतनी बात है।

बसन्त—अरी ! पेड़ सुख जाने से पक्षी इधर उधर भटकते फिरते हैं । दोनों जुआरियों के पास जा और कह दे कि यह सोने का कड़ा तुमको भेजा है ।

(इतना कहकर अपने हाथ का कड़ा उतार कर मदनिका को दे देती है)

मद—(कड़ा लेकर) बहुत अच्छा । (घर से बाहर जाती है)

माथु—अरे ठग गये ! लुट गये !

मद—ये लोग ऊपर देखते हैं और लम्बी लम्बी साँसें ले रहे हैं और खिड़की की ओर ताक रहे हैं इससे मैं समझती हूँ कि सभिक और जुआरी यही हैं । (उनके पास जाकर) आर्य, प्रणाम ।

माथु—अच्छी रहो ।

मद—आप लोगों में से सभिक कौन है ?

माथु—अरी सुन्दरी कौन तू देखति तिरछे नैन ।
फटे ओंठ दिखराय के बोलति मीठे बैन ॥

... पास धन नहीं है तुम और किसी को ढूँढ़ो ।

—आप कैसे जुआरी हैं जो ऐसा कहते हैं आपका कोई ... है ?

वसन्त—तूने बहुत अच्छा किया। फिर क्या हुआ ?

कर्ण—तब तो सारी उज्जैनी बोझी नाव की नाईं हिल उठी और सब कहने लगे, वाह रे कर्णपुरक वाह ! उस समय एक भले मानुस वहाँ खड़े थे उन्होंने जहाँ जहाँ गहने पहने जाते हैं सब सूना देख कर साँस लेकर यह चादर मेरे ऊपर फेंक दी।

वसन्त—कर्णपूरक, देख तो यह चादर चमेली के फूलों से बसी तो नहीं है।

कर्ण—मैंने तो आज इतना मद पिया है कि उसकी गन्ध से चादर की सुगंध नहीं जान पड़ती।

वसन्त—देख तो कहीं नाम है।

कर्ण—यह नाम है, आप बांच लें (चादर उतार के देता है)

वसन्त—चारुदत्त—(इतना पढ़ कर चादर ओढ़ लेती है)

मद—कर्णपूरक ! बाई जी को चादर कैसी अच्छी लगती है।

कर्ण—हाँ अच्छी तो लगती है।

वसन्त—कर्णपूरक, यह ले अपना इनाम। (उसे एक अँगूठी देती है)।

कर्ण—(अँगूठी लेकर मत्थे से लगा कर) अब चादर आपको बहुत अच्छी लगती है।

वसन्त—चारुदत्त जी कहाँ है ?

कर्ण—इधर ही से घर को लौटे जा रहे हैं।

वसन्त—अरी तो चल अटारी पर चढ़ कर चारुदत्त जी को देखें। (सब बाहर जाते हैं)

[स्थान—चारुदत्त के घर के भीतर और बाहर)

तीसरा अङ्क

(वर्द्धमानक आता है)

कर्ण—कहाँ है, बाई जी कहाँ है ?

मद—तू सिड़ी हो गया है, क्यों इतना घबरा रहा है ? बाई जी सामने बैठी हैं देखता नहीं।

कर्ण—(देखकर हाथ जोड़कर) प्रणाम।

बसन्त—तू बड़ा खुश जान पड़ता है, क्या हुआ ?

कर्ण—(अचरज से) बाई जी आज आपने कुछ न देखा तो मेरी बहादुरी न देखी।

बसन्त—क्या, क्या, कहो तो।

कर्ण—सुनिये, वह जो आपका खुटमोटक हाथी है वह खूँटा तोड़ महावत को मार बड़ा गड़बड़ मचाता हुआ सड़क पर पहुँचा तब तो सब लोग चिल्लाने लगे, देखते नहीं

घालक वेगि हटाउ बिगड़ा गज आवत इते।
दल भटा चढ़ि जाय भागो अपने प्राण ले॥

और टूटत है मनि करधनी छूटत नूपुर पायँ।
सुन्दर रतनन तें जड़े कगनहुँ गिरि जायँ॥

तब तो दुष्ट हाथी अपने सूँड पाँव और दाँतों से कमल भरे तलाब की नाईं सारी उज्जैनी को मथकर एक सन्यासी के पास पहुँचा। उसका दंड कमंडल तोड़ उसके मुँह पर पानी छिड़ककर उसे अपने दाँतों के बीच में उठा लिया। तब तो सब चिल्लाने लगे 'मरा, सन्यासी मरा'!

बसन्त—(घबराकर) हाय, हाय बहुत बुरा हुआ।

कर्ण—घबराइये नहीं, सुनती जाइये, मैंने जो देखा कि वह अपनी मोटी मोटी साँकरें तोड़ कर दाँतों के बीच सन्यासी को उठाये हुए है तो मुझ कर्णपूरक, नहीं आपके जूठन के पले हुए दास ने, जुए के खेल को लात से मार लोहे का एक मोटा डंडा लेकर हाथी को ललकारा।

बसन्त—तब फिर ?

कर्ण—विंध्याचल चोटी सरिस गज को मारि हटाय।
ताके दाँतन बीच सन जोगी लियो छुड़ाय॥

छुके कान मनहुँ कुच्यो, कहँ लगि करौं बखान।
रह्यो सो रेभिल देह में मानहु प्रिया समान॥
मीठो सुरीली गान मिलि मोह बोल के मग बीन के।
पुनि स्वर चढ़ाव उतार गुञ्जत भ्रुङ मनहु अलीन के॥
स्वर मूर्छना महँ चढ़त होत विराम धुनि पुनि मृदु भई।
एक राग दोहरा बजत लीला सहित यति रोकी गई॥
भयो बन्द अब गान, आये पती दूर चलि।
तान भरे हैं कान अजहूँ सोई सुनि परे॥

मैत्रे—अजी, गली में तो इस बेर कुत्ते भी सुख से सो रहे हैं, चलो घर चलें (आगे देखकर) देखिये, देखिये, अँधेरे के भी औकास देते हुए आकाश की अटारी से चन्द्रमा उतर रहे हैं,

चारु—तुमने बहुत ठीक कहा।

बूड़त तम कहँ राह दै कोटि उठाये चन्द।
मनहु निकासे दाँत कछु जल महँ घुसी गयन्द॥

मैत्रे—अजी यही तो है घर। बर्द्धमानक! बर्द्धमानक! किवाड़ खोल।

बर्द्ध—(भीतर से) मैत्रेय जी की बोली सुन पड़ती है तो चारुदत्त जी आ गये। किवाड़ खोल दूँ (किवाड़ खोल कर) पालागन! मैत्रेय जी तुम्हारे भी पालागन! पलँग बिछे हैं। आप लोग बैठें।

(दोनो घर में आकर बैठते हैं)

मैत्रे—बर्द्धमानक, रदनिका को पुकार दे, पाँव धो जाय।

चारु—क्यों सोते को जगाते हो?

बर्द्ध—मैत्रेय जी मैं पानी डालता हूँ आप पाँव धो दीजिए।

मैत्रे—(क्रोध से) देखते हो यह लौंडी का बच्चा पानी डालेगा और हम ब्राह्मन हैं हमसे पाँव धोने को कहता है।

चारु—तुम्हीं पानी ले लो, बर्द्धमानक पाँव धो देगा।

बर्द्ध—मैत्रेय जी, पानी डालिए।

वढ़ं—मालिक भला गरीब हू मानै सेवक जोइ।
खल गरूर धनका करैं अंत सबै नहिं सोइ॥
लगी बान की चाट जेहि वर्ध न छाँको जात।
फँसो श्रौर की नारि से सुनै कौन की बात?
परी जुश्रा की चाट जेहि तेहि का सकै छुटाय?
जो सुभाव को दोष है तेहि को सकै मिटाय?

बडी देर हुई। चारुदत्त जो गाना सुनने गये अभी तक नहीं लौटे, आधी रात हो गई। अब मैं ड्योढ़ी में पढ़कर सोऊँ (किवाड बन्द करके सो जाता है)

(चारुदत्त और मैत्रेय आते हैं)

चारु—वाह, रेभिल ने कैसा अच्छा गाया और कैसा सुन्दर बजाया। वीना भी समुद्र मे नहीं निकली तो क्या, एक रत्न ही है।
उतकण्ठित के मन को सखि सी यह धीरज दै समुझावती है।
जब आवत देर लगावत मीत सँकेत मनैं बहलावती है।
जन व्याकुल हैं जो वियोग में भूप तिन्हें यह धीर करावती है।
हिय नेह के। श्रंकुर जामो है जो रस सींच कै ताहि बढ़ावती है॥

मैत्रे—चलिए घर मे चलें।

चारु—वाह रेभिल ने कैसा अच्छा गाया!

मैत्रे—हमसे जो पूछिये तो हमे तो जब स्त्री संस्कृत पढ़ती है या मर्द काकली गाता है तो बड़ी हँसी आती है। स्त्री जो संस्कृत पढ़ने लगती है तो नई व्याई गाय की नाई सू सू करती है और जब मर्द काकली गाने लगता है तो सूखे फूलों की माला पहिने बूढ़े पुरोहित ऐसा मंत्र जपता जान पडता है।

चारु—भाई रेभिल ने बहुत अच्छा गाया,-क्यों भाई अच्छा?

एक एक स्वर सुनि परत ललित भाव के संग।
मधुर मनोहर गान सोइ सुन्दर सम सब श्रंग॥

सरकत चलौ घसत निज अङ्गा।
कैंचुल छोड़त मनहुँ भुजङ्गा॥
(आकाश की ओर देख कर) अरे, क्या चन्द्रमा डूब रहे हैं?
करैं पाहरू मोहि लखि शका।
वीर महलफोड़न महँ बंका॥
घन अंधेर सन जगहि छिपावति।
रैन माय सी मोहिं अँग लावति॥

फुलवारी में सेंध लगा के यहाँ पहुँचा, अब इस कोठे में सेंध लगाऊँ,
चोरी के काम को नीच कहैं सब बात जगे नर सोवत पाई।
देइके धोखा हरै परको धन चोरी सो कायर रीति कहाई।
नाम बुरो पै अधीन न काहू के चोरो भलो न भली सेवकाई॥
द्रोण के पुत्र युधिष्ठिर सेन के मारन के हित सेंध लगाई
भीगी है कहुँ भीति जहँ खोदत शब्द न होय।
कौन ठौर जहँ आइ में सेंध न देखै कोय॥
गली भीति लोना लगी है पतरी देहि ठाम।
सोंहैं जहाँ न तिय परै सिद्ध होय सब काम॥

तो कहाँ से सेंध फोड़ूँ (भीत को छूकर) नित सूर्यनारायण के अर्घ का पानी पड़ते पड़ते यहाँ की मिट्टी खुद सी गई है और चूहों ने भी यहाँ कुछ खोद डाला है, अब हमारा काम सिद्ध होगया। स्कन्ददेवता के पुत्रों की सिद्धि का पहिला लच्छन यही है। तो अब कैसी सेंध फोड़ूँ, कनकशक्ति जी ने चार रीतियाँ सेंध खोदने की कही हैं—पक्की ईंटों को खींच लेना, कच्ची को काट देना, गोंदे को भिगो देना और काठ को काट डालना। तो यहाँ भीत है पक्की ईंट हटाऊँ।

खिले कमलसम कूप सरसि नवचन्द्र अकारा।
स्वस्तिक पूरनकुम्भ सूर्य सम सन्धिप्रकारा॥
सेंधि में प्रकट करौं अपनो चतुराई।
देखि जेहि चकित होयँ सब लोग लुगाई॥

(मैत्रेय पानी डालता है और वर्द्धमानक चारुदत्त के पाँव धोव
(अलग खड़ा हो जाता है)

चारु—अजी ब्राह्मण देवता के पाँव भी धो दे।

मैत्रे—अजी हमारा पाँव धोके क्या होगा हम तो मारे ग
की नाईं फिर लोटेहींगे।

वर्द्ध—मैत्रेय जी आप तो बाम्हन हैं।

मैत्रेय—अरे जैसे साँपों में डोंडहा होता है वैसे ही हम बाम्हने
में बाम्हन हैं।

वर्द्ध—मैत्रेय जी, लाइये आपके भी पाँव धो दूं। (मैत्रेय के पाँ
धोता है) मैत्रेय जी मैंने गहनों का डिब्बा दिन भर रखाया, अ
रात को आप इसकी रखवारी कीजिये (मैत्रेय को डिब्बा देक
बाहर जाता है)।

मैत्रे—(डिब्बा लेकर) अरे, अभी यहीं है! क्या उज्जैनी मे
चोर भी नहीं है जो इस नींद के चोर को चुरा ले जायँ, भाई मैं तो
भीतर जाता हूँ।

चारु—यह भूषन हैं पातुर केर।
जो न जाहु यह घर महँ मेरे॥
धरो मित्र आपहि तुम यही।
जो लौं मैं सौंपों नहि तेहीं॥
(सोने का भाव बताता है)

मैत्रे—क्या आपको नींद आ रही है?
सिर से उतरि आँखि महँ आवत।
आलस सारे तन पर छावत॥
अलख रूप जनु चपल बुढ़ाई।
आवत नर पर तेज नसाई॥
सोयें।
(किवाड़ बन्द करके सो जाता है)

(शर्विलक आता है)

शर्वि—बल विद्या दोउ सग लगाई।
तन प्रमान निज सँध बनाई॥

(इधर उधर देख कर पानी का लोटा उठा लेता है और पानी छिड़क कर डरता हुआ) अरे, पानी गिरने से लोग चौंक न पड़ें तो किवाड़ उतार लूँ (पीठ के सहारे से पल्ला उतार लेता है) अब इन्हें देखूँ सचमुच सो रहे हैं या झूँठ मूठ (देख कर) बेधड़क सो रहे हैं, देखो,

चलत बराबर साँस नहीं शका कछु लागै।
मुँदी आँखि नहिं सिथिलभाव पुतरी निज त्यागै॥
ढीलो परो शरीर कछुक शय्या के बाहर।
दीप महँ नहिं सौंह करै सोवत छल जो नर॥

(चारों ओर देख कर) यह ढोल रक्खी है, यह मृदङ्ग है, यह बीना है, यह बाँसुरी है, यह पोथियाँ है। क्या नाटकवाले का घर है ? हम तो बड़ा घर देख के घुसे थे, यह तो महादरिद्री है, ऐसा तो नहीं कि राजा और चोर के मारे धन धरती में गाड़े हो। मेरे भी तो धरती में गड़ा है। (बीज फेंकता है) बीज फेंकने से कुछ नहीं जान पड़ता, यह महादरिद्री है, चलैं निकल चलैं।

मैत्रे—(सपने में बोलता है) भाई, सेंध लगी है, चोर भी देख पड़ता है, यह डिब्बा आप ले लीजिए।

शर्वि—क्या मुझे आया जान यह दरिद्री मेरी हँसी कर रहा है, तो इसे मार डालूँ। यह सपना देख रहा है (देख कर) अरे फटी धोती में सचमुच गहने का डिब्बा झलक रहा है, तो अब इसे लेलूँ। इसकी भी मेरी सी दशा जान पड़ती है, जाने दो क्या किसी भले मानुस को सतावैं।

मैत्रे—भाई, तुम्हें गाय और बाम्हन की सौंह है जो तुम डिब्बा न लो।

शर्वि—भाई गौ बाम्हन की सौंह तो माननी चाहिये तो इसे लेही लो। दिया बर रहा है मेरे पास दिया बुझाने का कीड़ा भी तो है तो उसी को छोड़ दूँ इसी का अवसर है (कीड़ा

जय भगवान कार्तिकेय की ! जय कनकशक्तिजी की ! ब्राह्मण देव की जय ! जय भास्करनन्दन की और जय गुरु योगाचार्य जी की जिन्होंने प्रसन्न होके मुझे योगरचना सिखाई थी।

लखै न चौकीदार यहि के प्रबल प्रभाव से।
तन लागे हथियार कटै न पीरा होय कछु ॥

(सेंध फोड़ने को बैठता है) अरे, नापने का डोरा भूल आया! (सोच कर) क्या हुआ, जनेऊ तो है, इसी से नाप लेंगे, जनेऊ भी ब्राह्मणों के बड़े काम का होता है और विशेष करके हम ऐसों का,

नापि सकै यह सेंधप्रमाना।
यही उतारत भूषन नाना ॥
साँकर खोलत, डसत भुजगा।
रोकत विष यह बाँधत अंगा ॥

(नाप के) अब लगा लगाऊँ (सेंध फोड़ता है) अब सेंध में एक ईंट और रह गई। हाय, हाय, साँप ने काट लिया (जनेऊ से उँगली बाँध कर विष का चढ़ना जनाता है और औषधि बाँध लेता है) अब तो नहीं पिराता (फिर खोद कर देख कर) अरे दिया जल रहा है।

घन अँधेर महँ सेंध से निसरति दीपकजोति।
खिंची कसौटी पै मनौ सोनरेख सी होति ॥

(फिर देख कर) सेंध तो पूरी होगई, तो भीतर चलूँ य पहले देखलूँ कोई है तो नहीं (देख कर) जय कार्तिकेय की।
(घुसता है)

[स्थान दूसरा—चारदत्त के घर के भीतर]

(शर्विलक सेंध से निकल कर आता है)

शर्वि—अरे, दो जने सो रहे हैं, तो किवाड़ खोलदूँ जिस की राह रहै। अरे वर ऐसा जजल हो रहा है कि किवा ें करता है। तो पानी ढूढ़ँ। पानी कहाँ मिलेगा

सकट में डुडुम, तुरग हैं सुयल पर
जल बीच नाव, रात दीपकहू हम हैं।
गिर सम थिर, भागन भुजग, झपटन में हम बाज।
पकरन वृक, इतउत लखन शश, बल महँ मृगराज॥

(रदनिका आती है)

रद—हाय, हाय, ड्योढ़ी पर वर्द्धमानक सोता था से भी नहीं देख पड़ता, कहां गया। तो अब मैत्रेय को पुकारूँ। (आगे चलती है)

शर्वि—(रदनिका को मारना चाहता है) अरे स्त्री है, तो भाग चलूँ। (बाहर जाता है)

रद—(डरती हुई) हाय, हाय, घर में सेंध फूट गई चोर भाग गया, मैत्रेय को जगाऊँ (मैत्रेय के पास जाकर) मैत्रेय जी उठो उठो! घर में सेंध फोड़ के चोर भाग गया।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है! चोर फोड़ के सेंध भाग गई।

रद—क्या बकते हो, देखते नहीं।

मैत्रे—अरी लौंडी क्या बकती है? ये केवाड़ किसने उतारे? अरे भाई चारुदत्त जी उठिए उठिए, घर में सेंध फोड़ कर चोर भाग गया।

चारु—(जाग कर) भाई क्यों हँसी करते हो?

मैत्रे—अरे भाई हँसी नहीं है देख लीजिए।

चारु—कहां?

मैत्रे—यह क्या है।

चारु—(देख कर) क्या सुन्दर सेंध है।

ऊपर से इक एक ईंट जिमि परी हटाई।
ऊपर सकरी चौड़ो है कछु बीच बनाई॥
अति अजोग जन जनु कुमार्ग सन आवत जानी।
हरके घस यहि महल केरि छाती बिलगानी॥

मैत्रे—हमारे घर सेंध देना या तो किसी नौसिखये

है) कीड़े ने, देखो, दिये के ऊपर उड़ उड़ कर अपने पत्तों की बयार से अँधेरा कर दिया , मैंने भी तो अपने बाम्हन के कुल को अँधेरे मे डाल दिया, मेरे बाप चार वेद के पढ़ने वाले दान का पैसा लेने वाले थे, उनका लड़का मैं रंडी के लिये चोरी कर रहा हूँ। बाम्हन देवता की बात तो माननी चाहिये (डिब्बा ले लेता है)

मैत्रे—आपका हाथ ठंडा है ।

शर्वि—अरे, पानी छूने से मेरा हाथ ठंडा हो गया है तो इसे काँख में दबा कर गरम करलूँ (बाँयें हाथ को गरम करके डिब्बा ले लेता है ।

मैत्रे—क्यों भाई ले लिया ?

शर्वि—बाम्हन की बात कौन न मानेगा, ले लिया ।

मैत्रे—तो अब दुकान बेंच कर बनिये की नाईं सोऊँगा ।

शर्वि—अजी ! तुम सौ बरस सोओ । हाय मैंने मदनिका रंडी के लिये बाम्हन के कुल पर कलक लगाया, कुल के क्या लगा अपने लगा ।

दारिद तोहि धिक्कार तू सब कुछ भनै कराय ।
करत जात सो काज नर मन सन निन्दत जाय ॥

तो मदनिका को छुड़ाने के लिये बसन्तसेना के घर चलूँ (देख कर) अरे, किसी के पाँव की आहट जान पड़ती है पहरेवाला तो नहीं आ रहा है ! चुपचाप खभे की नाईं खड़ा हो जाऊँ । और पहरेवाले भी शर्विलक का क्या कर सकते हैं ।

झपटा के मारन में चील्ह के समान हम
जल्दी जल्दी भागने में मृग से न कम हैं ।
सोये जागे चीन्ह लेत कूकुर की नाईं नित
बिल्ली के से पायँ मेरे चलत नरम हैं ।
मायारूप धारन में साँप से हैं सर्कन में
देश भाषा जानन में बानी के सम हैं ।

मैत्रे—उठिए, उठिए, जो थाती को चोर ले गया तो आप क्यों घबरा गये ?

चारु—(साँस लेकर) भाई ।

दोष लगै हैं मोहि सब, को माने सच बात ।
बिना तेज दारिद्र पै सबै, दोष फबि जात ॥

हाय, हाय, मेरे धन के हरन को चाह दैव जो कीन्ह ।
तो अब काहू बिचारि कै पापी अपजस दीन्ह ॥

मैत्रे—हम बात बना लेंगे किसने लिया, किसने दिया, कौन साखी है ।

चारु—अरे तुम यह जानते हो, क्या हम कभी झूँठ बोलेंगे ?

करि हो थातो देन को भीखहु माँगि उपाय ।
झूँठ कहौं नहि बोलिहो जेहि से धर्म नसाय ॥

रद—अब इसे आके बाई जी से कहूँ । (बाहर जाती है)

[स्थान दूसरा—चारुदत्त के घर के भीतर दूसरी जगह]

(चारुदत्त की स्त्री धूता बैठी है, रदनिका आती है)

धूता—(घबरा कर) अरी आर्यपुत्र को या मैत्रेय जी को चोट तो नहीं आई ।

रद—जी चोट तो किसी को नहीं आई, पर जो गहने पातुर छोड़ गई थी उन्हें चोर ले गया (धूता बेसुध हो जाती है)

रद—उठिए ।

धूता—(साँस लेकर) अरी क्या कहती है कि उन्हें चोट नहीं आई । अरी हाथ पैर कट गये होते तो कुछ बुरा न था, इस से तो उन पर कलंक लग जायगा, सारी उज्जैनी के लोग यही कहैंगे कि चारुदत्त ने धन के लालच में ऐसा काम किया । (ऊपर देख कर साँस लेकर) भगवान ! तुम हम लोगों को पुरइन के पत्ते पर पानी की बूँद का भाँति क्यों नचा रहे,

काम है या कोई नगर मे आया है, नहीं तो सारी उज्जैनी कौन नहीं जानता कि हमारे कुछ नहीं है।

चारु—परदेशी अभ्यास करत कोऊ सेंध लगाई।
जान्यो नहि बिनधन सोने सब सोच बिहाई॥
पहिले कीन्हीं आस देखि यह महल महाना।
सेंध फोरि बहुबेरि अवसि बपुरा पछिताना॥

यह बिचारा अपने साथियो में जाकर कहैगा कि हम चैाधरा के लड़के के घर गये वहां कुछ न मिला।

मैत्रे—आप भी चोर के लिये सोच करते हैं। उसने देखा होगा कि यह बड़ा भारी घर है इसमें हीरा मोती का डिब्बा या सोने के गहनों का डिब्बा पाऊँगा। (सोच कर दुख से आपही आप) गहनों का डिब्बा कहां है? (फिर सोच कर प्रकाश) भाई, तुम सदा कहते थे कि मैत्रेय मूर्ख है, हम ने कैसा अच्छा किया जो गहनों का डिब्बा तुम को दे दिया नहीं तो वा पाजी चुरा ले जाता।

चारु—अजी क्यो हँसी करते हो?

मैत्रे—क्या हम ऐसे निरे मूर्ख हैं जो हम हँसी का औसर नहीं जानते।

चारु—तुम ने कब दिया?

मैत्रे—जब हमने तुमसे कहा था कि तुम्हारा हाथ ठढा है।

चारु—कदाचित् दिया हो (चारो ओर ढूँढ कर) भाई य बहुत अच्छी बात हुई।

मैत्रे—क्या बच गया?

चारु—नहीं चोर ले गया।

मैत्रे—इसमें कौन अच्छी बात हुई?

चारु—चोर हमारे घर से निरास नहीं गया।

मैत्रे—अजी यह तो पराई थाती थी।

चारु—अरे! (बेसुध होकर गिर पड़ता है)

तुम हित सुख दुख माँहि, नारि दशाअनुकूल है।
साँचहुँ छूटो नाहि, दारिद में नहि सुलभ जो ॥

मैत्रेय जी! सवेरा होने चाहता है, हार लेकर वसन्तसेना के पास जाओ और उससे हमारी ओर से यह कहना कि हम अपना समझ के गहनो का डिब्बा जुए में हार गए, उसके बदले यह हार ले लीजिये।

मैत्रे—आप। ऐसे महँगे रत्नों का यह हार ऐसे डिब्बे के कारन क्यों दे रहे हैं जिसे किसी ने खाया न पहिना और चोर लेगया।

चारु—भाई ऐसी बात न कहो।

दीन्हे भूषन सौंपि सो करि हम पर विश्वास।
तेहीं सो हम हार दै गुरुता करत प्रकास ॥

भाई तुम्हें हमारे सिर की सौं है बिना दिये न लौटना। वर्द्धमानक,

भरौ बेगि यहि सेंध को पकी ईंट लगाय।
सेंध लगे को दोष यह घर जेहि सन मिट जाय ॥

भाई मैत्रेय! तुम भी वहाँ लुब्धता छोड़ कर उदार बन जाना।

मैत्रे—अरे कंगाल कैसे उदार की बातें करेगा?

चारु—अजी हम कंगाल नहीं हैं।

'तुम हित सुख'—इत्यादि फिर से पढ़ता है।

तुम जाओ, हम भी हाथ मुँह धोकर सन्ध्या करेंगे।

(सब बाहर जाते हैं)

चौथा अंक

(पहिला स्थान—वसंतसेना का घर)

(चेरी आती है)

चेरी—अम्मा ने मुझे बाई जी के पास भेजा है। बाई जी यह बैठी चित्र देखती जाती हैं और मदनिका से कुछ कह रही हैं। तो मैं भी उनके पास चलूँ। (बाहर जाती

हो ? मेरे पास मैके की एक माला बची है उसे भी आर्यपुत्र अपन भलमसी से न लेंगे । अरी मैत्रेय जी को बुला तो ला ।

रद—बहुत अच्छा । (मैत्रेय के पास जाकर) मैत्रेय जी बाई जी बुलाती हैं ।

मैत्रे—कहां हैं ?

रद—यह क्या हैं ।

मैत्रे—(आगे बढ़ कर) जय हो आप की !

धूता—आइये प्रणाम, हमारी ओर मुँह कीजिये ।

मैत्रे—लीजिये मैंने आप की ओर मुँह कर लिया ।

धूता—इसे लीजिए (माला देती है) ।

मैत्रे—यह क्या है ?

धूता—मैं रतनछठ उपासी थी उस में बाम्हन को जितना हो सके दान देना चाहिये, उस दिन मैंने कुछ नहीं दिया था इसी से आज यह हार देती हूँ ।

मैत्रे—(हार लेकर) आपका भला हो, मैं जाकर बाम्हन जी को दिलाऊँ ।

धूता—मैत्रेय जी मुझे क्यो लजाते हो ? (बाहर जाती है)

मैत्रे—वाह वाह कैसी उदार है !

चारु—मैत्रेय—क्या कर रहे हैं, बड़ी देर होगई है ; ऐसा न हो कि घबराहट में कुछ अनर्थ कर बैठें । मैत्रेय ! मैत्रेय ! ।

मैत्रे—(आगे बढ़कर) कहिये लीजिये (हार दिखलाता है)

चारु—यह क्या है ?

मैत्रे—जैसे आप हैं वैसी ही आपको स्त्री होने का यही फल है

चारु—हा ! क्या मेरी ब्राह्मणी भी मुझ पर दया करती है मेरे कँगाल होने में सन्देह नहीं ।

अपनो धन सब खोय, तियसम्पति से पति रहो ।
धनहि पुरुष तिय होय, होत धनहि से तिय पुरुष ॥

दरिद्र नहीं हैं ।

वसन्त—तो अम्मा से कह आ जो चाहती हैं कि मैं जीती रहूँ तो फिर मुझ से कभी ऐसी बात न कहें।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

(शर्विलक आता है)

विमल रैन महँ दोष लगाई।
नींद जीति पहरू बहिराई॥
उग्रत दिनेश होत छविमंदा।
बीते रैन भयो जनु चंदा॥

देखे मोहि त्वरात चलत जो मग महँ धावत।
कै मोहि ठाढ़ो देरि पास मेरे चलि आवत॥
चढ़ो पाप सिर प्रान जात डर जगत सुहाई।
करत आपही पाप आपही नाहि डेराई॥

मैंने मदनिका के लिये ऐसा साहस किया।

चाकर से बतरात एक की आँखि बचाई।
नारी ही इक गेह देखि तेहिं चलो बिहाई॥
चौखट से है खड़ो देखि पहरे कर फेरा।
बाज अनेकन चलि कीन्हो कोउ भाँति सबेरा॥

वसन्त—अरी यह पट हमारे पलग पर रख दे और पखा लेकर जल्दी आ।

मद—बहुत अच्छा (पट लेकर बाहर जाती है)

शर्वि—वसन्तसेना का घर यही है, मदनिका को ढूँढ़ूँ।

(पखा हाथ में लिए मदनिका आती है)

शर्वि—(देखकर) यही तो है मदनिका।

जेते गुन यहि सुंदरि माहीं।
ते ते गुन कामहुँ महँ नाहीं॥
हैं यहि के सब अंग अनूपा।
रति है खड़ी धरे जनु रूपा॥
यह मोहि जरत काम की ज्वाला।
करति ठढ चदन सम,

[दूसरा स्थान—वसन्तसेना के घर का एक कमरा]

(हाथ में चित्र लिये वसन्तसेना बैठी है, मदनिका खड़ी है)

वसन्त—अरी, मदनिका! चारुदत्त जी का ठीक चित्र उतरा है।

मद—जी हाँ ठीक है।

बसंत—तूने कैसे जाना ?

मद—मैंने देखा कि आप इसे बड़े ध्यान से देख रही हैं।

वसन्त—अरी मदनिका, वेसवापने की चतुराई से ऐसा कहती है।

मद—बाई जी, क्या वेसवा होने से कोई सच नहीं बोलता !

बसत—अरी, वेसवा झूठ न बोले तो क्या करे, उसका र रग के लोगों से काम रहता है।

मद—आप का मन और आंख दोनो लग गये उसका आप कारन क्यो पूछती हैं ?

बसन्त—अरी, मै अपनी सहेलियो की हँसी से बचना चाहती हूँ।

मद—बाई जी ! ऐसा न कहिए। सखी सहेलियां सब आप ही के मन की करेंगी। (चेरी आती है)

चेरी—बाई जी ! अम्मा कहती हैं कि चादर ओढ लीजिये खिड़की के पास रथ खड़ा है।

बसन्त—क्या चारुदत्त जी बुला रहे हैं ?

चेरी—जी नहीं एक और कोई है उन्होंने दस हजार के गहने भी भेजे हैं।

बसन्त—यह कौन है ?

चेरी—जी, राजा के साले सस्थानक।

—(क्रोध से) चल दूर हो, हमारे सामने ऐसा फिर

—बाईजी,मुझे क्षमा कीजिए मैं अम्मा के कहने से आई थी। ऐसा सनेसा ही बुरा लगता है।

मद—अपना शरीर और अपनी भलमसी।

शर्वि—अरी तू नहीं जानती है साहसही में लक्ष्मी रहती हैं।

मद—अच्छा तुम भले मानुस ही बने रहे? कहीं मेरे कारन साहस करते करते अनरथ तो नहीं कर डाला?

शर्वि—मूलत हौं गहने पहिने सुकुमारि नहीं कोइ फूली लतासी।
लेत नहीं धन बाम्हन के जो धरो तिन यज्ञ के काज निकासी।
छीनो नहीं धन लालचसे कोइ बाल जो गोद खिलावति दासी।
चोरी के कामहु में मे परौ नित योग अयोग विचार प्रकासी॥

तो अब तुम जाके वसन्तसेना जी से कहो।

मो पर कृपा दिखाय अपनेहि तन की नाप के।
पहिरिय इन्हें छिपाय ए भूषन कीजिये ग्रहन॥

मद—शर्विलक! हम बेसवा हैं। हमारे गहने छिप नहीं सकते। इस से बन्द डिब्बा देना अच्छा नहीं। खोलो तो देखें इस में क्या क्या है?

शर्वि—लो। (डरता हुआ डिब्बा देता है)

मद—अरे, यह गहने तो मेरे देखे हैं, कहो तो तुमने कहां पाये?

शर्वि—मदनिका, तुम यह जान कर क्या करोगी?

मद—(रोष से) तुम हमै नहीं पतिआते तो हम को छुड़ा के क्या करोगे?

शर्वि—अरे, कल मेने चौक में सुना था कि चैाधरी के हैं।

(वसन्तसेना और मदनिका बेसुध होकर गिर पडती है)

शर्वि—उठो मदनिका, क्या है?

छूटत तेरो दासपन, तू दुख से घवराति।
काँपति चितवति हैं खडी, हम पर तरस न खाति॥

मद—(सांस लेकर) अरे, मेरे कारन तुम ने अकाज तो किया, उस घर मे किसी को मारा तो नहीं?

शर्वि—मदनिका! डरे या सोये को शर्विलक न मारेगा, यहां न मैने किसी को मारा है न घायल किया है।

मद—(देखकर) अरे शर्विलक, अच्छे आये, कहो क्या है?

शर्वि—कहेंगे । (दोनो एक दूसरे को बड़े अनुराग से देखते हैं)

वसन्त—क्या कर रही है मदनिका? कहाँ चली गई?

(खिड़की से झाँक कर) अरे यह तो किसी मर्द से बातें कर रही है और उसे बड़े ध्यान से टकटकी बाँधे देख रही है। हो न हो यह इसे छुड़ाने आया है तो इन दोनों को छेड़ना न चाहिए; न पुकारूँगी।

मद—शर्विलक, कहो।

शर्वि—(डरता हुआ चारो ओर देखता है)

मद—शर्विलक, क्यो डरते से हो।

शर्वि—कुछ चुपके से कहना है, कोई है तो नहीं।

मद—कोई नहीं है।

वसन्त—(आप ही आप) क्या कोई छिपी बात है? तो न सुनूँ।

शर्वि—मदनिका! भला वसन्तसेना तुम्हें कुछ लेके छोड़ देगी?

वसन्त—(आप ही आप) क्या कुछ मेरी ही बात कर रहे हैं? तो इस खिड़की की ओट हो कर सुनूँ।

मद—मैंने बाई जी से कहा था तो बाई जी बोलीं हमारी चले तो हम अपनी चेरियाँ छोड़ दें। तुम तो बताओ तुमने इतना धन कहाँ पाया जो मुझे बाई जी से छुड़ाओगे?

शर्वि—पाय सकौ तव नेह में धन न और कोउ भाँति।
कीन्हो तेरे काज में साहस पिछली राति॥

वसन्त—(आपही आप) रूप तो इस का बहुत अच्छा है साहस कैसे किया?

—शर्विलक, तुमने लुगाई के कारन अपने दोनो ससौ ।

क्या, क्या?

स्त्री तो सदा की चचल होती हैं और

मन में चाहैं और को कर और दिसि नैन।
डारैं मंद शेड और पै करैं और सँग सैन॥

किसी ने बहुत ठीक कहा है—

गदहा करै न हय कर काम।
परबत पर सरोज कब जाम॥
जब बोये उपजे नहि धान।
रहै न शुचि पातुरसताम॥

अरे पापी चारुदत्त रह, अब तू नहीं बच सकता (इतना कह कर दो चार पग चलता है)।

मद—(आँचल पकड़ कर) क्या बेठिकाने की बातें कर रहे हो? तुम नाहक बिगड़ते हो।

शर्वि—क्यों?

मद—गहने आई जो के हैं।

शर्वि—तो फिर?

मद—चारुदत्त के घर छोड़ आई थीं।

शर्वि—क्यो?

मद—(कान में कहती है)।

शर्वि—(घबड़ा कर)?

कठिन घाम मे जरत तन जासु सरन मे लीन्ह।
बिना पात को रूख मोह में अनजाने कीन्ह॥

वसन्त—(आप ही आप) यह भी पछिता रहा है, तो हो न हो इसने बेजाने यह काम किया।

शर्वि—मदनिका, अब क्या करैं?

मद—तुम्ही जानो।

शर्वि—मेरी बुद्धि काम नहीं करती।

होइ स्वभावहिते सदा नारी चतुर प्रवीन।
पुरुषन की है चतुरई विद्या के आधीन॥

मद—सच ?

शर्वि—हाँ सच।

वसन्त—बस, बड़ी बात हुई।

मद—बहुत अच्छा हुआ।

शर्वि—(ईर्षा से) मदनिका ! तुम्हारी बात हमारी में नहीं आती।

शुद्ध शील आचार रहे पुरखा सब मेरे।
करत नीच यह काम नेह बस केवल तेरे॥
नसौ काम धन बुद्धि मान अपने मैं राखत।
तू औरन सों मिलति मित्र मुख से मोहि भाखत॥
खींचि लेत जब धन सकल छुवें न पुरुष बहोरि।
तजैं महाउर के सरिस पातुर रग निचोरि॥

(सोच कर) सरबस धन फल से जसे तरवरपुरुष कुलीन।
पातुर चिड़ियन के भखे होत वंशफलहीन॥
मेल प्रीति इन्धन परम कठिन काम की, ज्वाल।
धन जोवन जहँ नरन के भसम होत ततकाल॥

वसन्त—(आप ही आप मुसुकरा कर) अरे, यह वृथा घबरा रहा है।

शर्वि—रहे सिंधु की लहर सम चंचल नारि सुभाव।
साँझ समय के मेघ सम इक छिन राग दिखाव॥
बहुत न फँसिये तियन सग निदरैं फँसे सयानि।
जो मानै तेहि सँग रहैं तजिये निदरत जानि॥

किसी ने ठीक कहा है—

रोवैं हँसैं सदा धन के हित।
नरहि विसासि देहैं धोखा नित॥
चातुर तजैं पातुरी कैसे?
जन मसान के फूलन जैसे॥

महामूढ़ ते लोग जो प्रिय तिय को पतिआयँ।
तिय घर प्रिय नागिनि सरिस मटकत सटकत जायँ॥

मद—बाईजी, क्या मै अपने घर के लोग भी नहीं पहचानती।

वसन्त—(आपही आप सिर हिलाकर हँस कर) ठीक है, (प्रकाश) अच्छा बुला ला।

मद—बहुत अच्छा (शर्विलक के पास जाकर) आओ जी शर्विलक।

शर्वि—(वसन्तसेना के पास जाकर) जय हो आप की!

वसन्त—आइए, पाल्लागन, बैठिये।

शर्वि—चौधरी ने आपसे यह बिनती की है कि हमारा घर आज कल जर्जर हो रहा है, डिब्बे की रखवाली बड़ी कठिन है इसे आप लीजिये। (डिब्बा मदनिका को देकर जाना चाहता है)

वसन्त—तो मेरा भी जबाब लेते जाइ।

शर्वि—(आप ही आप) अब यहाँ कौन जायगा? (प्रकाश) आप क्या कहैंगी?

वसत—आप मदनिका को लेते जाइये।

शर्वि—बाई जी, आप की बात मे समझा नहीं।

वसन्त—मै समझा दूँ।

शर्वि—कैसे?

वसन्त—मुझ से चारुदत्तजी ने कहा था कि जो तुम्हें गहने दे उसे तुम मदनिका को दे देना, तो वही इसे दिलवा रहे हैं अब आप समझे?

शर्वि—(आप ही आप) इन्होने जान लिया (प्रकाश) वाह चारुदत्त जी वाह!

गुनही में जानै सदा चित नर चतुर सुजान।
गुनयुत भलो दरिद्र हू नहिं गुनबिन धनवान॥

और

गुन हित करौ यतन सब कोई।
गुन सन कछु दुर्लभ नहिं होई॥
गुनअधिकाइ हेत रजनीसा।
पहुँच्यो अगम शंभु के सीसा॥

मद—शर्विलक! जो तुम मेरा कहना मानो तो गहने ल जाकर उन्हीं को देआओ।

शर्वि—और जो कहीं वह कोतवाली में कह दें?

मद—कहीं चन्द्रमा से भी गरमी आती है।

वसन्त—(आप ही आप) वाह मदनिका, वाह!

शर्वि—नहि विषाद यहि काज दंड को नहि कछु त्रासा।
मो सज्जन के सुगुन करौ जेहि काज प्रकासा।
सुमिरि नीच यह काज होत मोरे मन लाजा।
जो न करै सो थोर शठन मो सम कर राजा।

तो भी यह बात नीति के विरुद्ध है और कोई चाल सोचो।

मद—अच्छा, एक और उपाय है।

वसन्त—(आप ही आप) और क्या उपाय होगा?

मद—तुम चारुदत्त जी के भेजे हुए बनो और गहने बाईजी को दे दो।

शर्वि—ऐसा करने से क्या होगा?

मद—तुम चोर न रह जाओगे, चारुदत्तजी उरिन हो जायँगे। और बाई जी अपने गहने पाजायँगीं।

शर्वि—बड़ी ढिठाई का काम है।

मद—ढिठाई है तो कर डालो।

वसन्त—(आप ही आप) वाह मदनिका, वाह, तू ने गिरस्त की सी बात कही है।

शर्वि—मैं सोखी यह चतुरई सुनि तुम्हारि सलाह।
रात अँधेरी चन्द्र बिन कौन दिखावै राह॥

मद—अच्छा तो तुम अब कामदेव के मन्दिर में ठहरो, हम बाई जी को तुम्हारा आना जना दें।

शर्वि—बहुत अच्छा।

मद—(वसन्तसेना के पास जाकर) बाई जी चारुदत्त जी के से एक बाम्हन आया है।

वसन्त—अरी तू ने कैसे जाना कि उन्हीं का भेजा है?

शर्वि—(सुन कर) क्या मेरे प्यारे आर्यक को राजा पालक ने बांध लिया, मैं गृहस्थ भी बन गया, अब क्या करूँ !

नर के नारी और हित प्यारे जग में दोय ।
यदि कुन सौ तिय से अधिक मित्र पियारो होय ॥

तो अब उतरूँ (रथ से उतरता है)

मद—(आंसू भर कर हाथ जोड़) आर्यपुत्र ! आप जाते हैं तो मुझे अपने घर पहुँचा दीजिये ।

शर्वि—वाह ! प्रिया वाह ! तुमने हमारे मन की बात कही । (चेरे से) क्यों भाई चौधरी रेभिल का घर जानते हो ?

चेरा—जी हां ।

शर्वि—प्रिया को वहाँ पहुँचा दो ।

चेरा—बहुत अच्छा ।

मद—आप सँभल के जोखम में पड़ियेगा (बाहर जाती है) ।

शर्वि—विट भुज बल जो विदित गोत के लोगहु सिगरे ।
राजा से अपमान पाइ सेवक जो बिगरे ॥
योगंधरायन कीन्ह भूप उदयन हित जैसे ।
इष्ट मित्र के काज उभारों उन सब तैसे ॥
नाहक बांधो मित्र को डर बस रिपु मतिमन्द ।
झपटि छुड़ाओ ताहि ज्यों परत राहुमुख चंद ॥

(बाहर जाता है)

[चौथा स्थान—वसन्तसेना का महल]

(चेरी और बघुल के साथ मैत्रेय आता है)

मैत्रे—अरे ! रावण ने मर मर के तपस्या की तो राक्षसों का राजा हुआ पुष्पकविमान पर चढ़ चढ़ घूमा, और मैंने न तपस्या की न कुछ, रण्डियों के साथ फिरता हूँ ।

वसन्त—कोई रथ है।

(एक रथ लेकर चेरा आता है)

चेरा—रथ हाजिर है।

वसन्त—(मदनिका को चादर ओढ़ा कर घूँघट खींचकर) मदनिका! अब जा तू हमसे विदा हो, रथ पर सवार हो जा। हमारी सुध रखना।

मद—(रोती हुई) बाईजी मुझे क्यों छोड़े देती हैं? (पैरों पर गिर पड़ती है)।

वसन्त—अब तो तुम्हीं ऐसी हो गई कि हम तुम्हारे पाँव छुएँ। जाके रथ पर सवार हो। हमें न भूलना।

शर्वि—जय हो आपकी, मदनिका!

विदा होहु बदौ इन्हें चरनन माथ नवाइ।
पूर्णकाम जेहि सन भई बधू सुपद तुम पाइ॥

(मदनिका के साथ रथ पर सवार होकर बाहर जाता है)

(एक चेरी आती है)

चेरी—बाई जी! बधाई है। चारुदत्त जी के पास से एक ब्राम्हन आया है।

वसत—आज का दिन भी कैसा अच्छा है? जा बन्धुल के साथ उन्हें आदर से ले आ, मैं भी फुलवारी में जाकर बैठती हूँ।

चेरी—बहुत अच्छा। (बाहर जाती है)

[तीसरा स्थान सड़क]

(रथ पर चढ़े हुए शर्विलक और मदनिका देख पड़ते हैं?)

(परदे के पीछे)

सुनो जी सुनो! कोतवाल साहब की आज्ञा है कि जिस अहीर आर्यक को सिद्ध ने कहा था कि राजा होगा उसे राजा ने डर कर घोसियों के गाँव से लाकर, अँधेरे बन्दीघर में किया है, तुम लोग भी अपने काम पर चौकस रहना!

रहा है। इधर अखाड़े से निकले पहलवान की नाईं मेढ़े की गरदन मली जा रही है, इधर घोड़ों के बाल सवारे जा रहे हैं, इधर देखो घुड़साल में एक ओर चोर ऐसा बन्दर बँधा है। (दूसरी ओर देख कर) और इधर महावत आटा सान सान पिंड बना बना कर हाथियों को खिला रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, तीसरे चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर) अरे, अरे, तीसरे चौक में तो भलेमानुसों के बैठने के लिये आसन रखे हुए हैं; तिपाई पर खुली हुई पोथी रक्खी है; यह देखिये रत्नों की गोटें समेत चौसर बिछी है, यह देखो पातुरें और बूढ़े विट रंग रंग के चित्र हाथ में लिये हुए इधर उधर टहल रहे हैं। चलो, आगे चलो।

चेरी—आइये, चौथे चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अरे चौथे चौक में तो जवान जवान स्त्रियाँ मृदङ्ग बजा रही हैं जिन से बादल गरजता सा जान पड़ता है, मजीरा बजने में ऐसा चमक रहा है मानो पुन्य घट जाने से आकाश के तारे धरती पर छिटक रहे हैं, बाँसुरी कैसे मीठे सुर से बज रही है और इधर गोद में रक्खी हुई बीना नरम हाथों से बजती हुई मानवती नायिका की नाईं झनझना रही है, और फूल के रस से माती भौंरियों सी पातुरों की लड़कियाँ गा गा कर नाच रही हैं, कोई नाटक पढ़ रही है और कोई भाव सीख रही है।

चेरी—आइये, पाँचवें चौक में आइए।

मैत्रे—(चल कर और देख कर) अरे, अरे, पाँचवें चौक में तो कगालों के जी ललचाने वाली हींग और तेल की गंध आ रही है, रसोई के घर से सुगन्ध और धुआँ ऐसा निकल रहा है जैसे कोई जी जला हुआ साँस ले; भाँति भाँति के भोजनों के गंध से मेरे पेट की आग भड़क उठी है और देखिये कसाई का लड़का मैले कपड़े की नाईं

चेरी—देखिए हमारे घर की ड्याढ़ी देखिए।

मैत्रे—(देख कर अचरज से) वाह, वसन्तसेना के घर की ड्योढ़ी कैसी सुन्दर है, दरिद्र देख हाय मारे। भीतर हरे से रंगी है, नीचे भाड़ू देकर सब भक कर दिया गया है, ऊपर पानी छिड़का हुआ है, ठांव ठांव पर रंग रंग के फूल रक्खे हुये हैं फाटक इतना ऊँचा है मानो आकाश देखने को सिर उठाये हुये है फाटक के दोनों ओर बड़े बड़े हाथी अपने सूँड़ों से बेले के हार हिला रहे हैं और मेहराब हाथीदांत का बना हुआ है, पताकाओं की पांत सजी हुई है कुसुम रंग के अचल बयार में ऐसे हिल रहे, मानो मुझे बुला रहे हैं, इनके खम्भों की टोंड़ियों के पास हरे आम के पल्लव पड़े हुए बिलोर के कलश रक्खे हुए हैं। हिरण्य कशिपु की छाती की नाईं बज्र ऐसे मोटे मोटे नहरे किवाड़ लगे हैं, इनको देखने से जो लोग संसार से अपना जी हटा कर बैठे वह भी एक बार टकटकी बांध कर देखने लगेंगे।

चेरी—आइये यह पहिला चौक है।

मैत्रे—(आगे चल कर देख कर) अरे, अरे, यहां तो चौक में चांद, सख और कमल के रंग की बुकनी से रंगे हुए जिनकी सुनहरी सीढ़ियों पर रंग रंग के रत्न जड़े हैं ऊँचे महल खड़े हैं जो अपने मोती की झालरों से सजे हुए मुँह ऐसे झरोखें से मानो उज्जैनी को देख रहे हैं, ड्योढ़ी पर दरवान ऊँघता हुआ ऐसा बैठा है जैसे कोई पंडित मंत्र जपे, दही चांवल की बलि रक्खी है पर चूना समझ के उसे कौवे नहीं छूते।

चेरी—चलिये, दूसरे चौक में चलिये।

मैत्रे—(घुस के देख कर) अरे, अरे, दूसरे चौक में बहली के बैल घास भूसा खाकर कैसे मोटे मोटे बँधे हैं सींगो में तेल चुपड़ा हुआ है, इनके बीच में निरादर हुए भलेमानुस की नाईं एक भैंसा लम्बी लम्बी साँसें ले

ड़े रडों के पीछे अपनी संपति गँवाये हुये रंडियाँ मद पी कर
ा चुक्कड़ों में छोड देती हैं उसे बड़े चाव से पी रहे हैं, चलो
ागे चलो।

चेरी—आइये, सातवें चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर और देख कर) अरे, सातवें चौक में तो
ुंदर पींजरो और ढाबलियो में बैठे हुए कबूतरों के जोड़े एक
सरे को चूम रहे हैं। सुआ दूध भात खाकर बाम्हन की नाईं
द पढ़ रहा है। इधर स्वामी से आदर पाकर फूली हुई लौंडी
ी मैना चिल्ला रही है और रंग रंग के फल खाकर कोयल
ूक रही है, इधर बटेर लड़ रहे हैं, इधर तीतर बोल रहे
, कहीं कहीं कोई पिंजडे में कबूतर लिये जा रहा है और कहीं
ूरज की किरनो से जले हुए महलों के मोर अपने
ल जड़े पखों से पखा कर रहा है। (दूसरी ओर देख कर)
ौर इधर देखिये पातुरो के पीछे राजहंस का जोड़ा अपनी चाल
सखाता हुआ चला जा रहा है, बत्तख और सारस घर के बूढ़ों
ी नाईं इधर उधर टहल रहे हैं। इस पातुर ने अपने घर में रंग
ग की चिड़ियाँ पाल कर नंदनबन बना लिया है। चलिये,
ालिये, आगे चलिये।

चेरी—आइये, आठवें चौक में आइये।

मैत्रे—(चलकर देख कर) अरे यह कौन है जो रेशमी कपड़े
पहने अंग अंग पर दोहरे तेहरे गहने जड़े इधर उधर टहल
रहा है?

चेरी—यह बाई जी के भाई हैं।

मैत्रे—अरे, कितनी तपस्या करने से बाई जी का भाई
होता है! नहीं नहीं यह तो मसान में चम्पा के पेड़ ऐसा है।
सब कुछ अच्छा पर किसी के काम का नहीं। (दूसरी ओर
देख कर) अरी यह कौन फूलों से सजी जूता पहिने ऊँचे
पर बैठी है?

रहा है, रसोइये भाँति भाँति के भोजन बना रहे हैं—कोई लड्डू बाँध रहा है, कोई मालपुआ तल रहा है। (आपही आप) अरे, यहाँ ऐसा कोई कहने वाला नहीं कि आइये पाँव धोकर बैठ जाइये। (दूसरी ओर देख कर) अरे, इधर भाँति भाँति के गहने पहने पातुरें और बघुल अप्सरा और गन्धर्व ऐसे टहल रहे हैं। सचमुच यह घर स्वर्ग हो गया है। क्यों जी, तुम लोग बघुल हो?

बघुल—जी हाँ,

पिता और माता कोउ औरहि।
रहे जन्मदाता कोउ औरहि॥
पालि पोषि औरही बढ़ाए।
पर सवति भोगत मन भाये॥
पहिरत खात दूट नित पेलत।
हाथिन के पाछे सम खेलत॥

मैत्रे—चलिये, आगे चलिये।

चेरी—आइये, आइये छठे चौक में आइये।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अरे, अरे, अरे, छठे चौक में तो सोने और रत्नों के फाटक बीच बीच में नीलम जड़ने से इन्द्र धनुष ऐसे देख पड़ते हैं। लहसुनिया, मोती, मूँगा, पुखराज, नीलम, पन्ना, चुन्नी, रत्नपारखी परख रहे हैं मानिक कुन्दन से जड़ा जा रहा है, लाल रेशम में सोने के गहने गूँथे जा रहे हैं, कोई मोती पिरो रहा है कोई बिल्लौर घिस रहा है, कोई शंख में छेद कर रहा है, कोई मूँगा खराद रहा है। इधर कोई केसर सुखा रहा है, कोई कस्तूरी मल रहा है, कोई चन्दन घिस है, कोई और सुगन्ध मिला रहा है, कोई पातुरों के गाहकों ।न खिला रहा है, कोई तिरछी दीठि से ताक रही है, कहीं हो रही है और कहीं सी सी करते हुए लोग मद पी । इधर उधर और बहुत से लोग अपने लड़केवालों को

चेरी—झुक के देखो, यह क्या है।

मैत्रे—(देखकर आगे बढ़ कर) जय हो आप की!

वसन्त—अरे मैत्रेय जी आगये! (उठ कर) आइये, इस आसन पर विराजिये।

मैत्रे—आप बैठ जाइये। (दोनो बैठ जाते हैं)

वसन्त—कहिये, चौधरी जी अच्छे हैं?

मैत्रे—जी बहुत अच्छे हैं।

वसन्त—मैत्रेय जी भला कहिये तो अब भी

मान फूल, विश्वास जर, शील-डार, गुन-पात।
साधुतरहि सो, हितविहँग सुख सन सेयत जात॥

मैत्रे—(आपही आप) इस दुष्ट रंडी ने अच्छी बात बनाई॥

वसन्त—कहिये किधर चले?

मैत्रे—जी, चारुदत्त जी ने हाथ जोड के आपसे विनती की है।

वसन्त—(हाथ जोड़ कर) क्या आज्ञा देते हैं?

मैत्रे—हम आप के गहने अपने समझ से जुए में हार गये हैं और जिसके हाथ हारे वह सभिक था न जानें राजकाज से कहाँ चला गया।

चेरी—बाई जी, बधाई है, चौधरी साहब जुआरी हो गये।

वसन्त—(आपही आप) क्या गहने दिखला दें? (सोचकर) अभी ठहर जायँ।

मैत्रे—क्या आप यह हार न लेंगी?

वसन्त—(हँस कर चेरी का मुँह देख कर) क्यों न लूँगी। (हार लेकर अपने पास रख लेती है) बौरझरे आम से रस कैसे टपकता है! (प्रकाश) मैत्रेय जी! मेरी ओर से अपने जुआरीजी से विनती कीजियेगा कि रात को उनसे ~ आऊँगी।

चेरी—यह हमारी बाई जी की अम्मा हैं।

मैत्रे—इस डाइन का पेट तो बडा भारी है। क्या इसे देव ऐसा बैठा के यह घर बनवाया था या घर के भीतर बनाया था।

चेरी—अरे हँस न, आज कल तो वेचारी को चौथिया आती है।

मैत्रे—हे चौथिया देवता! ऐसा आसन मिले तो हम पर कृपा करो, हम बाम्हन हैं।

चेरी—अरे मर जायगा।

मैत्रे—(हँसकर) अरी, इतने फूले पेट से तो मरा अच्छा!

पी पी के मदिरा मतवारि।
अम्मा ऐसी भई तुम्हारि॥
जो तुम्हारि अम्मा मरि जाय।
सौ सियार तो खायँ अघाय॥

मैने वसंतसेना की बडाई सुनी थी, आज उनका आठ चौक का घर देख कर समझता हूँ कि स्वर्ग यहीं उतरा है। मै इसकी बडाई नहीं कर सकता, यह कुबेर का घर है कि रंडी का! तुम्हारी बाई जी कहाँ हैं?

चेरी—चले चलिये, यह देखिये, फुलवारी में बैठी हैं।

मैत्रे—(चल कर देख कर) अहा हा कैसी सुन्दर फुलवारी है! कैसे सुन्दर सुन्दर फूल लगे हैं! बीच बीच हिंडोले गड़े हैं, जूही, नेवाडी, बेला, चमेली, मोतिया, मोगरा, सेवती सभी लगी हैं, सचमुच नंदनवन हो रहा है। (दूसरी ओर देखकर) और यह लाल कमलों पर सूरज की किरनो के पडने से पोखरी का साँझ का सा रंग हो रहा है!

सोहै लखैा अशोक धरि नये फूल औ पात।
लगे रक्त के बूँद जनु समर सुभट के गात॥

हैं बाईं जो?

गिरैं धरनि के ऊपर कैसे।
गगनवस्त्र को झालर जैसे॥

मलि चलत चक चकई मनहुँ कहुँ हंस जनु उड़ि जात हैं।
कहुँ लसत मकरी मगर जनु कहुँ महल उठे जलात हैं॥
धनि जात रूप अनेक घन के जलहु चाल बतास की।
लखि परैं खींचे चित्र मानहु छत्त माँहि अकास की॥
मेघ से औ तम से घिरि कै धृतराष्ट्र के राज सो सोहै अकासा।
कूकत हैं एक ओर शिखी दुरयोधन से करि गर्व प्रकासा।
जूए में हारि युधिष्ठिर के सम कोकिल बेठी है मौन उदासा।
पाडव से वन*छाँड़ि के हंस कहूँ छिपि के अब लीन निवासा॥

(सोचकर) मैत्रेय को वसतसेना के पास गये बड़ी देर हुई, अभी तक नहीं आये, क्या करते हैं।

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—पातुर भी कैसी लालची और नसीली होती है। देखो, वसतसेना बोली न चाला, पूछा न गछा और माला ले ली। इतना तो धन मिला पर उसके मुँह मे यह भी न निकला कि मैत्रेय जी बैठो, पानी तो पीलो तब जाना। मेरी चले तो मैं मुँह-जली का मुँह न देखूँ। (दुःख मे) लोग ठीक कहते हैं कि कमल कहाँ जिसमें मॅसीड नहीं, बनियाँ कहाँ जो धोखा न दे, सोनार कहाँ जो चोर न हो, गँवारों की भेंट कहाँ जिसमें लड़ाई दगा न हो और पतुरिया ऐसी कहाँ जो लालची न हो। तो अब चारुदत्तजी को इस पतुरिया से छुड़ाने का उपाय करूँ। (चल कर और देखकर) चारुदत्त जी तो बाग में बैठे बैठे हैं (आगे बढ़ कर) बढ़ती हो।

चारु—अरे मैत्रेय जी आ गये ! आओ यहाँ बैठो।

मैत्रे—बैठे।

चारु—कहो भाई काम सिद्ध कर आये ?

* घन का अर्थ संस्कृत में मेघ भी है।

मैत्रे—(आप ही आप) अब यहाँ आके और क्या लेगी! (प्रकाश) बहुत अच्छा कह दूँगा (आपही आप) कि ... के फन्द में न पड़ें। (बाहर जाता है)

बसन्त—अरी यह गहने ले ले, आज ,चारुदत्त जी के चलैंगे।

चेरी—बाई जी, आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है,

बसन्त—होय राति बदरा उठैं बरसैं मूसलधार,
पिया मिलन में कौन य मेरे रोकनहार ?

हार लेकर जल्दी आ। (दोनों बाहर जाती हैं)

पाँचवाँ अंक

(स्थान—चारुदत्त का घर)

(चारुदत्त आसन पर बैठा देख पड़ता है)

चारु—(ऊपर देखकर) अरे आज बड़ा दुर्दिन हो रहा है।

देखत बरके मोर चाव मन पूँछ फुजाई।
मानसरोवर चलत हंस देखैं घबराई॥
बिना समय के मेघ लखो नभ चहुँ दिसि छावत।
बिरहिनि के मन माहिं काम की पीर उठावत॥
भीगे भैंसे उदर सरिस भौंरे से कारे।
लसत बिज्जु चहुँ ओर मनहु पीताम्बर धारे॥
लसत कड़ाकुलपांति गए मानहु निजकर धरि।
जाँघन चहत अकाश पकही पद फिरि जनु हरि॥
श्याम बरन धरि शरसी कुटिल कड़ाकुलपांति।
बिजरीपट ओढ़े लखैं घन केशव की भांति॥
टपकत गले रूप अनुहारा।
घन सन गिरत नीर की धारा॥
चमकत बिज्जु कबहुँ दरसाहीं।
घन अँधेर महँ पुनि छिपि जाहीं॥

गिरैं धरनि के ऊपर कैसे।
गगनवस्त्र की झालर जैसे॥
नलि चलत चक चकई मनहुँ कहुँ हंस जनु उड़ि जात हैं।
कहुँ लसत मछरी मगर जनु कहुँ महल उठे लखात हैं॥
नि जात रूप अनेक घन के लसहु चाल बतास की।
तलि परैं खींचे चित्र मानहु छत्त माँहि अकास की॥
मेघ से ज्यों तम से घिरि कै धृतराष्ट्र के राज सो सोहैं अकाशा।
कूकत हैं यक ओर शिखी दुरयोधन से करि गर्व प्रकासा।
जूप में हारि युधिष्ठिर के सम कोकिल बैठी है मौन उदासा।
पाडव से बन*छाँड़ि के हंस कहूँ छिपि कै अब लीन निवासा॥

(सोचकर) मैत्रेय के वसन्तसेना के पास गये बड़ी देर हुई, अभी तक नहीं आये, क्या करते हैं।

(मैत्रेय आता है)

मैत्रे—पातुर भी कैसी लालची और नसीली होती है। देखो, वसन्तसेना बोली न चाली, पूछा न गछा और माला ले ली। इतना तो धन मिला पर उसके मुँह से यह भी न निकला कि मैत्रेय जी बैठो, पानी तो पीलो तब जाना। मेरी चलै तो मैं मुँहजली का मुँह न देखूँ। (दुख से) लोग ठीक कहते हैं कि कमल कहाँ जिसमें भँसीड नहीं, बनियाँ कहाँ जो धोखा न दे, सोनार कहाँ जो चोर न हो, गँवारों की भेंट कहाँ जिसमे लड़ाई दङ्गा न हो और पतुरिया ऐसी कहाँ जो लालची न हो। तो अब चारुदत्तजी को इस पतुरिया से छुड़ाने का उपाय करूँ। (चल कर और देखकर) चारुदत्त जी तो बाग में बढ बैठे हैं (आगे बढ़ कर) बढ़ती हो।

चारु—अरे मैत्रेय जी आ गये! आओ यहाँ बैठो।

मैत्रे—बैठे।

चारु—कहो भाई काम सिद्ध कर आये?

---

* वन का अर्थ संस्कृत में जल भी है।

मैत्रे—सब चौपट हो गया ?

चारु—क्या वसन्तसेना ने हार नहीं लिया ?

मैत्रे—अजी हम लोगों के भाग ऐसे कहाँ ? उसने तो ऐसे हाथों से उसे उठा लिया।

चारु—तो फिर क्यों कहते हो कि चौपट हो गया ?

मैत्रे—चौपट न हुआ तो और क्या, किसी के खाने में आया न पीने में, चोर लेगया और उसके बदले ऐसे बड़े मोल के रत्नों की माला हाथ से जाती रही।

चारु—भाई, ऐसी बात न कहो।

निज भूषन सौंपि हमहि करि हमार विश्वास।
यह दै ताके मोल की गुरुता कीन्ह प्रकास॥

मैत्रे—भाई एक बात और हुई जिससे और भी जी जल गया कि वह सखी की ओर देखकर आँचल से मुँह छिपा कर हम पर हँसी थी। देखिए हम ब्राह्मन हैं तो भी आपके पाँव पड़ कर आप से विनती करते हैं कि पतुरियों की सगति बुरी होती है। इससे आप इस पातुर से अलग हो जाइये। पतुरिया तो जूते के भीतर की ककड़ी होती है, घुसने को तो घुस जाती है पर निकलती है बड़े दुःख से। और आपने सुना होगा कि जहाँ पतुरिया, हाथी, कायथ, भिखमगे, धूर्त और गधे रहते हैं वहाँ बुरे लोग भी नहीं जाते।

चारु—भाई तुम किसी की बुराई क्यों करते हो ? हमारी तो दशा ऐसी हो रही है कि अलग न होंगे तो न होंगे देखो—

घोड़े चाहत है भले पवनहु से बढ़िजायँ।
बलही के अनुसार पै बेगि उठत है पायँ॥
स्वभाव सन चपल है चाहत है सब बात।
मानि जब जात तो आपहि मरि सम जात॥
को यह काम, जेहि के धन तेहि से मिलै।

'पही आप) न वसवसेना ऐसी नहीं—'जाके गुन तेहि से मिलै' काश) हमरे पास न दाम सो छूटी है आपही ॥

मैत्रे—(नीचे देखकर आपही आप) यह तो ऊपर देखकर स ले रहे हैं, मेरे कहने से तो और भी उसके लिए घबरा , ठीक कहा है कि काम वाम होता है । (प्रकाश) अजी ातसेना ने कहा था कि साँझ को आऊँगी । हो न हो कुछ और ा चाहती है, हार का दाम कम होगा ।

चारु—आने दो, सुखी होकर जायगी ।

(घर के बाहर कुँभिलक आता है)

भि—अरे ।

जैसे जैसे बरसै तोय ।
पीठिचाम त्यों गलगल होय ॥
जैसे जैसे चले बयार ।
त्यों त्यों काँपै हिया हमार ॥

हँसकर) भन भन भन भन बजत बजाओं सात तार की बीना ।
सात छेद की बसी फूँकों मोसो को परवीना ?
सीपों सीपों गदहा ऐसा गावौं राग मलारा ।
मेरे आगे तुम्बरु कैसा नारद कौन बेचारा ॥

आज बाई जी चारुदत्त के घर आ रही हैं सो मुझे उन्हें चेताने ो पहले ही से भेजा है । (कुछ चल कर देख कर) चारुदत्त जी ो यह बाग में बैठे हैं और वह बहमा भी है तो चलूँ । अरे, बाग ; किवाड़ बन्द हैं तो इस बाम्हन को चौका दूँ ।

एक ककड़ी फेंकता है) ।

मैत्रे—अरे यह कौन ककड़ी मारता है ?

चारु—बाग की भीत पर से कबूतरों ने गिरा दी होगी ।

मैत्रे—रह रे कबूतर रह, इसी लकड़ी से हम तुझे पक्के आम की नाईं भोरे डालते हैं (लाठी उठाता है)

चारु—(जनेऊ पकड़ कर) बैठो, बेचारे को क्यों है, कबूतरी के साथ खेल रहा है ।

कुभि—अरे, मुझे नहीं देखता, कबूतर को देख रहा है। दूसरी कुकड़ी फेंकूँ (फिर फेंकता है)

मैत्रे—(कुभिलक को देखकर) अरे, कुभिलक है, तो किवाड़ खोल दूँ। (किवाड़ खोल कर) अरे कुभिलक! आओ, आओ

कुभि—मैत्रेय जी पालागैं।

मैत्रे—अरे आज क्या है जो ऐसे कुदिन में आये?

कुभि—अजी यही यही।

मैत्रे—अरे कौन कौन?

कुभि—यही यही।

मैत्रे—अबे क्या जाड़े में बुड्ढे कगाल की नाईं उँ उँ करता है?

कुभि—और तुम क्या श्राद्ध में कौवों की नाईं काँव काँव करते हो।

मैत्रे—कह तो।

कुभि—(आपही आप) अच्छा तो ऐसे कहूँ। (प्रकाश) एक प्रश्न देंगे तुम्हें।

मैत्रे—हम तेरे सिर पर एक लात देंगे।

कुभि—अच्छा तो बताओ आम कब बौरते हैं?

मैत्रे—गरमी में तो।

कुभि—(हंस कर) नहीं नहीं।

मैत्रे—(आपही आप) तो क्या कहें? (प्रकाश) चारुदत्त जी से पूँछ लें (चारुदत्त के पास जाकर) क्यों भाई आम कब बौरते हैं?

चारु—बड़े मूर्ख हो, "बसंत" में नहीं जानते।

मैत्रे—(कुभिलक के पास जाकर) अबे बसंत।

कुंभि—अच्छा अब दूसरी बात बताओ; बड़े बड़े नगरों की। कौन करता है?

मैत्रे—अबे रच्छा।

कुमि—(हँस कर) अजी नहीं।

मैत्रे—हम कुछ भूल रहे हैं (सोच कर) चारुदत्त जी से
पूछ लें (चारुदत्त के पास जाकर) क्यों भाई बड़े बड़े नगरों की
रक्षा कौन करता है ?

चारु—सेना।

मैत्रे—(कुमिलक के पास जाकर) अबे सेना।

कुमि—अच्छा दोनो को इकट्ठा करके फुरती से कहो तो।

मैत्रे—सेनाबसत।

कुमि—उलट के कहो।

मैत्रे—(बदन से उलटा होकर) सेनाबसत।

कुमि—अबे गधे पद उलट के कह।

मैत्रे—(पैर उलट कर) सेनाबसत।

कुमि—बड़ा गधा है। अरे अक्षर उलटा।

मैत्रे—(सोच कर) बसंतसेना।

कु—वही, वही, आती हैं।

मैत्रे—तो जाके चारुदत्त जी से कहूँ। (चारुदत्त के पास
जाकर) अजी चारुदत्त जी आप का धनी आयगा।

चारु—हमारे घर में कौन धनी है ?

मैत्रे—घर में नहीं हैं तो आने चाहता है। बसंतसेना
आती है।

चारु—क्यो जी धोखा तो नहीं देते ?

मैत्रे—हमारी बात की परतीत न हो तो कुमिलक से पूँछ
लो। अबे कुमिलक चल तो।

कुमि—(आगे बढ़ कर) प्रणाम।

चारु—आओ जी, कहो बसंतसेना आ रही हैं ?

कुमि—जी हां पहुँचती ही हैं।

चारु—(हर्ष से भाई) हमें अच्छी खबर देना कभी अकारथ
नहीं हुआ, तो जो यह इनाम (दुपट्टा उतार कर देता है)

कुम्भि—(दुपट्टा लेकर हर्ष से) मैं जाके बाई जी से

(बाहर जाता है)

मैत्रे—क्यों भाई, कुछ जानते हो क्यों आ रही है ?

चारु—हम तो कुछ नहीं समझते।

मैत्रे—हम जानते हैं माला का दाम थोड़ा है, गहने थे इस से कुछ और माँगने आती है।

चारु—(आपही आप) उस का सतोष कर दूंगे, (प्रकाश) अच्छा, जाओ आगे बढ़ के बसतसेना को ले आओ।

(मैत्रेय बाहर आता है)

(बाग के बाहर चेरियों और विट के साथ बसतसेना आती है)

विट—(बसतसेना को दिखा कर)

कमल नहीं है लीन्हें प्रिय सों न घट तऊ,
चमकदमकधारी काम की कटारी है।
कुसुम कलीसी है मनोजतरु डार केरी,
लाज न तजे है जोपै पातुर की बारी है।
लीला करि चलती न पुरकुलवधू कोऊ,
याकी छवि देखि जो सुहाग नाहिं हारी है।
रंगभूमि चलै पै सँकेतगेह जात अब,
लेत प्रियजन नित सग सुकुमारी है॥

बसतसेना जी, देखो देखो,

बिरहिन के मन से मलिन लसैं सिखर चहुँ ओर।
उनये लखो पहार पै गर्जत हैं घन घोर॥
नाचि उठे एक सगही मोर पूँछ फैलाय।
मनिमय पखे ताड़ के रहे मनौ नभ छाय॥

और, मूसल धार गिरै जल दादुर ताहि पियैं मुख कौंच लगाई।
दीप समान कदब लसैं कहुँ कूकत मोर लसैं सुख पाई।
खोटे मनुष्यन के सम योगिहि घेरत हैं घन चदहि आई।
बैठत है एक ठाँव नहीं बिजुरी कुलटा युवतीन की नाई॥

बस—आपने बहुत ठीक कहा।

तेरो कौन अकाज कहौ चहुँदिशि घन घेरे।
मेरो प्रानपियार रमै सँग में जो मेरे॥
जो तू बिगड़ी सौत सरिस मोहि गरजि डरावति।
पद पद पापिन रैन राह मेरी तू आवति॥

विट—अच्छा तो हम इसे झिड़कते हैं।

बसंत—अजी यह बिचारी स्त्री है, भलमंसी नहीं जानती
इसको बुरा न कहना चाहिये।

विट—देखिये, देखिये,

धावा करत पवन सम आवत।
मूसरधार नीर बरसावत॥
गरजत डंका मनहु बजावत।
बिजरी की सोइ ध्वजा उड़ावत॥
हरत मेघ जनु कर हिमकर के।
प्रबल भूप पारि पुर जिमि पर के॥

बसंत—जी हां ठीक है,

पानी सें पेट भरे गज की सी घटा घन की यह आवत है।
पंगुल लसैं बगुली मिलसैं कहूँ सूल हिये से उठावत है।
शोर मचाय के दादुर मूढ़ जरे पर लोन लगावत है।
प्रीतम से बिछुड़ीं जो तिन्हें बध को जनु ढोल बजावत हैं॥

विट—जी, इधर भी देखिए,

बगुलन की कलँगी धरे बिजुरी चँवर हिलाय।
होड़ मत्त गज की करत आज अकाश लजाय॥

बसंत—देखिए,

भीगे तमाल के पातन से घन छाये लखौ रवि तेज निवारी।
दीमक के घुस बैठत हैं शरधार परे गज की छवि धारी।
कंचन दीपक सी बिजरी जनु घूमत है पुर ऊँची अटारी।
मेघन देखो जुन्हाई हरी जिमि भीवर की जवरैं मिलि नारी

विट—बसंतसेना [illegible] इधर,

विजुरीडोर कसे तन धारत।
गज सम एक एकहि ललकारत॥
इन्द्रवचन सन घन बरजोरी।
खैंचत धरनि रूप की डोरी॥
और, भैंसन के रंग नील भरे सोइ प्रवल बतासा।
बिजुरीपरन लगाय सिंधु सम हिलत अकासा॥
गंध भरी अरु हरी घास की अँकुरधारी।
छेदत है सोइ धरनि मेघ मनिमय शर मारी॥

वसंत—और इधर,

आउ आउ कहि बारबार तेहि मोर बुलावैं।
उड़ि के बगुली पाँति ताहि निज अँग लगावैं॥
कमल छाँड़ि अकुलाय लखैं तेहि दुखित मराला।
करत नील आकाश उठत हैं घन यहि काला॥

विट—ठीक है, और

मूँदे सरोज सो निश्चल लोचन, राति औ द्यास को भेद मिटाये।
विज्जु लसे झलकैं सो दिसानुरा, चादर सो मोइ मानों छिपाये।
फैले अकाश के मंदिर में बहु, नीरद छत्र समान लगाये
मेघ फुहारनगेह में देखहु, सोवत है जगकाज बिहाये॥

वसंत—ऐसाही है, देखिए

पाजिन सग उपकार सरिस घिनसे अब तारा।
दिशि मलीन कुनतिया सरिस बिछुरत जथ प्यारा॥
तपत देवपतिशस्त्र वज्र की ज्वाल कराला।
टपकत है आकाश मनहुँ गलि गलि यहि काला॥
और, बरसैं गरजैं झुकि उठैं मेघ करैं अँधियार।
नये धनी के सरिस यह लीला करैं अपार॥

विट—हाँ, हाँ,

त्रिलात सम लगै चलत जबहीं बकपाँती।
विज्जु चहुँ ओर जरति सी देह जलाती॥

लरत जगै कर धनुष लिये शरधार गिरावत।
प्रकट वज्र के शब्द होत जनु शोर मचावत॥
चलत पौन घूमत जगत साँप सरिस बादर विषम।
त्र परत मनहु अकुलात यह लगत धूप के धूम सम॥
वसत—पिय के घर मैं जाति हौं मेघ न आवति लाज।
छुवत धारकर मन गरजि डरवावत बेकाज॥
इन्द्र! कबहुँ रही है प्रीति भला मेरी औ तेरी।
जो तू गरजत सिंह सरिस मोहि यहि छन हेरी॥
पिया मिलन मैं जाति मोहि यहि विधि तू टोकत।
जलधारा बरसाय राह मेरी तू रोकत॥
र, सकुचे बोलत झूँठ नहि तुम गौतमतिय काज।
मो मन तेसेंहि समुझि अब मेघ हटावहु आज॥
र हे इन्द्र! बिजुरी कोटि गिराउ कै गरजो बरसौ मेह।
रोकि सके को तियनको चलत पिया के गेह॥
बरसै घन तो बरसि ले पुरुष होत बेपीर।
अबलादुख समुझत न क्यों तुह बिजुरी बीर?
विट—आप इसे क्यों बुरा कह रही है? इसने आप के साथ
कार किया है।
गिरि की चोटी लसत मनहुँ यह सेत ध्वजा सी।
सुरपतिमन्दिर बीच केरि जनु निमल दिया सी॥
ऐरावतउर हिलत हेमडोरी सी यहा।
लाइ देरावत लखो तुमहि प्रियतम को गेहा॥
वसत—क्यों जी! क्या उनका घर यही है?
विट—जी हाँ यही है, और आप तो सब कला जानती हैं,
पको कौन सिखा सकता है, पर स्नेह नहीं मानता, यहाँ जाकर
त मान न कीजिएगा।
रतिरस होत न किये मान अति।
बिना मान लागे फीकी रति॥

करिय मान अरु मान कराइय।
मानिय अरु निज पियहि मनाइय॥

अच्छा तो अब पुकारूँ। अजी कोई है! चारुदत्त जी से कहै
फूले कदंब की गंध समेत बयार बहै उनये घन कारे
ऐसे में आई है प्रीतम के घर भीजत मैन के मानो सहारे
गर्जत मेघ चकोसो लखै तोहि देखन चाह हिये महँ धारे
पाँय भौं पायल कीच भरे तिन्हैं धोवत ठाढी दुआर तुम्हारे

चारु—(सुनकर) मैत्रेय जी! देखो तो कौन है?

मैत्रे—(वसंतसेना के पास जाकर) जय हो आपकी।

वसंत—पालागैं! (विट से) यह छतरीवाली आप के साथ लौट जाय।

विट—(आपही आप) इसी चाल से हमैं लौटाती हैं। (प्रकाश) बहुत अच्छा बाई जी।

मान गर्व छल कपट झूठ माया चतुराई।
जहँ उपजै रति रहै जहाँ प्रियजन सुखदाई॥
नेह उदार स्वभाव खरिख सौदा सुखकेरा।
वेश्यापन के हाट आज कीजिय बहुतेरा॥

(विट बाहर जाता है

वसंत—मैत्रेय जी तुम्हारे जुआरी कहाँ हैं?

मैत्रे—(आपही आप) अरे जुआरी को तो अच्छी पदवी मिली (प्रकाश) जी सूखे पेड़ों के बाग में हैं?

वसंत—आपका सूखे पेड़ों का बाग कहाँ है?

मैत्रे—जहाँ न कोई खाय न पिये।

(वसन्त सेना मुसकाती है)

मैत्रे—तो चलिए, भीतर चलिए।

वसन्त—(अपनी चेरी से) वहाँ जाके क्या कहूँ?

चेरी—जुआरी! कहिये साँझ कैसो बीत रही है?

पनैगा मुझ से?

वसन्त—(आपही आप) इसी से तुम पर मरती हूँ ।

चारु—(प्रगट) हाँ,

जाको धन नसि जाय, ताको मारिबो ही भलो ।
येवस नित पछिताय, रोभत खोजत व्यर्थ सो ॥

और, ज्यों बिनपक्ष विहग, सर जल बिनु, तरु पात बिन ।
ज्यों बिन दाँत भुजङ्ग, तैसहि होत दरिद्र नर ॥

और, बिना पात को रूख ज्यों जैसे कूप कुराम ।
भये दरिद्र पुरुष लगे सूने गेह समान ॥
होत प्रसन्न दरिद्र नर सकै देइ कछु नाहिं ।
पहिले के हितु बधु सब तेहि नित बिसरत जाहिं ॥

मैत्रे—अजी क्यों इतना सोच करते हो । (प्रकाश हँसकर)
[illegible]जी बाई जी मेरी धोती तो दीजिये , ये गहने उसी में बँधे थे ।

वसत—चारुदत्त जी, आप को यह न चाहिये था कि हार
[illegible]न कर हम लोगों का मन परखते ।

चारु—(मुसकरा कर) वसन्तसेना बाई,
(को करिहै परतीत, इत्यादि फिर पढ़ता है)

मैत्रे—अरी ! क्या बाई जी आज यहीं सोवैंगी ?

चेटी—(हँसकर) मैत्रेय जी, बड़े भोले बने जा रहे हो ।

मैत्रे—हम यहाँ सुख से बैठे हैं , हमें यहाँ से भगाने को मेघ
[illegible]ला आ रहा है ।

चारु—ठीक कहते हो ।

कमलरुचि कीचहि ज्यों फोरत ।
त्यों जलधार नीरधर तोरत ॥
चन्द्रविपति लखि नभ दुख पावत ।
तासु आँसु सम महि पर आवत ॥

और निर्मल सज्जनचित्त समाना ।
जगत कठिन ज्यों अर्जुनबाना ॥
नी[illegible] ग घन धार गिरावत ।
[illegible] बरसावत ॥

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) हमने तुमसे पहिले ही क था कि हार थोड़े दाम का था, गहने मँहगे थे, इस से और कु माँगने आई है।

चेरी—राईजी उसे अपना समझ के जुए में हार गई और जिसरे हाथ हारीं वह सभिक था, राजकाज मे न जाने कहाँ चला गया।

मैत्रे—जी यह तो मैं पहले ही कह चुका था।

चेरी—तो जब तक वह ढूँढ़ा जाय तब तक यह गहने लीजिये।

(गहने दिखाती हैं, मैत्रेय बड़े ध्यान से देखता है)

चेरी—मैत्रेय जी ! आप इन्हें बड़े ध्यान से देख रहे हैं क्या आपने इन्हें कभी देखा है।

मैत्रे—हम इन की कारीगरी को देख रहे हैं।

चेरी—अजी, तुम्हारी आँख धोखा खा रही है यह वही गहने हैं।

मैत्रे—(हर्ष से) भाई, वही गहने हैं जो चोर ले गया था

चारु—भाई, मिस तेही अवसर कीन्ह यह थाती फेरन हेत।
सोई लखो यह झूठ रचि कै यह धोखा देत?

मैत्रे—नहीं सच है, हम सौंह से कहते हैं।

चारु—बहुत अच्छा हुआ।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) पूँछे कैसे मिला ?

चारु—हाँ हाँ।

मैत्रे—(चेरी के कान में कहता है)

चेरी—(मैत्रेय के कान में कहती है)

चारु—ऐसे क्यों कहते हो क्या हम लोग बाहरी हैं।

मैत्रे—(चारुदत्त के कान में कहता है)

चारु—क्यों री, वही गहने हैं ?

चेरी—जी हाँ।

चारु—हमारे आगे अच्छी बात कहनेवाला कभी खाली गया। यह अँगूठी लो (हाथ में अँगूठी न देखकर लजाता है)

रद—यह चौधरी का लड़का रोहसेन है।

वसन्त—(दोनों हाथ फैलाकर) आओ बेटा? यहाँ आओ (गोद में बैठा लेती है) अपने बाप ही को पड़े हैं।

रद—स्वभाव भी उन्हीं का सा है। चारुदत्त जी इन्हीं से अपना जी बहलाते हैं।

वसंत—क्यों रोते हैं?

रद—यह पड़ोस के एक भलेमानुस के लड़के की सोने की गाड़ी से खेलते थे; वह अपनी ले गया, यह फिर माँगने लगे, तब मैंने इन्हें मिट्टी की गाड़ी बनादी, अब यह कहते हैं कि हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे हमें वही गाड़ी ला दो।

वसंत—हा! इसे भी कंगालपना साल रहा है! भगवान तुम हम लोगों के भाग पुरइन के पत्ते पर पानी की नाईं क्यों नचा रहे हो (आँसू भर कर) बेटा! रोओ न, सोने की गाड़ी आ जायगी।

लड़का—रदनिका; यह कौन है?

वसंत—तुम्हारे बाप की लौंडी।

रद—भैया, यह भी तुम्हारी मा हैं

लड़का—तू झूठी है। हमारी मा होती तो इतने गहने कहाँ पाती?

वसन्त—(गहने उतार कर रोती हुई) बेटा, अब मैं तुम्हारी मा हो गई। इन्हें ले जाओ सोने की गाड़ी बनवाओ।

लड़का—जाओ हम तुम्हारे गहने नहीं लेते।

वसन्त—(आँसू पोंछ कर) न रोऊँगी, जाओ खेलो (गाड़ी में गहने भर कर) जाओ बेटा सोने की गाड़ी बनवा लेना।

(लड़के के साथ रदनिका बाहर जाती है)

(घर के बाहर एक बहली लिये वर्द्धमानक आता है)

वर्द्ध—रदनिका! रदनिका! वसन्तसेना जी से कहो कि खिड़की के आगे बहली खड़ी है। (फिर रद—

बसन्त—अरी, चारुदत्त जी के घर मेरा रहना किसी के खला तो नहीं ?

चेरी—जी खलैगा।

बसन्त—अरी कब ?

चेरी—जब आप चली जांयगी।

बसन्त—तब तो पहिले मुझी को खलैगा। अरी, माला ले और मेरी बहिन धूता जी के पास ले जा के कह कि मैं चारुदत्त जी की जोडी हूँ वैसी ही आपकी। यह माला आपही के गले में सोहै।

चेरी—चारुदत्त जी जो उन पर रिस करैं ?

बसन्त—जा, न रिस करेंगे।

चेरी—(हार लेकर), बहुत अच्छा।

(बाहर जाकर फिर आती है)

चेरी—बाई जी! धूता जी कहती हैं कि आर्यपुत्र ने आप को दी है, मे कैसे ले सकती हूँ मेरे तो सब गहनो के गहने यही हैं। मुझे और कुछ न चाहिये।

(हाथ से मिट्टी की गाड़ी खींचता हुआ एक लड़का और उसके पीछे रदनिका आतीहै)

रद—आओ, तुम्हारी गाड़ी हम खींचे।

लड़का—हम मिट्टी की गाड़ी न लेंगे, हमें वही सोने की गाड़ी दो।

रद—(सांस लेकर) भैया! हम लोगों के घर में अब सोना कहां ? जब फिर चौधरी साहब की बढ़ती होगी तब फिर सोने की गाड़ी खेलना। चलो तुम्हें बसन्तसेना के पास ले चलें।

(आगे बढ़ कर बसन्तसेना के हाथ जोड़ती है)

बसन्त—आओ जी रदनिका! यह किसका लड़का है कुछ नहीं पहने है तो भी इसका चांद सा मुँह कैसा अच्छा है!

अरे तुम पूरब फाटक पर रहो, तुम पच्छिम के, तुम दक्खिन के, तुम उत्तर के, इस जगह कोट पर चढ़ के चदनक और हम देखैंगे। आओ जी चदनक, इधर आओ।

(घबराया हुआ चदनक आता है)

चन्द—अरे ओ वीरक! विशल्य, भाग, अगद, दृढकाल, दृढशूर! राजभक आओ सवै करौ वेगि में काज।

जेहि सन जाय न और पै महाराज को राज॥

और, बाग भीर मैं राह में हेरो बीच बजार।

जहँ जहँ शंका होय तहँ हेरा जाय न ग्वार॥

का दिखरावत वीर तुम, कहो खोलि किन बात।

तोरि जंजीर अहीर को को लै भागे जात?

पचएँ मगल गुर छठे काके चौथे चन्द?

सूरज केहि के आठवें मरन चहैं मतिमन्द?

नवें सनीचर गुर भए छटे कौन के आज?

हरत अहीर जियत मेरे ज्यों पछी को बाज॥

वीर—चदनक जी!

तेरे सिर की सौंह कोउ ताहि बचाये जात।

सो अहीर भागो निसरि आजहि होत प्रभात॥

बद्द—चल रे बैल चल!

चद—(देख कर) अरे देखो, देखो!

बहली ढकी ओहार मे आवत परे लखाय।

देखो है यह कौन को चढ़ो कौन कहँ जाय॥

वीर—अरे ओ वे बहलीवाले! रोक बहली। बहली किस की है? कौन सवार है? कहाँ जायगी?

बद्द—सरकार! चारुदत्त जी की बहली है, वसन्तसेना जी सवार हैं, पुष्पकरड बाग जा रही हैं।

चन्दनक—तो जाने दो।

वीर—बिना देखे?

चद—हाँ हाँ।

लिखी विधाता माथ जो तेहि को सकै बिगारि।
चलिकै नृपहि मनाइये योग न तेहि सन रारि॥

तो अब मैं अभागा कहाँ जाऊँ? किसी भलेमानुस की खिड़की खुली है।

टूटोघर बेंड़ो बिना फाटे खुले किवार।
यह गृहस्थ है है कोई दबो विपति के भार॥

यहीं घुस के खड़ा हो जाऊँ।

(परदे के पीछे बहली आने का शब्द होता है)

आर्यक—(सुन कर) अरे, यह किसी की बहली आ रही है।

जो बाहर कोउ जात होय नहिं चढ़े दुए नर।
बधू लेन के काज भई ठाढ़ी यहि अवसर॥
भले लोग हैं जात सैरको बाहर कोई।
पठई मेरे काज दैव, सुनो यह होई॥

(बहली लिए वर्द्धमानक आता है)

वर्द्ध—मैं गद्दी ले आया, रदनिका! बाई जी से कह दो कि बहली खड़ी है, आप पुष्पकरंड बाग चलें।

आर्य—(सुनकर) यह तो रंडी की बहली है और बाहर जायगी, इसी पर चढ़ लूँ। (धीरे से चढ़ जाता है)

वर्द्ध—अरे घुँघुरू बजना है तो बाई जी आ गई। बाई जी बैल मरकहा है, पीछे से चढ़िए। (आर्यक पीछे से चढ़ जाता है)

वर्द्ध—पैर उठाने से घुँघुरू बजना बन्द हो गया, बहली भारी हो गई, बाई जी चढ़ चुकीं, तो अब चलूँ। चल रे चल!

(रथ चलाता है)

(वीरक आता है)

वीरक—अरे, ओ जय जयमान, चदनक, मंगल, पुष्पभद्र!

का सुचित बैठे करो भागो जात अहीर।
फारी छाती भूप की तोरी कड़ी जँजीर।

चोर—सुनिये, सुनिये,

तामा भाई ढोल है माय नगारा बाप।
ऐसी अच्छी जाति के हैं सेनापति आप॥

चन्द—(क्रोध से) अच्छा हम चमार हैं देखो भाई।

चोर—अरे बहलीवाले, फेर बहली।

(चन्दनक बहली फेरता है)

(वीरक बहली पर चढ़ना चाहता है, चन्दनक उसका पट्टा पकड़ कर गिरा देता है और लात मारता है)

वीर—(क्रोध से उठकर) अच्छा, तुम ने राजकाज करते ये पट्टा पकड़ कर खींचा और लात मारी। रह तुझे हम कचहरी में चौरङ्ग न करावें तो वीरक नहीं।

चन्द—अबे ! कचहरी जा चाहे दरबार जा, तू कुत्ता क्या कर सकता है ?

वीर—अच्छा। (बाहर जाता है)

चन्द—(चारो ओर देख कर) जावे बहलीवाले जा। जो कोई पूछे तो कह देना कि चन्दनक और वीरक ने देख लिया है। बसन्तसेना बाई। यह चिन्ह भी लेती जाओ (तलवार देता है)

आर्य—(तलवार लेकर हर्ष से)

जग्यो हाथ हथिआर, फरकति है दाहिनी भुजा।
विधि अनुकूल हमार, अब हम बचे सदेह बिन॥

चन्द—बाई जी,

चन्दन को जनि भूलियो बिनय करौं कर जोरि।
कहौं नहीं कछु लोभ से प्रीति हिये महँ तोरि॥

आर्य—धनि गये हित संयोग धम्म चन्दन चन्द समान।
सुधि करि हैं सच कीन्ह जो सिद्ध बचन भगवान॥

चन्द—अभय करैं त्रिपुरारि, ब्रह्मा रवि हरि चन्द तोहि।
राजिय निज रिपु मारि, शुभ निशुम्भहि देवि जिमि॥

(चन्दनक बहली लेकर बाहर जाता है)

वीर—अच्छा तो हम भी देख लें, राजा की आज्ञा है औ राजा ने हमारे भरोसे छोड़ा है।

चन्द—तुम्हारा भरोसा है, हमारा भरोसा नहीं?

वीर—भरोसा सब कुछ है पर राजा की आज्ञा भी तो है।

चन्द—(आपही आप) अहीर का लड़का चारुदत्त जी की बहली पर चढ़ कर भागा जाता है। यह जो कहीं कहेगा तो चारुदत्त जी को दण्ड होगा, तो अब क्या उपाय है। (सोचकर) तो अब कर्नाटकों की सी लड़ाई करें। (प्रकाश) क्यों वीरक, चन्दनक तो देख चुका अब तुम कौन हो देखने वाले?

वीर—तुम कौन हो?

चन्द—तुम अपनी ऊँची जात भूल गये?

वीर—(क्रोध से) क्या है हमारी जात?

चन्द—कौन कहै?

वीर—नहीं, नहीं कह डालो।

चन्द—न कहेंगे।

जानौं कहिहौं नाहि, तेरी जात सकोच बस।
रहै मेरे मन माहिं कैथा तोड़े क्या मिलै?

वीर—कहो कहो।

चन्द—(इशारे से बतलाता है)

वीर—मुँह से कहो।

चन्द— धरे शिला पै हाथ, बैठाये जो जोड़ नित।
जोन्हें राँपी साथ, तुम हूँ सेनापति भये॥

वीर—तुम अपनी ऊँची जात भूल गए?

चन्द—अरे मेरी जात को क्या हुआ है?

वीर—कौन कहै?

चन्द—कहो कहो।

वीर—(इशारे से बतला है कि चन्दनक चमार है)

चन्द—कहो, मुखसे क्यों नहीं कहते?

चारु—मेरी हू सुधि राखियो
आर्य— भूल निजहु कोउ जात ?
चारु—चलत बचावैं सुर तुम्हैं,
आर्य— तुम मोहिं जोन बचाय।
चारु—अपनी भागन से बचे
आर्य— तुमहीं रहे सहाय॥

चारु—तो जब तक राजा बहुत से सिपाही न दौड़ावैं आप कल जाइए।

आर्य—बहुत अच्छा, ईश्वर चाहेगा तो फिर मिलेंगे।

(बहली पर बाहर जाता है)

चारु—पठे कौन अपराध मैं बागो निज रथ माहिं।
उचित हमैं ठहरन इहां अब एकहु छिन नाहिं॥
बेगि पुराने कूप में बेडी देहु बहाय।
भेदिन सो चहुँओर की खबरि लेत नित राय॥

(बाईं आँख का फड़कना जना कर) मैत्रेय! बसन्तसेना के मिलने जी बहुत घबड़ा रहा है।

प्रानप्रिया देखे बिना यदि छन हियो सकात।
फरकति बाईं आंखिहु असगुन बुरो जनात॥

चलो चलें (चल कर) अरे! सामने ही सन्यासी का असगुन देख पड़ा। (सोच कर) अच्छा, यह इधर से आता है, हम उधर से चलें।

(दोनों बाहर जाते हैं)

आठवाँ अंक

(स्थान—पुष्पकरंड बाग में दूसरी जगह)

(हाथ में भीगा कपड़ा लिए एक बौद्धसन्यासी आता है)

बौद्धसन्यासी—(गाता है)

मूढ़ धर्म सचय महँ जागो॥

जासु रूप अनुभाव परे लखि अद्भुत ऐसे।
बेड़ी ताऊ एक पाँयँ डारी किन कैसे ?

आप कौन हैं ?

आर्य—मैं आर्यक अहीर हूँ आपकी शरण आया हूँ।

चारु—जी वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से पकड़श के बाँध रक्खा था ?

आर्य—जी हाँ।

चारु—आये सौंह सँयोग बस तुम चढ़ि मेरे यान।
शरणागत तजिहौं नहीं जायँ मेरे बरु प्रान॥

(आर्यक हर्ष जनाता है)

चारु—वर्द्धमानक ! बेड़ो उतार तो।

वर्द्ध—बहुत अच्छा। (बेड़ी उतार कर) जो, बेड़ी उतार दी।

आर्य—आपने स्नेह की कड़ी बेड़ी पहना दी।

मैत्रेय—यह तो छूटे। अब हम भागें।

चारु—चुप !

आर्य—चारुदत्त जी मैं आपकी गलमली सुन कर बहली पर चढ़ा था।

चारु—आपने बड़ी कृपा की।

आर्य—अब आज्ञा दीजिये तो जाऊँ।

चारु—जाइये।

आर्य—तो उतरता हूँ।

चारु—जी उतरिये न, आप की बेड़ी अभी कटो है इससे आप से भागा न जायगा इधर से बहुत लोग आते जाते हैं बहली में किसी को खटका न होगा बहली ही पर जाइये।

आर्य—जो आप की इच्छा।

चारु—मिजिये सुख सों हितन सों,

आर्य— तुम सम हित को तात

रंग रंग के फूल सजी सोहै यह धरती।
फूल भार सों डार गिरीसी मानहुँ परती॥
तरुफुनगी सों बेल लसौं नीचे को लटकें।
कटहल के फल सरिस तरुन पै बनार मटकें॥

विट—आइये इस पत्थर की चौकी पर बैठें।

संस्था—बैठिये। (विट के साथ बैठ जाता है) अजी, हम आज भी वसंतसेना को सोच रहे हैं। बुरे की बात ऐसी हमारे मन से निकलती नहीं।

विट—(आपही आप) इतना झिड़का गया और अब भी नहीं भूलता।

पाय अनादर तियन सों नीच-काम बढ़ि जात।
सज्जन मन नहिं होय कै होय थोरही गात॥

संस्था—अजी, हमने स्थावरक से कभी कहा था कि बहली ले कर आ, अभी तक नहीं आया। हमें बड़ी भूख लगी है, दुपहर हो गई, पैदल भी नहीं चला जायगा, देखिये, देखिये,

बिगड़े बानर सरिस रवि नभ में लखो न जाय।
जरी जानि महि सुत मरे ज्यों दुरयोधनमाय॥

विट—ठीक है।

मुख से गिरावत घास बैठे छाँह पसु औंघात हैं।
बनहरिन प्यासे नीर तातो पियत नहीं अघात हैं॥
पुरराह में कोऊ चलत नहिं भइ धूप अब ऐसी कड़ी।
तजि जरत धरती छाँह में कहुँ है अवसि बहली खड़ी॥

संस्था—सूरज की किरनें पड़ीं, मेरे सिर पर आय।
पछी चिड़ियाँ पेड़ की डारन रहीं लुकाय॥
घुस बैठे घर माँहि सब देखि कठिन यह घाम।
व्याकुल हाँफत हैं सकल कोउ विधि निवसत याम॥

अजी, अभी तक लौंडा नहीं आया। अच्छा तो जी बहलाने के लिए कुछ गाऊँ (गाता है) सुना आपने, जो मैंने गाया।

विट—क्या कहना है, आप गन्धर्व हैं!

विट—किस से ?

सस्था—अपने मन से।

विट—अच्छा खड़ा है।

सस्था—मेरे मन ! राजा मन ! यह सन्यासी जाय कि ठहरै। (आपही आप) न ठहरै न सांस ले। (प्रकाश) अभी हमने अपने मन से पूँछ लिया, हमारा मन यह कहता है—

विट—क्या कहता है ?

सस्था—न जाइ न ठहरै ; न ऊपर की सांस ले न नीचे का यहीं पड़के मरे।

सन्या—जय बुद्ध जी की ! तुम्हारी सरन !

विट—जाने दीजिये।

सस्था—अच्छा एक काम करके।

विट—कौन काम ?

सस्था—पुखरी का कीचड़ फेंक दे, पानी मैला न होने पावै। पानी बटोर के कीचड़ फेंकदे।

विट—ऐसे भी मूर्ख ससार में होते हैं।

उलटै ही समझैं सदा पाथरखड़ाकार।
मूरख तरु से मांस के बढ़पत धरतीभार॥

सन्या—(हाथ से शाप देता है)

सस्था—क्या कहता है ?

विट—आपके गुन बखानता है।

सस्था—सुन वे सुन ! (सन्यासी बाहर जाता है)

विट—देखिये बाग की शोभा देखिये,

सोहैं तरवर बाग में धरि फलफूल अथोर।
लपटानी गाढ़ी लता जिनके चारहुँ ओर॥
जागत आपति से बचे अच्छे नृप के राज।
सुख भोगत नारिनसहित मानहु पौर समाज॥

संस्था—आप ठीक कहते हैं,

स्था—सरकार बैल मर जायँगे, बहली टूट जायगी, मैं भी मर जाऊँगा।

सस्था—अरे, हम राजा के साले हैं, बैल मरेंगे और ले लेंगे। बहली टूटेगी और बनवा लेंगे, तू मरेगा और रथवान रख लेंगे।

स्था—सब हो जायगा मैं ही न रहूँगा।

सस्था—अबे सब नस जाए। जिधर दीवार गिरी है उधर ही से ले आ।

स्था—टूट री बहली, मेरो रे बैलो, गोसइयाँ भी तुम्हारा है। और बहली आजायगी। अच्छा तो करूँ (घुस कर) अरे हाँ टूटी। सरकार बहली आ गई।

सस्था—अबे, न बैल टूटे न रस्सी मरी न तू मरा ?

स्था—नहीं सरकार।

सस्था—आइए बहली देखें, नहीं आप ही देखें आप बड़े गुरु हैं आप का आदर है, आप आगे चलिये, आप पहिले सवार होइए।

विट—बहुत अच्छा (चढ़ना चाहता है)।

सस्था—ठहरो, ठहरो तुम्हारे बाप की बहली है जो आगे चढ़ोगे। बहली हमारी है, हम पहले चढ़ेंगे।

विट—आप ही ने तो कहा था।

सस्था—जो हम कहें भी तो तुम्हें यह कहना चाहिये कि सरकार आप सवार हों।

विट—आप सवार हों।

सस्था—अच्छा हम सवार होते हैं। बेटे स्थावरक ! बहली घुमाओ।

स्था—(घुमा कर) सरकार सवार हो जायँ।

सस्था—(बहली पर सवार होना चाहता है, देख डरता हुआ उतर कर विट के गले लग

संस्था—गधर्ष न हूँ तो फिर क्या हूँ ?

घव औ हींग समेत, मोथा जीरा सोंठ गुड़।
सेयों तो केहि हेत, होत सुरीले हम नहीं॥

अजी जौंडा अब भी नहीं आया ?

विट—घबराइये न, आता होगा।

(बहली लिये स्थावरक आता है)

स्था—मैं बहुत डरता हूँ, दुपहर हो गई, राजा के साले बहुत खफा होंगे। जल्दी चल! जल्दी!

बसत—हाय, हाय, यह तो वर्द्धमानक की बोली नहीं है। यह क्या बात है? क्या चारुदत्त जी ने बहली के बैलों की रपट बचाने को किसी और की बहली भेज दी है? मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है, कुछ अच्छा नहीं लगता।

संस्था—(रथ की घड़घड़ाहट सुन कर) अजी बहली आ गई।

विट—आपने कैसे जाना?

संस्था—आप देखते नहीं बूढ़े सुअर की नाईं घुरघुरा रही है।

विट—(देख कर) जी हां यह आई।

संस्था—बेटा स्थावरक आ गए!

स्था—जी हां।

संस्था—बहली भी आई?

स्था—जी हां।

संस्था—बैल भी आये?

स्था—जी हां।

संस्था—तुम भी आये?

स्था—हां सरकार हम भी आये।

संस्था—अच्छा बहली भीतर ले आ।

स्था—किधर से?

संस्था—जिधर दीवार गिरी है।

(अलग वसन्तसेना से) वसन्तसेना ! यह तुमने क्या किया ?

पहिले मान जनाय फिर लालच के भाय रस ?

वसंत—न । (सिर हिलाती है)

विट—मिली यापही आय, यहो नीच पातुरपना ॥

हमने तुमसे पहिले ही कहा था ।

नीको लगै कि ना लगै मिलु गनि सबहि समान ॥

वसंत—वहलो के धोखे मे यहाँ आ गई, आप की सरन हूँ ।

विट—डरो नहीं हम देखो इसे धोखा देते हैं (सस्थानक के पास जाता है) अजी, इसमे सचमुच राक्षसी है ।

सस्था—राक्षसी है तो तुम्हें क्यों नहीं मूसा और चोर है तो तुम्हें क्यो नहीं खा गया ।

विट—क्या कीजियेगा जान के ? यहां से नगर तक बागही है पैदलही चले चलैं तो क्या बुरा ।

सस्था—तो क्या होगा ?

विट—थोड़ा सा व्यायाम हो जायगा, बैलों की मेहनत बच जायगी ।

सस्था—अच्छा स्थावरक ! बहलो लेजा । नहीं, नहीं हम देवताओं बाम्हनो के आगे पांव पांव चलैंगे । नहीं, नहीं बहली पर जांयगे जिसमे लाग दूर ही से देख कर कहैं कि राजा के साले आ रहे हैं ।

विट—(आपही आप) इस विष की औषधि बड़ी कठिन है, अच्छा तो यो कहैं (प्रकाश) अजी वसन्तसेना आप से मिलने आई है ।

वसंत—(कान पर हाथ धर के) राम, राम, यह आप क्या कहते हैं ।

सस्था—(हर्ष मे) अजो हम से, ऐसे भले पुरुष वासुदेव से ?

विट—जी हाँ ।

स्था—अबे न करैगा ? (स्थावरक को पीटता है)।
गा—सरकार मारिये चाहै पीटिये, अकाज न करूँगा।

कर्मन रे फल पाय भयों जन्म को दास मैं।
अब सोइ पाप बढाय मोल न लैहौं गति बुरी॥

सन्त—विट, जी तुम्हारी सरन हूँ।
ट—अजी क्षमा कीजिये, वाह स्थावरक वाह !

यद्यपि दरिद्र दास यह अहई।
पुण्य पाप यह मोचत रहई॥
धनी कुलीन यही कर स्वामी।
गनै न कछुक कुमारगगामी॥
ऐसे कर्म आगि किन लागत।
बढ़ै अयोग योग जो त्यागत॥
और का यह विषम दैव मन भावा।
तुमहि स्वामि यदि दास बनावा॥
यह न खात जो धान तुम्हारा।
तुम पर करै न यह अधिकारा॥

संस्था—(आपही आप) यह बुड्ढा तो अधरम से डरता है
र लोडा परलोक से , हम ठहरे राजा के साले, हमें किस का
है ? (प्रकाश) अबे लोंडे जा तू कहीं अलग आड़ में बैठ।

विट—पागल तो नहीं हो गये हो ?

सस्था—यह बुड्ढा तो अधरम को डरता है, अच्छा स्थावरक से कहूँ। बेटे स्थावरक ! हम तुम्हें सोने के कड़े बनवा देंगे।

स्था—मैं पहन लूँगा।

सस्था—हम तुम्हें सोने की चौकी बनवा देंगे।

स्था—मैं उस पर बैठूँगा।

सस्था—जो भोजन खाने मे बचैगा सब तुम्ही को देंगे।

स्था—मैं सब खा जाऊँगा।

सस्था—सब चेलों का चौधरी कर देंगे।

स्था—मै भी हो जाऊँगा।

सस्था—अच्छा तो हमारी बात मानो।

स्था—सरकार सब कुछ करूँगा, अकाज न करूँगा।

सस्था—अकाज की गध भी नहीं है।

स्था—तो कहिये।

सस्था—बसन्तसेना को मार डाल।

स्था—सरकार क्षमा करो, मेरेही गधेपन से यह बेचारी यहां आई है।

सस्था—अरे छौंड़े ! तू भी हमारे कहने में नहीं है !

स्था—सरकार मेरे हाथ पैर के मालिक हैं, पाप पुन्य के नहीं। क्षमा कीजिये, मै बहुत डरता हूँ।

सस्था—अबे, हमारा नौकर होकर किस को डरता है।

स्था—सरकार परलोक को।

सस्था—कौन है परलोक।

स्था—सरकार भले बुरे कामों का फल।

सस्था—भले कामों का फल कैसा होता है ?

स्था—जैसे आप हैं सोने से लसे।

सस्था—और बुरे काम का कैसा होता है ?

स्था—जैसे मैं और का दिया खाता हूँ। मैं अकाज न करूँगा।

धोखा देने के लिए अब यह करूँ (फूल चुन कर वसन्तसेना से) आओ वसन्तसेना !

विट—अरे, अब तो इस का मन कुछ और हो गया। अब ठहरने का कुछ काम नहीं। (बाहर जाता है)

सस्था—मन देहौं करिहौं तोहि प्यार।
छुइ हौं सिर से चरन तुम्हार॥
तऊ मोहि तुम 'जात विहाई।
सेवक सन इतनी निठुराई?

वसन्त—(आपही आप) इसमें क्या कहना है (सिर नीचा कर के)

नीच दुष्ट मे जानति ताही।
क्यों धन लोभ दिखावत माही॥
शुद्धचरित सुन्दर सब अङ्गा।
कमल तजै नहिं कबहुँक भृङ्गा॥
निर्धन हैं कुलशीलयुत सेइय जतन समेत।
जन सुयोग सँग नेह करि पातुर जग जस लेत॥

आम के पास रह कर अब ढांक के पास कैसे रहूँ?

सस्था—हरामजादी! दरिद्र चारुदत्त को आम बताती है और ढांक कहती है! टेसू भी नहीं! तू हम को गाली देने में भी चारुदत्त का नाम नहीं भूलती।

वसन्त—जो मन मे बसा है वह कैसे भूलेगा?

सस्था—आज तुझे और तेरे मन में रहनेवाले दोनो का करता हूँ। दरिद्र चौधरी की चाहनेवाली, खड़ी रह।

वसन्त—कह फिर कह, मै इस मे अपनी बड़ाई समझती हूँ।

सस्था—अब जोडी का बच्चा चारुदत्त तुझे बचाये।

वसन्त—देखते तो बचाते।

सस्था—
कै वह द्रौपदपूत जटाऊ।
...रभासुत राऊ॥

(सोच कर) अच्छा, अब मैं दूसरा उपाय करूँ । इस बुड्ढे ने सिर हिला कर वसन्तसेना से कुछ कहा है अब इस को हटा कर वसन्तसेना को मारूँ । (प्रकाश) अजी आप क्या कहते हैं! हम इतने बड़े कुल के जन्मे ऐसा अकाज करेंगे ! यह तो हमने इस लिये कहा था जिस में यह मान जाय ।

विट— ऊँचे कुल से होय क्या शील बड़ाई देत ।
बाढ़ें उपजत हैं घने कांटे अच्छे खेत ॥

सस्था—अजी, यह तुम्हारे सामने लजाती है, तुम चले जाओ । इस लौंडे को हमने अभी कहा था कि अलग जा, ऐसा न हो भाग जाय, उसे पकड़ लाइये ।

विट—(आपही आप)

नहि पातुर सूरत यह जाती ।
सो कह सोह देखि सकुचाती ॥
करौ एकत दूर में जाई ।
रतिरस बढ़त अकेलहि पाई ॥

(प्रकाश) अब जाता हूँ ।

बसन्त—(उसका आँचल पकड़ कर) मैं तो आपही की सरन

विट—बसन्तसेना ! डरिये नहीं । संस्थानक जी !
हम आपको जाते हैं ।

सस्था । हमारे हाथ में थाती है ।

।

चल कर) अजी, ऐसा न
। इसे मार डाले, जाओ आड़
, आड़ में खड़ा हो जाता है)
इसे मारूँ । ऐसा तो न हो
में होकर स्यार ऐसा

धोखा देने के लिए अब यह करूँ (फूल चुन कर वसन्तसेना से) आओ वसन्तसेना !

विट—अरे, अब तो इस का मन कुछ और हो गया। अब ठहरने का कुछ काम नहीं। (बाहर जाता है)

संस्था—धन देहौं करिहौं तोहि प्यार।
छुइ हौं सिर मे चरन तुम्हार॥
तऊ मोहि तुम जात निहाई।
सेवक सन इतनी निठुराई?

वसन्त—(आपही आप) इसमें क्या कहना है (सिर नीचा कर के)

नीच दुष्ट मे जानति ताही।
क्यों धन लोभ दिखावत माही॥
शुद्धचरित सुन्दर सब अङ्गा।
कमल तजे नहिं कबहुँक भृङ्गा॥

निर्धन हूँ कुलशीलयुत सेइय जतन समेत।
जन सुयोग सँग नेह करि पातुर जग जस लेत॥

और आम के पास रह कर अब ढाँक के पास कैसे रहूँ?

संस्था—हरामजादी! दरिद्र चारुदत्त को आम बताती है और मुझे ढाँक कहती है! टेसू भी नहीं! तू हम को गाली देने में भी चारुदत्त का नाम नहीं भूलती।

वसन्त—जो मन में बसा है वह कैसे भूलेगा?

संस्था—आज तुझे और तेरे मन मे रहनेवाले दोनों को मारता हूँ। दरिद्र चौधरी की चाहनेवाली, खड़ी रह।

वसन्त—कह फिर कह, मैं इस मे अपनी बड़ाई समझती हूँ।

संस्था—अब लोंडी का बच्चा चारुदत्त तुझे बचाये।

वसन्त—देखते तो बचाते।

संस्था— कै वह द्रौपदपूत जटाऊ।
चानक के रभासुत राऊ॥

वुधमार त्रिशंकु यह होई ।
इन्द्र बालिसुत कै है सोई ॥

और यह भी क्या देखेंगे ?

भारत में सीता हनी जैसे चानकराज ।
द्रुपदी हनो जटाउ ज्यों मारौं तोकहँ आज ॥
(मारता है)

वसन्त—हाय ! अम्मा कहाँ हो ! हाय चारुदत्त जी ! मेरे मन की आस मनही मे रही । अब मैं मारी जा रही हूँ । अब जोर से चिल्लाऊँ । नहीं, नहीं वसन्तसेना को चिल्लाना बड़े लाज की बात है । चारुदत्त जी को प्रणाम !

सस्था—अब भी हरामजादी उसी पाजी का नाम लेती है (गला घोंट कर) मर हरामजादी ।

वसन्त—जै चारुदत्त जी की !

सस्था—मर हरामजादी (उसका गला घोंट कर मार डालता है, वसन्तसेना गिर पड़ती है) (फिर हर्ष से)

यह दोप को मटकी सरिस अरु नीचपन की कोठरी ।
तेहि रमन के हित काल के वस इहाँ आई यहि घरी ॥
कैसे बखानो सूरता यह निज प्रचंड भुजान की ।
यह मरिगई बिन सांस भारत माहिं जैसे जानकी ॥
मैं चहत, यह मोहि चहति नहिं, यहि हेत यह मारी गई ।
गर घोटि सूने बाग मे डरधाय फटकारी गई ॥
जोधन अकारथ माय मोरी द्रोपदी को, बापको ।
जो जरयो नाहीं पुत्र के निज प्रबल तेज प्रताप को ॥

यह डोकरा आता होगा (अलग हटकर खड़ा हो जाता है)

(स्थावरक के साथ विट आता है)

विट—स्थावरक को तो बुला लाया, अब सस्थानक हूढू । अरे, राह मे पैरों के चिन्ह से जान पड़ता है कि इस स्त्री को मार डाला । अरे पापी ! तूने ऐसा अकाज

किया ? तुझ पापी के देखने से हम लोगो को भी पाप लगेगा। कदाचित् जिस बात की मुझे शङ्का हो रही है वह झूठी निकले। भगवान सब कुशल करें। (सस्थानक के पास जाकर) हम स्थावरक को बुला लाये।

सस्था—विटजी आप भले आये। बेटे स्थावरक, तुमभी भले आए।

स्था—जी हां।

विट—हमारी थाती दो।

सस्था—कैसी थाती ?

विट—वसन्तसेना।

सस्था—गई।

विट—कहां गई।

सस्था—आप के पीछे ही तो।

विट—(शका से) उधर तो नहीं गई।

सस्था—तुम किधर गये थे।

विट—पूरब।

सस्था—वह तो दक्खिन गई।

विट—हम भी तो दक्खिन गये थे।

सस्था—अजी वह उत्तर गई।

विट—तुम ठीक ठीक नहीं बतलाते, हमारे मन में बड़ी शका होती है।

सस्था—तुम्हारे सिर अपने पैर कीसौंह हमने उसे मार डाला।

विट—(दुख से) क्या सचमुच तुमने उसे मारही डाला ?

सस्था—हमारी बात का विश्वास न हो तो राजा के साले सस्थानक की बहादुरी देख लो।

विट—हाय, हाय ! बड़ा अनर्थ हुआ (बेसुध होकर गिर पड़ता है)।

सस्था—अरे ! विट जी बेसुध गये ! उठिये उठिये।

स्था—हाय मैंने बिना देखे सुने बहली में जाके उन्हें पहले ही मार डाला था।

विट—(साँस लेकर करुणा से)

शील सनेह की नीर भरी सरि सी रति आनही देस सिधारी।
हा! अति सुन्दरि भूपनहूँ को दई जिन शोभा स्वदेह में धारी॥
शील स्वभाव को मानो नदी, हमसे जनकी तुम पालनहारी।
रूप को सौदा भरी उजरी यह हाय! मनोज की आज बजारी।

(आँखों में आँसू भर) के हाय!

हे पापी तैं काह विचारा।
तैं पुरथियहि दोष बिन मारा॥

(आपही आप) अरे ऐसा न हो यह पाजी यह पाप मेरे सिर ठोंके तो अब यहाँ से चल दूँ। (चलना चाहता है, सस्थानक उसे पकड़ लेता है)

विट—दूर हो, हमें मत छुओ हम जाते हैं।

सस्था—अरे, वसन्तसेना को मारके कहाँ भागे जाते हो हम ऐसे अनाथ हो गये।

विट—सिड़ी हुआ है?

सस्था—सौ रुपये तोहि देइहौ अन्न वस्त्र के साथ।
ठोंका यह अपराध तुम और कोऊ के माथ॥

विट—दूर हो, तू अपने ही पास रख।

स्था—राम राम!

सस्था—(हँसता है)

विट—हँसु जनि, छूटै आज से सग हमार तुम्हार।
धिक है ऐसी प्रीति को जेहि थूकै ससार॥
होय न फिरि यहि जनम में कबहुँ तुम्हारो सग।
त्यागत टूटी कमान सम तुमहि होत गुनभग॥

सस्था—अरे आओ आओ इस पुखरी में हम तुम खेलें।

विट—रहे पतित जौलौ नहीं, तौलौं सेवत तोहि।

जान्यो पुरजन पतित सम नीच सरिस नित मोहि ॥
तैं मारी तिय मै रहौ कैसे तेरे सग ।
आधे दृग तोहि तिय लखैं डर वस कांपत अग ॥

करुणा से) वसन्तसेना !

पातुरकुल जनि होय फिरि सुन्दरि जन्म तुम्हार ।
जन्मौ ऊँचे वश मे जाके चरित उदार ॥

सस्था—हमारे बाग मे बसतसेना को मार के कहाँ भागा जाता है ? चल हमारे बहनोई के सामने अपनी जवाबदेही कर ।

विट—दूर हो पाजी (तलवार खींच लेता है) ।

सस्था—(डरता हुआ पिछड़ कर) अरे डरता है तो जा ।

विट—(आपही आप) यहाँ रहना ठीक नहीं , जहाँ आर्यक शर्विलक हैं वहीं मे भी चलूँ ।

(बाहर जाता है)

सस्था—जा भाड में जा । अबे लोंडे हमने कैसा काम किया ?

स्था—सरकार बहुत ही बुरा किया ।

सस्था—अबे क्या कहता है बुरा किया कि अच्छा (अपने हने उतार कर) यह ले और इन्हें पहिन, जब हम इन्हें पहनते तभी तुम भी पहनना ।

स्था—सरकार, यह गहने आपही के अच्छे लगते हैं, मे इन्हें के क्या करूँ ?

सस्था—अच्छा तो जा बहली ले के महल के आगे ठहर, हम अभी आते हैं ।

(बाहर जाता है)

स्था—बहुत अच्छा ।

सस्था—विटराम तो अपना ही जी बचाने को भाग गये तोहि को कोठे पर बद करूँ नहीं तो चाल खुल जायगी । अब चलूँ । नहीं देख लूँ मर गई कि फिर मारूँ । नहीं इस में साँस नहीं । अच्छे तो दुपट्टे से ढांक दूँ । अरे नहीं नहीं

इस पर मेरा नाम छपा है कोई पहचान लेगा। अजी सूखी पत्तियों के ढेर मे छिपा दूँ। (छिपा कर सोच कर) अभी कचहरी जाके मुकदमा कायम करूँ कि गहनों के लिए चौधरी चारुदत्त ने हमारे पुष्पकरड बाग मे जाके वसन्तसेना को मार डाला।

करौ कपट सोइ नास अब चारुदत्त कर होय।
ऐसे अच्छे नगर में पशुहु न मारे कोय॥

तो अब चलूँ (कुछ चलकर देखकर) अरे! जिधर जाते हैं उधर हो यह पाजी योगी गेरुआ वस्त्र लिये आत है। मैंने इसे बाहर निकाल दिया था, ऐसा न हो मुझे देख के यह सब से कह दे कि इसी ने बसतसेना को मारा, तो कैसे भागूँ (डेराकर) जिधर दीवार गिरी है उधर ही फाँ जाऊँ।

लका नगरी को चलत फाँदि हनूमतशैल।
जैसे गयो महेन्द्र कपि भूपताल की गैल॥

(बाहर जाता है

(जल्दी से योगी आता है)

योगी—मै ने अँचला तो फींच लिया अब इसे सुखाऊँ कहा पेड़ की डाल पर डाल दूँ, ऊँ हूँ इस पर बन्दर हैं, फाड़ डालेंगे भुइं मे पसार दूँ, ऊँ हूँ गर्द बहुत है मैला हो जायगा। कह सुखाऊँ? (देखकर) सूखी पत्तियो का ढेर लगा है इसी प पसार दूँ (अँचला पसार देता है) जय बुद्ध की! (बैठ जाता है अच्छा तो अब भजन गाऊँ (गाता है) सच तो यह है जब तक उस उपासिका से उरिन न हो जाऊँ जिसने जुआ क हाथ से दस मोहर देकर मुझे छुड़ाया था तब तक मे धर्म कर्म सब व्यर्थ है, मे तो उस के हाथ बिका सा (देख कर) अरे! यह पत्तियो के नीचे कौन सांस रहा है?

भीजे अँचलानीर से लू के सूखे पात।
पत्ते से पानी परे फूलि फूलि उठि जात॥

(वसंतसेना होश में आकर अपना हाथ निकाल देती है)

योगी—अरे, यह तो सोने के गहने पहने स्त्री का हाथ निकला। अरे, दूसरा भी है। हमने तो यह हाथ कहीं देखा है, वही तो है जिसने हमें अभय किया था, अच्छा अब देखें। (पत्ते हटाकर देखता है) वही उपासिका तो है।

(वसंतसेना पानी माँगती है)

योगी—अरे पानी माँगती है, बावली बड़ी दूर है, क्या करूँ, तो यही अँचला इस के मुँह में निचोड़ दूँ।

(वसंतसेना उठ बैठती है, योगी अपने कपड़े से हवा करता है)

वसन्त—आप कौन हैं।

योगी—उपासिका, भूल गई ? तुमने मुझे दस मोहर देकर मोल लिया था ?

वसन्त—आप को मैंने देखा तो है पर जो आप कहते हैं उस की सुधि नहीं, मेरा चित्त ठिकाने नहीं।

योगी—उपासिका, यह क्या हुआ ?

वसन्त—पातुर की गति।

योगी—उपासिका, उठो इस डाल को पकड़ लो।

(डाल झुका देता है वसन्तसेना उठ खड़ी होती है)

योगी—इसी मठ में मेरी गुरुबहिन रहती है, चलो वहीं चल कर बैठो; जब जी अच्छा हो जाय तो घर चलना, चलो धीरे धीरे चलो (चलता है) अरे हटो भाई हटो, यह अबला स्त्री है और मैं योगी, इसके साथ हूँ तो भी मेरा धर्म शुद्ध है।

संजम सों निज बस किये कर मुख इन्द्रिय जोर।
हाकिम ताको क्या करै किये स्वर्ग सिधि मोर॥

(दोनो बाहर जाते हैं)

नवाँ अंक

[स्थान—कचहरी]

(शोधनक आता है)

शोध—सरकार का हुकुम है कि कचहरी में जल्दी से इजलास ठीक करो, तो कचहरी चलूँ। (चल कर) यही तो है कचहरी, सब ठीक कर दूँ। सब साफ हो गया तो अब जाकर इत्तिला कर दूँ (घूम कर देख कर) अरे यह पाजी राजा का साला यहीं आ रहा है इसके आगे से हट जाऊँ। (अलग खड़ा हो जाता है)

(उजले कपड़े पहने सस्थानक आता है)

सस्था— पानी जल औ सलिल नहाय।
बाग बगीचा मे बिरमाय॥
बैठा नारि तियन के सग।
गन्धर्वन से सोहत अग॥
गाँठि कबहुँ जूरा कबहुँ कबहुँक छूटे केस।
हम राजा के सार का रग रग का भेस॥

बहुत दिनो पर मुझे कमल के डंठे के कीड़े की नाई राह मिली तो अब किस को अपनी चाल से गिराऊँ (सोच कर) हाँ, हाँ, दरिद्री चारुदत्त को गिराना चाहिये। वह ऐसा कगाल है कि उसको जो कलक लगाऊँ सब लग जायगा। अच्छा तो कचहरी चल कर लिखाऊँ कि चारुदत्त ने बसन्तसेना को मार डाला। (चल कर देख कर) यही तो है कचहरी (फिर देख कर) इजलास तो सजा है जब तक हाकिम न आ जायँ तब तक इसी दूब पर बैठा रहूँ (बैठ जाता है)

शोध—(आगे देख कर) सरकार आ रहे हैं मै भी उनके पास चलूँ। (आगे बढ़ता है)

(सेठ और कायथ के बीच में हाकिम आता है)

हाकिम—सेठ जी, लाला जी !

से० का०—जी ।

हाकिम—इन्साफ बिलकुल औरों के वस है और उनके मन का हाल समझना बहुत कठिन है ।

तजि न्याय झूठे दोष औरन नीच लोग लगावहीं ।
पुनि क्रोध वस निज दोष हाकिम साह नहीं बतावहीं ।
दोऊ पक्षसन ह्वै पुए दोष नरेश का लगि जात है ।
यहि कठिन नीतिविचार, निन्दा सुलभ सदा लखात है ॥
तजि न्याय झूठे दोष जन करि कोप कबहुं बतावहीं ।
है नष्ट सज्जन दोष निज व्यवहार में न जनावहीं ॥
दोउ पक्षदोष समेत तिन कहँ पाप नित लगि जात हैं ।
यहि कठिन न्याय विचार निन्दा सुलभ सदा लखात है ॥

क्योंकि, हाकिम को

समुझि जाय छल कपट शास्त्र में राखै बोधा ।
हित अनहित सम गने करे कबहूँ नहिं क्रोधा ॥
बात चीत मे चतुर धर्म में धरै लाभ अति ।
देखतही जनचरित देइ उत्तर सोइ दृढ मति ॥
दुख देइ सठन, पालै निबल निपुन रहै व्यवहार में ।
नृपकोप नसावै जतन सन लखि सोई न्यायविचार में ॥

से० का०—आप के गुनों में भी जो दोष बताये तो चांदनी को अँधेरा कहता है ।

हाकि०—शोधनक, चलो अदालत के कमरे की राह बताओ ।

शो—यही है, आप लोग बिराजें (सब जाकर बैठ जाते हैं)

हा—बाहर जाके पुकारो जिस का कुछ दावा हो तो हाजिर हो ।

शो—बहुत अच्छा (बाहर जाके) जिस जिस का नालिश फिरियाद करनी हो हाजिर हो ।

सस्था—(हर्ष से) हाकिम आ गया (अकड के चल कर) अजी हम बहादुर बासुदेव राजा के साले हैं हमारा मुकद्दमा है

शो—(घबराहट से) अरे बापरे ! पहले इसी का मुकदमा होगा ! अच्छा आप ठहरिये, हम जाके इत्तिला कर दें (हाकिम के पास जाकर) सरकार ! राजा के साले एक मुकदमा लाये हैं।

हा—अरे, पहले राजा के सालेही का मुकदमा है ? सवेरे जो सूर्यग्रहन लगे तो समझा जाता है कि किसी बड़े भारी भलेमानुस का नास होगा । शोधनक ! यह मुकदमा ही बुरा होगा। जाओ बाहर कह दो कि आज तुम्हारा मुकदमा न होगा।

शो—बहुत अच्छा (सस्थानक के पास जाकर) सरकार कहते हैं कि आज मुकदमा न सुना जायगा।

सस्था—(क्रोध से) हमारा मुकदमा क्यों न सुना जायगा ? न सुना जायगा तो हम अपने बहनोई राजा पालक से कहेंगे, अपनी बहिन से कहेंगे, अपनी माँ से कहेंगे और इस हाकिम का छुड़वा देंगे ! दूसरा हाकिम आयेगा। (बाहर जाना चाहता है)

शो—ठहर जाइये, मै हाकिम से कह दूँ (हाकिम के पास जाकर) सरकार, राजा के साले यह कहते हैं कि "न सुना जायगा" इत्यादि।

हा—यह गधा सब कुछ कर सकता है, जाओ कह दो कि आप का मुकदमा सुना जायगा।

शो—(सस्थानक के पास जाकर) आइये आप को बुला रहे हैं।

सस्था—पहले कहा कि न सुना जायगा, अब कहता है कि सुना जायगा, हाकिम भी हम से डरता है, जो हम कहेंगे वह उसे मानना पड़ेगा। अच्छा तो चलें (आगे बढ़ता है) हम लोग अच्छे हैं, आप चाहें अच्छे रहें चाहें न रहें !

हा—(आप ही आप) वाह, नालिश तो करने आये कैसी ... करते हैं। (प्रकाश) आइये बैठिये।

सस्था—अजी, हमारा तो घर है जहाँ हमारा जी चाहैगा वहीं बैठैंगे। (सेठ से) यहाँ बैठैंगे (शोधनक से) नहीं यहाँ बैठेंगे (हाकिम के सिर पर हाथ रख कर) नहीं हम यहां बैठेंगे।

(आसन पर बैठ जाता है)।

हा—आप का मुकद्दमा है ?

सस्था—हैं।

हा—कहिये।

सस्था—कान में कहैंगे ; हम ताड के बराबर बड़े कुल के हैं।

पितु हैं राजा के ससुर हम राजा के सार।
पितु के राजा दमाद हैं नृप बहनोइ हमार॥

हा—हम जानते हैं

ऊँचे कुल से होय क्या शील बड़ाई हेत।
बाढ़ैं फैलत हैं घने कांटे पाछे खेत॥

आप मुकद्दमा कहिये।

सस्था—कहते तो हैं हमारा कुछ कसूर नहीं हमारे बह-नोई ने खुश होकर हवा खाने को सब बागों का बाग पुष्पकरंड बाग हम को दिया था, वहां हम नित सैर करने सुखाने सवारने नहवाने कटवाने जाते हैं, वहां हमने सयोग से देखा कि एक लुगाई मरी पड़ी है।

हा—आप ने जाना कौन थी ?

सस्था—हां हम सोने के गहनों से लसी नगर की शोभा को कैसे न जानैं ? किसी पाजी ने सूने बाग में जाकर धन के कारन गला घोट कर वसन्तसेना को मार डाला, मैंने नहीं (इतना कह कर फुरती से मुँह बन्द कर लेता है)

हा—वाह ! पहरेवालों की बड़ी भूल हुई। (सेठ और कायथ से) यह भी लिख लीजिये "मैंने नहीं" इस पर भी विचार किया जायगा।

कायथ—बहुत अच्छा (लिख कर) लिख लिया।

सस्था—(आप ही आप) अरे बाप रे, अरे जल्दी में मैंने खीर के लड्डू ऐसा अपने को बिगाड़ दिया! अच्छा यह कहूँ (प्रकाश) अजो हाकिम! हम ने कहा कि हमने देखा, क्या गड़बड़ करते हो? (लिखा हुआ पैर के अगूठे से पोंछ देता है)

हा—आप ने कैसे जाना कि धन के लिए मारी गई?

सस्था—अजो, हम ने देखा कि गले में कुछ नहीं था और जहाँ जहाँ गहने पहिने जाते हैं वह सब जगहें खाली थो।

से० का०—ठीक है।

सस्था—(आपी ही आप) बड़ो बात, मेरे जो में जो आ गया।

हा—दो बातों का विचार होना चाहिये।

से० का०—क्या क्या?

हा—एक वाक्य के विचार से दूसरा अर्थ के विचार से वाक्य का विचार मुद्दई मुद्दाले से करना चाहिए, अर्थ हम आप विचार लेंगे।

से० का०—अच्छा तो पहिले वसन्तसेना की माँ को बुलाना चाहिये।

हा—ठीक है, शाधनक, जाओ वसन्तसेना की माँ को बुला लाओ, उससे कह देना कि कुछ घबराने को बात नहीं।

शो—बहुत अच्छा (बाहर जाके पातुर को माँ के साथ आता है) आइये बाई जी।

बुढ़िया—मेरी लड़की अपने यार के घर अपनी जवानी का सुख भोगने गई और यह कहता है चलो तुम्हें हाकिम बुला रहा है, मेरे हाथ पाँव फूले जाते हैं और हिया थरथराता है। चलो भैया हाकिम कहाँ है।

शोध—आइये (दोनों चलते हैं) इजलास यही है, आइये

बुढ़ि—(आगे बढ़ कर) आप लोग सुखी रहें।

हा—आइये, बैठिये। (बुढ़िया बैठ जाती है)

सस्था—(आक्षेप से) आई री कुटनी आई।

हा—आप वसन्तसेना की माँ हैं ?

बुढ़िया—जी हाँ।

हा—वसन्तसेना इस घेर कहाँ गई ?

बुढ़ि—यार के घर गई।

हा—उसके यार का क्या नाम है ?

बुढ़ि—(आपही आप) हाय हाय, कैसी बातें पूछ रहे हैं ? (प्रकाश) ऐसी बातें और कोई पूछे तो पूँछ ले, हाकिम के पूँछने की नहीं है।

हा—लाज का काम नहीं है मुकदमे मे पूँछी जा रही है।

से० का—मुकदमे मे पूँछी जा रही है, कुछ दोष नहीं, कहिये।

बुढ़ि—अरे मुकदमा है तो सुनिये, वह जो सार्थवाह विनयदत्त के पोते, सागर दत्त के लड़के चारुदत्त नाम सेठो के चौक में रहते हैं उन्हीं के घर मेरी बेटी गई है।

सस्था—सुना आपने, लिखिये, चारुदत्त के ऊपर मुकदमा है।

से० का०—चारुदत्त अगर उस के यार हुये तो कौन दोष है ?

हा—तो भी चारुदत्त से पूँछना चाहिये।

से० का०—ठीक है।

हा—धनदत्त ! लिखिये बसन्तसेना चारुदत्त जी के घर गई थी। क्या चारुदत्त जी को भी बुलाना पड़ेगा ? इसमें हम क्या करें मुकदमा बुला रहा है। शोधनक ! जाओ चारुदत्त जी को बड़े आदर से बुला लाओ। घबराने न पावें, कहना कि एक काम ऐसा आ पड़ा है कि हाकिम आपसे कुछ पूँछा चाहते हैं।

शो—बहुत अच्छा।

(बाहर जाकर चारुदत्त के साथ फिर आता है)

चारु—(सोचकर)—

मेरे कुल अरु शील को जानत हैं नरनाह ।
दशा सोचि शका तऊ उपजत है मन मांह ।

(फिर तर्क से आपही आप)

गुनो भेद जो ताहि बचावा ।
जो मेरी बहली चढ़ि आवा ॥
भेदिन भेद भूप सब पावत ।
जो यहि विधि मोहि पकरि बुलावत ॥

फिर विचारने का कौन काम है कचहरी में चलूँ । शोधनक ! कहा हैं हाकिम तुम्हारे ?

शो—आइये ।

चारु—(शङ्का से) यह क्या बात है ?

कौआ रोअत है एक ओरा ।
टेरत राजपुरुष करि सोरा ॥
फरकति बाईं आँखि हमारी ।
हिय डरपत लखि असगुन भारी ॥

शो—आइये, कुछ घबराने की बात नहीं है ।

चारु—(चल कर आगे देख कर)

सूखे तरु पर काग यह बैठो रवि की ओर ।
मो दिशि डारत बामदृग है कछु अनरथ घोर ॥

(फिर आगे देख कर) अरे, यह सांप कहाँ से निकल आया ?

छिटके काजल रङ्ग मेरी दिसि नैन उठावत ।
उजरे चारहु दांत खोलि निज जीभ लपावत ॥
किये रोप वस कुटिल अग निज पेट फुलावत ।
परो गैल में सांप हाय क्यो मो दिसि धावत ॥
भीगी हैं धरती नहीं पद क्यों फिसलत जात ।
फरकति बाईं आँखिहू काँपत बाएँ गात ॥
यह पक्षी एक ओर से रोवत बारहि बार ।
घोर मृत्यु के सगुन ए यहि मे नहीं विचार ॥

भगवान कुशल करे।

शो—आइये इजलास यही है, चले आइये।

चारु—(चारों ओर देख कर) कचहरी की शोभा भी निराली है।

व्याकुल चलत दूत शख औ लहर सम,
चिन्ता में मगन मंत्रि देखो नीर थोर से।
बकबक करैं बक सरिस चतुर लोग,
कायथ निहारैं बैठे भुजग बेपीर से।
एक ओर भेद्री खड़े नाक औ मगर सम,
हाथी घोड़े द्वार डोलैं हिंसक अधीर से।
टेढ़े मेढ़े नीति से बिगारे तट रूग सोहैं,
राजा के विचारभौन नीरधि गभीर से॥

(चल कर सिर में चोट लगने का भाव बताता हुआ) यह दूसरा असगुन हुआ।

सौहैं रोवत काग फरकति बाईं आँखि है।
परो गैल में नाग कुशल करैं भगवान सब॥

अच्छा भीतर चलूँ।

हा—यही चारुदत्त जी हैं,

उठी नाक मुख द्रुग विशाल सुन्दर छवि ऐसे।
चारुदत्त सो करैं पाप कारन बिन कैसे?
हाथी घोड़े गाय बैल नरकी यह रीती।
अच्छे रूपहि सन स्वभाव की होय प्रतीती॥

चारु—हाकिम साहब, प्रणाम!

हा—(घबराहट जनाते हुये) आइये, आइये, शोधनक! आपका आसन दो।

शो—(आसन लाकर) आइये विराजिये।

(चारुदत्त बैठ जाता है)

सस्था—(क्रोध से) आगया वे हत्यारे आगया! क्यों जी यहाँ न्याय और धर्म होता है? इस स्त्री मारने वाले हत्यारे को

आसन देते हो ? दे दो ! (गर्व से) अच्छा कुछ बात नहीं !

हा—चारुदत्त जी ! इस बुढ़िया की लड़की से कुछ मेल व्योहार, यारी है ?

चारु—किस की ?

हाकि—इसकी । (बुढ़िया को दिखाता है)

चारु—(उठ कर) बाई जी प्रणाम !

बुढ़िया—भैया जीते रहो (आपही आप) यही चारुदत्त जी हैं तो बेटी की जवानी सुफल हो गई ।

हा—चारुदत्त जी ! कहिये पातुर से आप की दोस्ती है ?

चारु—(लाज का भाव बताता है)

सस्था—लाज जनाये डर किये सकै नहीं छिपि पाप ।
मारी धन के हेत तिय ताहि छिपावत आप ॥

से० का०—चारुदत्त जी लाज छोड़ दीजिये, मुकदमा हो रहा है।

चारु—(लाज से) हम आप लोगो से क्या कहैं, रंडी से हम से मेल है, इसमें जवानी का दोष है ।

हाकि—बड़ा कठिन व्यवहार है छोड़ि दीजिये लाज ।
सच मे बार न लाइये छल को नाहीं काज ॥

लाज छोड़ दो तुमसे व्यवहार पूँछा जा रहा है ।

चारु—किस के साथ मुकदमा है ?

सस्था—(अकड़ कर) मेरे साथ ।

चारु—तेरे साथ है तो बुरा है ।

सस्था—अरे हत्यारे ! तूने इतने गहनो से लदी बसतसेनिया को मारा अब छल कपट करके छिपा रहा है ।

चारु—क्या बेठिकाने की बातै कह रहा है ।

हा—सच कहिये, पातुर आप की आशना है ?

चारु—जी हाँ ।

हाकि—वसन्तसेना कहाँ है ?

चारु—घर गई ।

से० का०—कैसे गई, कब गई, अकेली गई, या किसी के साथ गई ?

चारु—(आपही आप) क्या कहूँ कि चुपके से चली गई।

से० का०—कहिये, बोलिये।

चारु—घर गई अब और हम क्या कहैं।

संस्था—हमारे पुष्पकरण्ड बाग में ले जाके उसे गला घोटके मार डाला और अब कहते हो कि घर गई।

चारु—अरे क्या बकता है।

ऊँचे उड़त अकाश ज्यों चह्वापपा की छोर।
भीगो नीरदनीर सों जोपे मुख नहिं तोर॥
दोप लगावत झूठही उड़ो जाति है जोति।
कमल सरिस हेमंत के लगु मुखकी गति होति॥

हाकि—(अलग)

तरै सिंधु नाँघिय हवा हिमगिरि लेइ उठाय।
चारुदत्त में दोप कोउ कैसे सकै लगाय।

(प्रकाश) चारुदत्त भी कहीं ऐसा अनर्थ कर सकते हैं ?

संस्था—आप को मुकदमे में किसी का पच्छ न करना चाहिये।

हाकि—अरे मूर्ख!

तू नीच है श्रुति पढ़त तेरी जीभ क्यों नहिं कटि गिरे।
तू सूर दुपहर को लखत नहिं आँखि तेरी क्यों फिरे॥
तू हाथ डारत आगि में क्यों आँच लागि जरे नहीं।
तू चारुदत्तहि दोप देत है भूमि तोहि हरै नहीं॥

चारुदत्त जी ऐसा अकाज कैसे कर सकते हैं!

जिन माँग्यो जो दिन विचार सोइ तुरतहि दीन्हा।
सिंधुहि रतनविहीन निरा जलनिधि जिन कीन्हा॥
गुनगगल की खानि परम सज्जन सो ऐसे।
वैरिहु जोग न काज करै सो धन हित कैसे?

संस्था—अरे क्या न्याय में भी पक्षपात होगा?

बुढ़िया—अरे पापी ! जब रात को थाती के गहने चोरी गये तब तो उन्होने चारों समुद्रों का सार मोतियो का हार भेज दिया अब वह उन्हीं गहनों के लिये ऐसा अकाज करेंगे ? हाय बेटी ! (रोती है)

हाकि—चारुदत्त जी ! वसन्तसेना पांव पांव गई कि बहली पर गई ।

चारु—हमारे सामने नहीं गई, हम नहीं कह सकते कि पांव पांव गई कि बहली पर गई ।

(मुँह बिगाड़े हुए वीरक आता है)

वीर— लात मारि अपमान कीन्ह मोर जो चदनक ।
सोचत भयो बिहान कठिन बैर बाढ़ो हिये ॥
अब कचहरी चलूँ (घुस कर) प्रणाम ।

हाकि—अरे, नगररक्षा का अधिकारी वीरक है ! वीरक क्यो आये ?

वीर—जब आर्यक बंधन तोड़ कर भागा और मैं उसे ढूढ़ने लगा तो मैंने देखा कि एक बंद बहली सड़क पर जाती थी । मैंने चदनक से कहा कि तुम तो देख चुके लाओ मैं भी देख लूँ इस पर उसने मुझे लात मारी सो मैं नालिश करने आया हूँ ।

हाकि—तुम जानते हो किसकी बहली थी ?

वीर—जो बहली हांकता था उसने कहा था कि चारुदत्त जी की बहली है और वसन्तसेना इस पर पुष्पकरड बाग को जाती है ।

सरथा—सुना आप लोगो ने ।

हाकि—यह ससि निर्मलज्योति ग्रसन चहत तेहि राहु अब ।
धारा मैली होति निकट करारा कटि गिरत ॥
वीरक ! अच्छा तुम्हारा न्याय पीछे होगा ,बाहर सवार का घोड़ा है उस पर चढ़ कर अभी पुष्पकरड बाग चले जाओ और देखो वहां कोई स्त्री मरी पड़ी है ?

चोर—बहुत अच्छा (बाहर जाकर फिर लौट आता है) मैं वहां गया था, मैंने वहां देखा कि एक स्त्री की लोथ स्यार और गिद्ध खा रहे हैं।

से० का०—तुमने कैसे जाना कि स्त्री की लोथ है ?

चोर—मै ने देखा कि उसके बाल और हाथ पांव पड़े थे।

हाकि—संसार के व्यवहार बड़े पेंड़े बेंड़े होते हैं।

ज्ञानलीन ज्यों करे विचारा।
त्यों त्यों अरुझत यह व्यवहारा॥
न्यायविचार अहै टेढ़ो अति।
फीच गाय सम होति बुद्धिगति॥

चारु—(आपही आप)

झपटत है जैसे मधुप खिलत फूल को देखि।
परति विपति चहुंओर में अनरथ होत विसेखि॥

हाकि—चारुदत्त जी सच सच कह दो क्या बात है।

चारु—अरे जो परगुन देखि बैरबस क्रोधित पाजी।
परबिनास बिन लखे होय कबहूँ नहिं राजी॥
लहि ऊँचो पद झूँठ सांच जो कछु कहि डारैं।
है सोइ माननजोग, नहीं कोउ ताहि बिचारैं?
इतनों हू नहिं कयहूँ कीनि जो हम निठुराई।
फूल चुनन के हेत लचि कै लता नवाई॥
भँवरपँखरग दीर्घ केश सो पकरि पछारी।
मारी धन के लोभ रोवती तरुनी नारी?

सेठ्या—क्यों जी हाकिम, तुम न्याय करने में भी पक्षपात करते जो इस पापी चारुदत्त को आसन पर बैठाते हो?

हाकि—शोधनक, उठा दो।

(शोधनक चारुदत्त को आसन से उठा देता है)

चारु—विचार कीजिये जो कुछ आप को करना हो विचार लिये।

संस्था—(आप ही आप हर्ष से) मैंने अपना पाप और के माथे ठोका, जहाँ चारुदत्त बैठा था वहीं मैं भी बैठूँ) चारुदत्त के आसन पर बैठ जाता है) चारुदत्त ! देखो, देखो, हमारी ओर देखो, कह दो कि मैंने मारा।

चारु—हाकिम जी, (" जरै जो " इत्यादि फिर पढ़ता है)

हाय मित्र मैत्रेय ! जात मैं व्यर्थहि मारा।
हाय ब्राम्हणी ! विमल विप्रकुल जन्म तुम्हारा॥
रोहसेन ! तुम हाय लख्यो नहि सकट मेरा।
खेलखेलोनन माहि वृथा उपजै सुख तेरा॥

हमने वसन्तसेना के पास उस की खबर लेने को और गाड के लिये जो उसने गहने दिये थे उन्हें फेरने के लिये मैत्रेय को भेजा था न जाने क्या कर रहा है ?

(फेंट मे गहने लिये मैत्रेय आता है)

मैत्रे—चारुदत्त जी ने मुझे वसन्तसेना के पास गहने फेर को भेजा था और कहा था कि वसन्तसेना ने रोहसेन को अपने गहने देके उसकी माँ के पास भेज दिया था सो उसके गहने फेर आओ, हम नहीं ले सकते, तो अब चलूँ वसन्तसेना के पास चलूँ। (घूमके आकाश में) अजी रेभिल जी आप क्यो घबराये हुये हैं ? (सुन कर) क्या कहते हैं चारुदत्त जी आज कचहरी मे बुलाये गये हैं। कोई होगा ऐसा वैसा काम तो पहले कचहरी चलूँ। वसन्तसेना के घर पीछे जाऊँगा (चल कर देख कर यही तो है कचहरी (भीतर जाकर) भला हो आप लोगो का चारुदत्त जी कहाँ हैं।

हाकि—यह क्या खड़े हैं।

मैत्रे—क्यो भाई सब कुशल है ?

चारु—हो जायगी।

मैत्रे—क्यो भाई तुम घबराये से क्यों हो, तुम यहां क्यों बुलाये गये हो ?

चारु—भाई, मैं पापी हत्यार नासि लोक परलोक सब।
नारी रतिअवतार वाको यह कहि डारि है॥

मैत्रे—क्या क्या ?

चारु—(कान में कहता है)

मैत्रे—यह कौन कहता ?

चारु—(सस्थानक को देखा कर) यही विचारे हमारे लिये काल बन कर हम से कहला रहे हैं।

मैत्रे—(अलग चारुदत्त से) तो क्यों नहीं कह देते कि घर गई।

चारु—भाई सब कुछ कहा, कौन सुने ?

मैत्रे—जिन्होंने बाग मन्दिर विहार बाजार तालाब कुओं मन्दिरों से उज्जैनी को सज दिया वह अन्न कगाल हो गये तो धन के लिये ऐसा अकाज करेंगे ? अरे राजा के साले, काणेली के पूत, पापों की गठरी, सोने से लसा सजा बन्दर ! कह मेरे सामने कह। जिन्होंने फूली लता को भी नल से खींच कर फूल नहीं तोड़े कि कहीं ऐसा न हो कि पल्लव टूट जाय, सो वह लोक परलोक दोनो के विरुद्ध ऐसा काम करेंगे ! रह बे हरामजादे ! जैसे तेरा मन कुटिल है वैसी मेरी लाठी भी है, इसी से तेरी खोपड़ी अभी तोड़ता हू।

सस्था—(क्रोध से) देखिये, देखिये, हमारा दावा चारुदत्त पर है, हमारी खोपड़ी तोड़नेवाला यह कौन है ? चुप रह बे पाजी धरप चुप।

मैत्रे—(लाठी उठाकर 'कह कह' फिर पढ़ता है)

सस्था—(क्रोध से उठ कर मैत्रेय को मारता है, मैत्रेय भी उसे मारता है, मैत्रेय की फेंट से गहने गिर पड़ते हैं)

सस्था—(गहने उठाकर फुरती से) देखिये, देखिये, उसी बेचारी के गहने हैं (चारुदत्त से) क्यों, इन्हीं गहनों के लिये उसे मारा था ?

(हाकिम, सेठ और कायथ सिर नीचा कर लेते हैं)

चारु—(अलग मैत्रेय से)

गठरी गहनन की खुली बड़े कुअवसर आय।
गिरी विधाताबाम बस देहै हमें गिराय॥

मैत्रे—अजी जो सच हाल है उसे क्यों नहीं कह देते?

चारु—भाई, खोटी है बुधि नृपति की मरम सकै नहिं जानि।
सोई मारो जात, है कहत दीन जो बानि॥

हाकि—हाय! हाय!!

छीन बृहस्पति से कियो भौम विरोध प्रकास।
धूमकेतु एक और यह प्रगल्यो ताके पास॥

से० का०—(देख कर बसन्तसेना की मा से) बुढ़ी माई यह तो हैं, यह गहनों को देखें यही हैं कि दूसरे।

बुढ़ि—(देख कर) यही हैं। वह नहीं है।

सखा—अरी बूढ़ी कुटनी! आंख मे पहचान लिया मुंह से कहती है नहीं है।

बुढ़िया—दूर हो झूठे।

से० का०—ठीक ठीक कहो, यही गहने हैं कि नहीं।

बुढ़ि—गहने बहुत अच्छे बने हैं इसी से आंख नहीं हटी वह गहने नहीं हैं।

हाकि—बूढ़ी, इन गहनों को पहचानती हो?

बुढ़ि—मैंने कहा तो, पहचानती हूँ, सोनार ने कदाचित वैसे ही और बना दिये हो।

हाकि—देखिये सेठ जी!

भूषन, लखि कछु सिद्धि न होई।
वैसे और बनाये कोई॥
जो भूषन नर चतुर बनावत।
ताहि एक मे एक मिलावत॥

से० का०—यह गहने चारुदत्त जी के होंगे।

से० का०—फिर किस के हैं ?

चार—इसी बुढ़िया की लड़की के हैं।

से० का०— उनसे कैसे अलग हुये।

चारु—कैसे हो हो गये होंगे!

से० का०—चारुदत्त जी सच कहिए। देखिये —

सच से सुलझी होय साँचे पाप न लागई।
सच के अन्तर दाह सच न छिपाइय झूठ से॥

चारु—हम यह नहीं जानते कि गहने यही हैं कि दूसरे, हाँ इतना कह सकते हैं कि हमारे घर से आये हैं।

सस्था—बाग में जाके उसे मार डाला अब बातें बना के छिपाते हो ?

हाकि—चारुदत्त जी सच कहिये।

हम सब चाहत हैं नहा है हैं अनरथ घोर।
परि है तुम्हरी पीठ पर कोड़े परम कठोर॥

चारु—धार्मिक कुल में ऊपजे हम सन होय न पाप।
जो समुझो पापी हमें मरत न रोकिय आप॥

(आपही आप) अब बसतसेना नहीं है तो हमीं जी के क्या करें (प्रकाश) अजी बात यह है—

मैं पापी हत्यार नासि लोक परलोक निज।
मारो रतिअवतार, बाकी यह कहि डारि हैं॥

सस्था—मारी, तुम भी अपने मुँह से कहो कि मारी।

चारु—तुम तो कह चुके।

सस्था—सुनिये साहब सुनिये, इस ने मारा है, अब तो संशय न रह गया, अब इस दरिद्री चारुदत्त को देहदंड देना चाहिये।

हाकि—शोधनक! राजा के साले ठीक कहते हैं। सिपाहियो! पकड़ो इसे।

(सिपाही चारुदत्त को पकड़ लेता है)

बुढ़िया—साहब मेरी भी सुनिये, 'जब चोर ले गया' इत्यादि फिर पढ़ती है, और मरी तो मेरी लड़की मरी, मेरा लड़का क्यों मारा जाय? अब मुकद्दमा तो मुद्दई मुद्दाले मे होता है, मै मुद्दई हूँ मेरा दावा नहीं है, इन्हें छोड दीजिये।

सस्था—दूर हो कुटनी तू कौन है?

हाकि—बुड्ढी तुम जाओ, सिपाहियो इसे निकालदो।

बुढ़ि—('हाय बेटा हाय बेटा' कहती हुई और रोती हुई बाहर जाती है।)

सस्था—मैने तो अपना काम कर लिया अब जाता हूँ।

(बाहर जाता है)

हाकि—चारुदत्त जी! निर्णय करना हमारा काम है आगे महाराज मालिक हैं। तो भी शोधनक! महाराज से बिनती करो, मनुजी का वचन है—

अपराधी बाम्हन नहीं कबहुँ बधन के जोग।
दीजे देशनिकारि तेहि भये सिद्ध अभियोग॥

शोध—बहुत अच्छा (बाहर जाकर फिर आकर आँखों में आँसू भर कर) सरकार! मै महाराज के पास गया था, महाराज यह कहते हैं कि जिन गहनों के कारन बसंतसेना मारी गई वेही गले मे बाँध सारे नगर मे फिराकर ढँढोरा बजाते हुए दक्खिन के मसान मे लेजाकर चारुदत्त को सूली चढ़ा दो। जो कोई ऐसा काम करेगा उसे ऐसा ही दण्ड दिया जायगा।

चारु—राजा पालक ने कैसा बेसमझे बूझे हुकुम दिया है।

परत आगि अन्याय के मन्त्रिन के बस भूप।
नहि अचरज जो परत है घोर नरक के कूप॥
ए कुसगुन है राजके उजरे काग समान।
सहसन बिन अपराध के हरे जात जब प्रान॥

भाई मैत्रेय! जाओ हमारी ओर से मा को प्रणाम कहना, —के रोहसेन को तुम्हीं को सोंपता हूँ।

मैत्रे—जड़ ही कट गई तो पेड़ कैसे रह सकता है?

चारु—अजी ऐसा न कहो।

गये लोक परलोक जो पुत्रहि तिनकी देह।
मेरे पीछे कीजिये रोहसेन से नेह॥

मैत्रे—भाई, हम तुम्हारे होके तुम्हारे विना कैसे जियेंगे?

चारु—अब हम छोड़ो जो कुछ तुम्हें करना हो रोहसेन के साथ करो।

मैत्रे—अच्छा।

हाकि—शोधनक इस ब्राह्मन को हटा दो।

(शोधनक मैत्रेय को बाहर निकाल देता है)

हाकि—काहे है चांडालों को हुकुम दो।

(चारुदत्त और शोधनक को छोड़ और सब बाहर जाते हैं)

शोध—आइये चारुदत्त जी!

चारु—(करुणा से) मैत्रेय! ('क्या आज' इत्यादि फिर पढ़ता है) (आकाश में)

नीर तराजू आगि विषहु से करो विचारा।
छाय सिद्ध अभियोग हरहु तो जीव हमारा॥
ब्राम्हन को तू वधत बात सुनि जो रिपुकेरी।
पुत्र पौत्र के संग कुगति ह्वै है तो तेरी॥

चलो हम चलते हैं (सब बाहर जाते हैं)

दसवाँ अंक

[स्थान—उज्जैन में बड़ी सड़क]

(दो चांडालों के साथ चारुदत्त आता है)

दोनो चांडाल—तुम का करो विचार, वधुआ पकरन मे चतुर।
काटें सिर एक वार, शूल चढ़ायें तुरत हम॥

अरे हटो भाई! यह चारुदत्त जी हैं।

छम जल्लाद दोऊ दिसि धारे।
कनयर की माला गल डारे॥
छिन छिन होत छीन यह कैसे।
घटत तेल के दीपक जैसे॥

चारु—(दुख से) परी धूरि सब देह पुनि भीगी दृग के नीर।
पहिरे फूल मसान के चारिहु ओर शरीर॥
बलि समान मोहि जानि कै रक्तगंध तन लाग।
कांव कांव करि चलत हैं मोहि भखन को काग॥

दोनों चांडा—हटो जी हटो! क्या देखते हो,

सज्जनतरु यह कटत है कालकठोर कुठार।
सुजनपछि सेवत रहे जाकी सुन्दर डार॥

चल रे चारुदत्त, चल!

चारु—भाग्य में क्या क्या बदा है कौन कह सकता है? देखो मेरी क्या दशा हो रही है।

देवीचंदन को दिये अंग अंग थाप लगाय।
आटा डारो देह पर पशु माहि दीन बनाय॥

(आगे देख कर) देखो लोगों का चित्त भी कैसा बदलता है? (करुणा से)—

जे जन मेरी दशा निहारत। ते निज मनुज जाति धिकारत॥
मोहि न सकै कोऊ जतन बचाई। कहैं स्वर्गसुख भोगहु जाई॥

दोनों चांडा—हटो जी हटो! क्या देखते हो?

तारासक्रम, सुजनवध गैया जयै बियाय।
इन्द्र विसर्जन जनि लखौ भागौ आंगि बचाय॥

पहिला चांडा—अरे अहित, देख, देख,

लिए जात हम बधन हित नगरी को सिरताज।
रोय उठ्यो आकाश, कै परत मेघ बिन गाज॥

दूसरा चांडा—अरे!

रोवत नहिं आकाश यह विन घन विज्जु न होइ।
पुरतिय चढ़ी अटान पै देखि उठीं ये रोइ॥
जिये जात हम बधन हित यहि सब लोग निहारि।
घूरि दबावत राह को नैनन से जल डारि॥

चारु—(देख कर करुणा से)

वैठीं हाट अटन पुरनारी।
खिरकिन सन मुखकमल निसारी॥
चारुदत्त हा! हाय! पुकारत।
आँसुधार नयनन से डारत॥

दोनों चांडा—चल वे चारुदत्त चल! ढढोरा पीटने की जगह यही है। बजा वे ढोल, सुनो जी सुनो "यह सार्थवाह विनयदत्त का नाती सागरदत्त का लड़का चारुदत्त है। इस पापी ने थोड़े से धन के कारन पुष्पकरउद्यान में ले जाके वसंतसेना पातुर को गला घोंट कर मार डाला, यह धन के साथ पकड़ा गया अपने मुँह से भी कहता है, इस पर महाराज ने हमें इसके मारने का हुकुम दिया है; और जो कोई ऐसा लोक परलोक के विरुद्ध काम करेगा उसे भी राजा पालक ऐसा ही दंड देंगे"

चारु—(उदास होकर आपही आप)

कीन्ह यज्ञ अनेक बाग मन्दिर बनवाये।
जिन पुरखन वैठाय विप्र श्रुति पाठ कराये॥
मेरे मारन हित लगाय अपजस को टीका।
नाम लेत चंडाल हाय यहि छन तिनहीं का॥

(सोच कर दोनों कानों पर हाथ रखकर) हाय प्यारी वसन्तसेना!

ओंठ प्रवाल समान चन्द किरन से दांत जहं।
सो मुखरस करि पान अपजस विष कैसे पिया॥

दोनों चांडा—हटो जी हटो।

सज्जन आरतिहरन जो गुनमनि को भंडार।
आज निसारो जात सो किये अशुभ सिंगार॥

और, सुख संपति में करत हैं सोच फिकिर सब कोय।
विपति परे पै हित करत जन जग दुर्लभ होय॥

चारु—(चारो ओर देख कर)

आंचल सन ढांके मुख फेरे।
जात दूर साथी अब मेरे॥
सुख के दिन औरहु हित होई।
विपत परे पै हित नहि कोई॥

दोनो चांडा—मैंने सब को हटा दिया अब इसे ले चलो।

चारु—('मैत्रेय क्या' इत्यादि फिर पढ़ता है)

(परदे के पीछे हाय चाचा! हाय चारुदत्त जी!

चारु—(सुन कर करुणा से) अरे चौधरी! हम तुमसे एक मागन माँगते हैं।

चांडा—अरे हमसे मांगन मांगते हो?

चारु—राम! राम! बेसमझे बूझे काम करनेवाला पालक चांडाल है, तुम तो उससे अच्छे हो। हम चाहते हैं मरने से पहिले बेटे का मुँह देख लें।

दोनो चांडा—बहुत अच्छा।

(परदे के पीछे) हाय चाचा, हाय बाबू।

चारु—(सुन कर करुणा से) चौधरी, हम अपने बेटे का मुँह देखना चाहते हैं, वह आ रहा है।

चांडा—हटो जी हटो, चारुदत्त अपने बेटे का मुँह देख लें। (नेपथ्य की ओर देख कर) इधर आइये, इधर आ बे लड़के, इधर। (बाहर जाते हैं)

[दूसरा स्थान—सड़क पर दूसरी जगह]

(रोहसेन के साथ मैत्रेय आता है)

मैत्रे—चलो भैया चलो, तुम्हारे बाप को मारने के लिये आ-ये हैं।

रोह—हाय ! चाचाजी हाय !!
मैत्रे—हाय ! भाई तुम्हें कहाँ ढूँढूँ ।

(चंडालों के साथ चरुदत्त आता है)

चारु—(बेटे और मैत्रेय को देख कर) हाय बेटे, मैत्रेय, (करुणा से) हाय ! यह लड़का

रहि हौ नित परलोक में पानी काज अधीर ।
दैइ न सकिहैं पेट भरि नान्हीं अँजुरिन नीर ॥

अब मेरे पास क्या है जो बेटे को दूँ (जनेऊ देख कर) यही है ।

मोती को नहिं सोन को सोहै बाम्हनगात ।
देवपितर को भाग नित जेहि सन दीन्हो जात ॥

(जनेऊ उतारता है)

पहिला चांडा—अरे चारुदत्त, इधर आ ।

दूसरा चांडा—क्यों रे, चारुदत्त जी को तुकार के पुकारता है ? देख—

सपनि में कै बिपति में बिना रोक दिन राति ।
हथिनी मतवारी सरिस नित होतव्यता जाति ॥
और, मिटो नाम पदवी, मिटी कै नहिं पूजनजोग ।
राहु ग्रसे जो चंद्र को कै नहिं पूजत लोग ॥

रोह—अरे चांडालो ! चाचा को कहाँ लिये जाते हो ?

चारु— भैया, गर सोहत कनयर की माला ।
कंध शूल, हिय शोक विशाला ॥
मख महँ छाग सरिस बलि काजू ।
जाहुँ मसान मरन हित आजू ॥

चांडा—अरे !

जन्मे से चंडालकुल कोउ चंडाल न होय ।
सज्जन नासन चहत जो चांडाल नर सोय ॥

रोह—अरे तुम चाचा को क्यों मारते हो ?

और, सुख सपति मे करत है सोच फिकिर सब कोय।
विपति परे पै हित करत जन जग दुर्लभ होय॥

चार—(चारो ओर देख कर)

आँचल सन ढाँके मुख फेरे।
जात दूर साथी अब मेरे॥
सुख के दिन औरहु हित होई।
बिपत परे पै हित नहि कोई॥

दोनो चांडा—मैने सब को हटा दिया अब इसे ले चलो।

चारु—('मैत्रेय क्या' इत्यादि फिर पढ़ता है)

(परदे के पीछे हाय चाचा! हाय चारुदत्त जी!

चारु—(सुन कर करुणा से) अरे चौधरी! हम तुमसे एक माँगन माँगते हैं।

चांडा—अरे हमसे माँगन माँगते हो?

चारु—राम! राम! बेसमझे बूझे काम करनेवाला पालक चांडाल है, तुम तो उससे अच्छे हो। हम चाहते हैं मरने से पहिले बेटे का मुँह देख लें।

दोनो चांडा—बहुत अच्छा।

(परदे के पीछे) हाय चाचा, हाय बाबू।

चारु—(सुन कर करुणा से) चौधरी, हम अपने बेटे का मुँह देखना चाहते हैं, वह आ रहा है।

चांडा—हटो जा हटो, चारुदत्त अपने बेटे का मुँह देख लें। (नेपथ्य की ओर देख कर) इधर आइये, इधर आ वे लड़के, इधर। (बाहर जाते हैं)

[दूसरा स्थान—सड़क पर दूसरी जगह]

(रोहसेन के साथ मैत्रेय आता है)

मैत्रे—चलो भैया चलो, तुम्हारे बाप को मारने के लिये जा रहे हैं।

(तीसरा स्थान—सरकारी सड़क पर तीसरी जगह)

(कोठे के ऊपर स्थावरक बँधा खड़ा है)

स्था—(ढढोरा सुन कर घबराहट से) हाय ! हाय ! चारुदत्त बेकसूर मारे जाते हैं। मुझे मेरे मालिक ने यहाँ बांध रक्खा है तो यहीं से चिल्लाऊँ। सुनो भाई सुनो ! मुझ पापी ने बहली के हेर फेर से वसन्तसेना का पुष्पकरण्ड बाग में पहुँचाया, वहाँ मेरे मालिक ने उससे कहा मेरे पास रह। जब उसने न माना तो गला घोट कर मार डाला। इस भलेमानुस ने नहीं। अरे मैं दूर हूँ इस से मेरी बात कोई नहीं सुनता। अब क्या करूँ, कूद पडूँ। (सोच कर) मेरे कूदने से चारुदत्त जी बच जायँगे। अच्छा तो इसी टूटी खिड़की की राह से कूद पडूँ, मेरे मरने से क्या बिगड़ेगा—यह बिचारे न रहेंगे तो भले मानुसों को सरन कौन देगा ? मर भी जाऊँगा तो मुझे स्वर्ग धरा है (कूद कर) अरे, मैं तो बच गया ! बेड़ी टूट गई ! चलूँ जहाँ चांडाल ढढोरा पीट रहे हैं, वहीं चलूँ (देख कर) अरे ओ चांडालो ! हटो भाई हटो।

(दोनों चांडालों के साथ चारुदत्त आता है)

दोनों चांडाल—अरे कौन हटो हटो करता है ?

स्था—("सुनो भाई सुनो" इत्यादि फिर पढ़ता है)

चारु—अरे, फँसा काल के फंद में सूरी में ज्यों धान।
मोहि बचावन काज को आवत मेघ समान॥

आप लोगों ने सुना है।

केवल डरत कलंक को मरत डरत नहिं कोइ।
अजस मिटे का मरनहूँ पुनर्जन्म सम होइ॥

और, नीच मूढ़ अति बेरुख दूषनभरो शरीर।
मारो मेरे सुजसपै विष बुझाय यह तीर॥

दोनों चांडा—स्थावरक ! सच कहते

चांडा—भैया हम क्या करैं, राजा का हुकुम ऐसा ही है।

रोह—तो मुझे मार डालो, चाचा को छोड दो।

चांडा—भैया तुम लाख बरस जियो, तुम बहुत अच्छे लड़के हो।

चारु—(आँसू भरकर लड़के को गले लगाकर)

धनी दरिद्र सम कुटुम के एकै नेह अधार।
हियो करै शीतल सदा चदन की अनुहार॥

('गर सोहत कनइर' इत्यादि फिर पढ़ता है, देखकर आपही आप 'आँचल सन' इत्यादि फिर पढ़ता है)।

मैत्रे—भाई चांडालो ! चारुदत्त जी को छोड दो, हमैं मार डालो।

चारु—राम ! राम ! यह क्या कहते हो (देख कर आपही आप) "सुख यह" इत्यादि फिर पढ़ता है। (प्रकाश "बैठो" इत्यादि फिर पढ़ता है)

पहिला चांडा—हटो ! क्या देखते हैं।

लाग्यो अपजस घोर छोडी आसा जियन की।
टूटत टूटत डोर सोने के कलसे सरिस॥

चारु—(करुणा से "ओठ प्रवाल समान" इत्यादि फिर पढ़ता है)

दूसरा चांडा—अरे फिर पुकार दे, ढढोरा पीट दे।

पहिला चांडा—फिर ढढोरा पीट कर "सुनो जी" इत्यादि पढ़ता है।

चारु—
भई हाय मेरी ऐसी गति।
प्राणदण्ड में नहिं कछु क्षति॥
यहै होत सुनि दुःख अपारा।
कहैं जो नीच ताहि मैं मारा॥

(सब बाहर जाते हैं)

स्था—अरे नीच ! वसन्तसेना को मारके तेरा पेट नहीं भरा, अब याचकों के कल्पवृक्ष चारुदत्त को भी मारना चाहता है ?

सस्था—अबे हीरा मोती के डिब्बे जियेपेसी लुगाई हम मारेंगे?

सब—तुम्हींने तो मारा, चारुदत्तजी ने नहीं मारा।

सस्था—कौन कहता है।

सब—यही भलामानुस।

सस्था—(अलग डरता हुआ) अरे बापरे बाप ! मैंने क्या किया ! लौंडे को अच्छी तरह न बांधा था। मेरे पाप का साखी यही है। (सोचकर) अच्छा तो अब यह करूँ (प्रकाश) अजी यह लौंडा झूठ बोलता है, इसने हमारा सोना चुराया था सो हमने इसे मारा पीटा था, यह तो हमारा बैरी है, इसका कहना कैसे सच हो सका है ? (आड़ करके स्थावरक को सोने का कड़ा देता है) बेटे स्थावरक ! यह लो और कह दो कि चारुदत्त ने मारा है।

स्था—(कड़ा लेकर) देखो लोगो, यह हमें कड़े का लालच दे रहा है।

सस्था—(स्थावरक के हाथ से कड़ा छीन कर) देखिये, यही कड़ा है जिसके कारन हमने इसे बांधा था। अजी चांडालो ! हमने इसे गहनों के घर में रक्खा था, इसने सोना चुराया, हमने इसे मारा पीटा था, तुम्हें परतीत न हो तो इसकी पीठ देख लो।

दोनों चांडाल—हां जी, आप सच कहते हैं, बिगड़ा हुआ नौकर क्या क्या नहीं कहता।

स्था—हा ! दासपना कैसा बुरा होता है कि सच बोलो तो भी कोई परतीत नहीं करता। (करुणा से) चारुदत्त जी ! मेरा क्या बस है ! (पांव पड़ता है)।

चारु—उठहु तात कारन बिना मे तुम बंधु हमार।
करी दया तुम सुजन पै बूड़त दुख अपार॥

स्था—सच नहीं तो क्या ? इसी डर से तो मुझे कोठे ऊपर बेडी पहना के बन्द किया कि किसी से कह न दूँ।

(सस्थानक आता है)

सस्था—(हर्ष से)।

मछरी साग पात तरकारी।
खट्टी कडुई माँस बघारी॥
चीनी के संग भात बनाया।
हम सुख सन अपने घर खाया॥

(सुन कर) फूटे काँसे के बरतन की नाई चाँडालों की बोली सुन पड़ती है और ढढोरा पिट रहा है, इससे जान पड़ता है कि चारुदत्त को सूली देने के लिये ला रहे हैं, तो मैं भी चल कर देखूँ। वैरी के मरने से मन को बड़ी खुशी होती है। हम ने सुना है कि जो लोग वैरी का मारा जाना देखते हैं उन्हें दूसरे जन्म में आँख का रोग नहीं होता। हम बहुत दिन से ताक में रहे, विषम गाँठ में जैसे कीडा घुस जाता वैसे ही अवसर पाकर चारुदत्त के नास का उपाय किया, अब अपनी अटारी पर चढ़ कर अपना करतब देखें। (चढ़ कर देख कर, अरे) दरिद्र चारुदत्त को मारने के लिये जाते हैं तो इतनी भीड इकट्ठी हो रही है, जब कहीं हम ऐसे बहादुर को मारने ले जाँयगे तो कैसा होगा ? (देख कर) अरे, नये बैल की नाई रँग के इसे दक्खिन ले जा रहे हैं, हमारे महल के नीचे क्यों ढढोरा बन्द किया गया। (देख कर) अरे स्थावरक लोंडा कहाँ गया ? ऐसा न हो कहीं जाके भाँडा फोड दे। देखें कहाँ गया (उतर कर चाँडालों के पास जाता है)।

स्था—देखिये यह आगये।

दोनों चाँडाल—देहु किवाडे चुप रहौ भागो छाँडो गैल।
दुष्टपने की सींग को धावत है यह बैल॥

सस्था—हटो जो हटो। (आगे बढ़ कर) बेटे स्थावरक आओ चलो।

(रोहसेन मैत्रेय के साथ जाता है)

दोनों चांडा—यह तीसरी जगह है, यहाँ ढँढोरा पीटो (फिर ढँढोरा पीट कर सुनो जो इत्यादि कहते हैं)

सस्था—लोगों के विश्वास नहीं होता (प्रकाश) अबे चारुदत्त ! लोगों के परतीत नहीं होती, तू अपने मुँह से कह कि मैंने वसन्तसेना को मारा।

चारु—(चुप रहता है)

सस्था—अजी चारुदत्त नहीं बोलता तो तुम लाठी से मार के इससे कहलाओ।

चांडा—(लाठी उठा के) चारुदत्त, कहो।

चारु—(करुणा से) डूबों महा विपति के सागर।
नहिं मोहि दुःख नहीं मोहि कछु डर॥
कहन परत प्यारिहि मैं मारा।
यहै जरावत हृदय हमारा॥

सस्था—अरे चारुदत्त ! "लोगों को परतीत नहीं" (इत्यादि फिर पढ़ता है)

चारु—अरे, नगर के लोगो "मैं पापी हत्यार" (इत्यादि फिर पढ़ता है)

सस्था—मारी।

चारु—हाँ।

पहिला चांडा—अजी आज तुम्हारी वारी है।

दूसरा चांडा—न, तुम्हारी है।

पहिला चांडा—अच्छा लिख के देखो (बैठकर लिखते हैं)

पहिला चांडा—अच्छा, जो मेरी वारी है तो ठहर जाओ।

दूसरा चांडा—क्यों ?

पहिला चांडा—बाप जब मरते थे तो कहने लगे 'बेटा वीरक जब तुम्हारी वारी मारने की हो तो उतावली न करना'।

दूसरा चांडा—क्यों ?

मोहि बचावन हेत तुम कीन्हें बहुत उपाय।
सब कुछ कीन्हो तात तुम दैव न मानत, हाय!

दोनो चांडा—सरकार! इस लौंडे को मार कर निकाल दीजिये।

सस्था—निकल वे (बाहर निकाल देता है) अरे चांडालो! क्यों देर कर रहे हो, मारो इसे।

चांडा—तुम्हें बडी उतावली है तो, तुम्हीं मारो।

रोह—अरे चांडालो! चाचा को छोड दो, मुझे मारो।

सस्था—अजी इस को भी मारो, इस के लडके को भी मारो।

चारु—यह गधा सब कुछ कर सकता है, बेटा तुम अपनी माँ के पास चले जाओ।

रोह—मैं जाके क्या करूँ?

चारु—चले जाव तीरथ अबे लै माता निज साथ।
नहि अचरज पितुदोष जो बीते तुम्हरे माथ॥

भाई मैत्रेय, इसे ले जाओ।

मैत्रे—भाई, मैं तुम्हारे बिना जी सकता हूँ?

चारु—भाई, तुम को क्या हुआ, तुम क्यों मरना चाहते हो?

मैत्रे—(आपही आप) यह ठीक नहीं। बिना चारुदत्त के मैं जी नहीं सकता। लडका ब्राह्मणी को सौंप कर मैं भी इनके साथ चलूँ। (प्रकाश) भाई, इन्हें पहुँचा आऊँ (चारुदत्त के पाँव पडता है, लडका भी रोता हुआ चारुदत्त के पाँव पड़ता है)

संस्था—अजी, हम तुमसे कहते हैं कि इसको भी मारो, इसके लडके को भी मारो।

(चारुदत्त डर का भाव बताता है)

दोनों चांडा—राजा का यह हुकुम नहीं है कि बेटे को भी जा वे लड़के भाग जा।

चाँडा—चारुदत्त जी, आकाश में सूर्य चन्द्रमा रहते हैं उन पर भी विपत पड़ती है, हम लोगों को कोन गिनतो है, कार्ड उठ के गिरता है कोई गिर के उठता हैं।

गिरत उठत फिरि फिरि जियत फिरि फिरि मिलत शरीर।
यह विचारि घबराहु जनि धरो समुझि मन धीर॥

दूसरा चाँडाल—यह ढढोरा पीटने का चौथा जगह है पीट दो (ढँढोरा पीट कर "सुनो जी सुनो" इत्यादि फिर पढ़ता है।)

चारु—हाय प्यारी वसन्तसेना, "ओठ प्रवाल समान" (इत्यादि फिर कहता है) (चांडालों के साथ बाहर जाता है)

[चौथा स्थान—सड़क पर एक दूसरी जगह]

[वसंतसेना के साथ सवाहक योगी आता है]

योगी—मेरे इस जोगी के भेस ने भी बड़ा उपकार किया जो हारी मौंदी वसंतसेना को चगी करके फिर घर पहुँचाता हूँ। उपासिका! तुम को कहाँ पहुँचा दूँ।

वसंत—मुझे चारुदत्त जी के घर ले चलिये, जैसे कोकावेली को चन्द्रमा के देखने से सुख होता है वैसे ही उन्हें देख कर मैं भी सुखी हो जाऊँगी।

योगी—(आपही आप) किस राह चलूँ? (सोच कर) बड़ी सड़क से चलूँ। (प्रकाश) उपासिका आइये, बडी सड़क से चलें, और आज यहाँ इतनी भीड भाड़ हल्ला गुल्ला क्यों हो रहा है?

वसंत—(आगे देख कर) अरे, आज यहाँ इतनी भीड़ क्यों है? जोगी जी पूँछिये तो आज क्या है जो सारी उज्जैनी उमड़ी सी पड़ती है?

पहिला चाँडा—कदाचित कोई भलामानुस रुपया दे के छुड़ा ले, राजा के लडका हो जाय और सब बँधुए छोड़ दिये जाँय, हाथी बिगडे और उसके गड़बड़ में बँधुआ छूट जाय, राज पलट जाय और बँधुए छोड़ दिये जाँय।

दूसरा चाँडा—अरे, क्या कहता है राज पलट जाय!

पहिला चाँडा—अच्छा जाओ, फिर लिख के देखें आज किसकी बारी है।

सस्था—अजी, चारुदत्त के जल्दी मारो। (इतना कह कर स्थावरक के साथ एकान्त में खड़ा हो जाता है)।

दोनो चाँडा—चारुदत्त जी, मालिक का हुकुम है हमारा दोष नहीं है, तुम्हें जिसकी सुध करना हो उसकी सुध करलो।

चारु—अपने खोटे भाग बली रिपु की कुटिलाई।
लाग्यो तदपि कलङ्क होय जो धर्म सहाई॥
तो सुरपति के धाम औरहूँ कहुँ जहँ होई।
मेटैं शीलस्वभाव दोष मेरे सब सोई॥

अब हम कहाँ जायँ?

पहिला चाँडा—(आगे दिखला कर) यह देखो आगे दक्खिन का मसान है जिसको देखकर बँधुओं के प्रान निकल जाते हैं। देखो, देखो,

खींचें आधी देह स्यार नीचे से ठाढे।
आधी सूली रहै टँगी खीसैं सब काढे॥

चारु—हाय मैं अभागा क्या करूँ? (ऐसा कह कर बैठ जाता है)

सस्था—अभी न जाऊँ, चारुदत्त को मरता देख लूँ तब जाऊँ। (घूम के देख कर) अरे यह तो बैठ गया।

पहिला चाँडा—चारुदत्त डर गये।

चारु—(उठ कर) रे मूर्ख! "केवल डरत कलङ्क से" (दे फिर पढ़ता है।)

(दोनों चारुदत्त को सूली पर चढ़ाया चाहते हैं)

योगी और वसंत—अरे अरे क्या करते हो? क्या करते हो!

वसंत—अरे मैंही अभागिनी हूं जिसके कारण यह मारे जा रहे हैं।

चांडाल—(देख कर)

झपटी आयनि कौन यह पीठ केश छिटकाय।
हां हां हां हां करति है दूनों हाथ उठाय॥

वसंत—चारुदत्त जी यह क्या है? (दौड़ कर गिर पड़ती है)

योगी—चारुदत्त जी यह क्या हुआ? पैरों पर गिर पड़ता है।

पहिला चांडाल—(डरता हुआ हट कर) वसंतसेना! बहुत हुआ कि हमने बेकसूर को नहीं मारा।

(उठ कर) चारुदत्त जीते हैं?

चांडाल—अजी, चारुदत्त जी सौ बरस जियें।

(बड़े हर्ष से) मैं जी गई।

महाराज यज्ञशाला में बैठे हैं, उनसे जाकर कहना

(चारुदत्त दो चाण्डालों के साथ आता है)

दोनों चांडा—यह सब से पिछली जगह है, यहाँ पर ढढोरा पीट दो (ढढोरा पीट कर) चारुदत्त जी सम्हल आइये, डरिये नहीं अभी एक छिन में आप का काम निपटा जाता है।

चारु—हे भगवान!

योगी—(सुन कर घबराहट से) उपासिका! चारुदत्त जी को मारने को लिये जा रहे हैं और कहते हैं कि इसने वसन्तसेना को मार डाला है।

वसंत—हाय! हाय! मुझ अभागिनी के कारन चारुदत्त जी मारे जा रहे हैं, जोगी जी जल्दी चलिये।

योगी—आइये, आइये चारुदत्त जी मरने न पावें, हम लोग उनके पास पहुँच जायँ। अरे हटो भाई!

वसंत—हटो जी हटो!

दोनों चांडा—चारुदत्त जी! मालिक का हुकुम है जिसकी सुध करना हो उसकी सुध कर लीजिए।

चारु—"हम क्या कहें" (इत्यादि फिर पढ़ता है)

पहिला चांडा—(तलवार खींच कर) चारुदत्त जी! सीधे खड़े हो जाइये, एक ही वार मे हम आपको स्वर्ग पहुँचाते हैं। (चारुदत्त सीधा खड़ा हो जाता है, चांडाल उसे मारना चाहता है पर उसके हाथ से तलवार गिर पड़ती है)

चांडा—अरे, बल करि मूठी से पकरि खैंची गही सम्हारि।
विजुरीसी क्यों गिरिपरी धरती पर तरवारि॥

मुझे तो अब जान पड़ता है कि चारुदत्त जी बच गये। भगवती सह्यवासिनी देवी, चारुदत्त जी छूट जायँ तो चाडाल कुल पर बडी कृपा हो।

दूसरा चांडा—हम लोगों को जो कुछ हुकुम है सो करो।

पहिला चांडा—अच्छा।

वसत—(कान पर हाथ धर कर) राम, राम ! उसी राजा के साले ने मुझे मारा था।

चारु—(योगी को देखकर) यह कौन है ?

वसत—उस पापी ने तो अपनी जान मुझे मार ही डाला था इस साधू ने फिर जिला लिया।

चारु—भाई, तुम कौन हो जो विना कारन हमारे सहाय हुये ?

योगी—आप मुझे नहीं पहचानते ? मे आपके हाथ पाँव दवाने वाला सवाहक हूँ। मुझे जुआरियो ने पकडा था, सो आपका सेवक जानके बाई जी ने अपना गहना देकर मुझे छुड़ाया ! जुए से ऐसा जी घवराया कि मे वुद्धमत का जोगी हो गया। यह वाई जी वहली के हेर फेर से पुष्पकरडवाग पहुँची, वहां उस पापी ने इनसे कहा कि तू मुझे नहीं चाहती और इनको गला घोट कर मार डाला। मैंने देखा—

(परदे के पीछे हुल्लड होता है)

जय जय श्रीवृषकेतु दत्तमख जिन सहारा।
जय षटवदन कुमार क्रौंच जिन शैल विदारा॥
जय आर्यक नृप जीति जीन निज शत्रुहि मारी।
ध्वजा सरिस कैलास लसत धरती जिन सारी॥

(घबराया हुआ शर्विलक आता है)

शर्वि—पालक नृपहि नरक पहुँचाई।
आर्यक कहँ नरनाह बनाई॥
सिर धरि तासु वचन अब आवों।
चारुदत्त की विपति छुड़ावों॥
विना मन्त्रि बल नृप सो नासी।
समाधान मन करि पुरवासी॥
लीन्ह राज निज प्रबल प्रभाऊ।
बजाको राज मनहुँ सुरराऊ॥

घबराहट में देख परी है।
वही अहै कै नहीं मरी है॥
मोहि जिआवन सोइ, कै उतरी यह स्वर्ग से?
कै दूसरि यह कोइ, रूप वही का है धरे?

वसत—(उठ कर पैरों पर पड़ कर) चारुदत्त जी! मैं वही पापिनी हूँ जिसके कारन तुम्हारी यह दशा हुई।

(परदे के पीछे)

बड़ा अचरज है कि वसन्तसेना जीती है!

चारु—(सुनकर उठकर आँखें बन्द किये हुये हर्ष से) प्यारी, तुम वसन्तसेना हो?

वसंत—मै ही अभागिनी हूँ।

चारु—(देखकर हर्ष से) यह वसतसेना है? (आनन्द से)

आँसुन नहवावत उरज मोहि मृत्युवस देखि।
आई ज्यावन मोहि जनु विद्या कोउ विसेखि॥

प्यारी वसतसेना,

तव हित चलन चहन मम प्राना।
तुमही आय कीन्ह मम त्राना॥
प्रियसगमकर यही प्रभावा।
मरि कै कौन जीव फिर आवा॥

प्यारी, देखो—

लाल वस्त्र वधचीन्ह प फूलन की यह माल।
लागैं वरसिंगार से दुलहिन आवन काल॥
चलत वजावत ढोल जो मोहि मारन के हेत।
तिनकी व्याहमृदग ज्यों बोल सुनाई देत॥

वसत—यह आपने क्या किया?

चारु—प्यारी, मैंने तुमको मारा।

पहिले को वैरी वली यहि छन औसर पाय।
आप नरक मे जाय किय मेरे नासउपाय॥

की पहिली बात तो माननी ही चाहिये (घूम कर) अरे, उस पाजी राजा के साले को पकड तो लाओ।

(परदे के पीछे)—बहुत अच्छा, सरकार।

शर्वि—राजा आर्यक ने कहा है कि हम को यह राज आप ही की कृपा से मिला है, इसे आपही समालें।

चारु—हमारी कृपा इसमें क्या थी?

(परदे के पीछे)

अरे राजा के साले! चल अपने दुष्टपने का फल ले।

(सस्थानक का हाथ पीछे बधा हुआ है और उसे दो सिपाही लाते हैं)

सस्था—अरे दैया रे दैया!

दूर हेराना गदहा जैसे।
कुकुर सम जाये मोहि तैसे॥

(चारों ओर देख कर) मैं तो चारों ओर से घेर गया अब मेरा बचानेवाला कोई नहीं है—कहां जाऊं क्या करूं? (सोच कर) विपति में पड़े को सरन देनेवाला यही है (आगे बढ़ कर) चारुदत्त जी दुहाई है! मुझे बचाइये!

(परदे के पीछे)

चारुदत्त जी, इसे हमारे हवाले कीजिये हम इसको मारें।

सस्था—(चारुदत्त से) दुहाई है! तुम्हारी सरन हूं!

चारु—(दया से) शरणागत को अभय।

शर्वि—(घबडा कर) अजी, इसको चारुदत्त के आगे से ले जाओ। कहिये इस पाजी को क्या किया जाय?

भले बाँधि अँग अँग खिंचवाइय?
कै यहि कुत्तन से नुचवाइय?
कै यहि की बोटी कटवाइय?
कै यहि सूली पर चढ़वाइय?

(आगे यह देख कर) जहाँ यह भीड़ लगी है वहीं होंगे। राजा आर्यक का पहिला काम चारुदत्त जी को बचाना है, उसे भगवान सुफल करें। अच्छा (जल्दी चल कर) हटो रे हटो (देखकर) चारुदत्त जी जीते हैं ? बसन्तसेना भी यहीं है। हमारे स्वामी के मनोरथ पूरे हो गये।

बूडन चाहत महा दुःख के सिंधु अपारा।
प्रिया शील की खानि ताहि निज गुनन उबारा॥
धन्य भाग हम सबन केर देखे यहि अवसर।
महापुरुष, यह ग्रहन छुटे चाँदनि सँग हिमकर॥

मैंने तो बड़ा पाप किया है, इनके सामने कैसे जाऊँ ? अजी सिधाई सब जगह अच्छी लगती है। (आगे बढ़ कर हाथ जोड़ कर) चारुदत्त जी !

चारु—आप कौन हैं ?

शर्वि—तुम्हरे घर जिन सेंध करि थाती लई चुराय।
दोषी सो माँगत अभय सरन तुम्हारी आय॥

चारु—आप ऐसा न कहिए, आपने तो बड़ी कृपा की थी। (गले लगाता है)

शर्वि—आर्यचरित आर्यक नृपति राखत कुल औ मान।
मार्यो पालक भूप को मख महँ पशू समान॥

चारु—क्या ?

शर्वि—गयो तुम्हारी सरन जो तुम्हरे रथ चढ़ि जोइ।
मारो पालक भूप को मख महँ पशु सम सोइ॥

चारु—शर्विलक, वही जिन्हें राजा पालक ने घोसीपुरे से बुलाकर बिना कारन कैद किया था और तुमने छुड़ाया था ?

शर्वि—जी हाँ।

चारु—बहुत अच्छा हुआ।

शर्वि—आपके मित्र राजा आर्यक ने राज पाते ही वेणा के किनारे कुशावती का राज आपको दिया। आपको मित्र

चारुदत्त जी की वह धूताबाई आंचल पकड़े हुए लड़के
क कर जलती आग में कूदना चाहती हैं, लोग उन्हें रो रो
ना चाहते हैं पर नहीं मानती ।
वि—(सुन कर नेपथ्य की ओर देख कर) अरे क्या है
है।

(चंदनक आता है)

द—देखिये, महाराज के महल के दक्खिन कैसी भीड़
हो रही है । चारुदत्त जी की वह धूतावाई (इत्यादि
कहता है) मैंने तो उनसे कहा कि साहस न कीजिये,
दत्त जी अभी जीते हैं, पर दुख से व्याकुल कौन सुने,
माने ?

चारु—(घबरा कर) हाय प्रिया, तुम ने मेरे जीते जी क्या
किया (ऊपर देख कर साँस लेकर)

चरित तुम्हारे जाग रहे न जो यदि लोक के।
करन स्वर्गसुखभोग पति बिन सती उचित नहीं ॥

(बेसुध हो जाता है)

शर्वि—ओह ! सब बिगड़ा जाता है !
जल्दी को तो काज, आप यहाँ बेसुध परे।
सब बिगरत है आज, कियो जतन जेहि हेत यह ॥

वसंत—उठिये, चल कर बाईजी को जिलाइये, आप के
ने से अनर्थ हो जायगा ।

चारु—(जाग कर जल्दी से उठ कर) हा प्रिया ! कहाँ हो
?

चंद—इधर आइये, इधर ।

शर्वि—बाईजी आग के पास पहुँच गई हैं, जल्दी चलिये ।

चारु—(जल्दी जल्दी चलता है)

(सब बाहर -

चारु—जो हम कहेंगे वह कीजियेगा ?

शर्वि—इसमें भी कुछ सदेह है ?

सस्था—चारुदत्त जी दुहाई है ! तुम्हारी सरन हूँ ! तुम अपनी ओर देखो। मैं ऐसा काम फिर न करूँगा।

(परदे के पीछे) मारो इस पापी को, क्यों छोड़ते हो ?

(वसन्तसेना चारुदत्त के गले से माला उतार कर सस्थानक को पहिना देती है)

सस्था—अरी ! अब हम तुझे न मारेंगे, हमे बचा ले।

शर्वि—अजी हटाओ इस को। चारुदत्त जी, कहिये इस पापी का क्या किया जाय ?

चारु—जो हम कहेंगे वही कीजियेगा।

शर्वि—इस में भी कुछ सदेह है ?

चारु—सच ?

शर्वि—सच।

चारु—तो इसे जल्दी—

शर्वि—मार डालें ?

चारु—नहीं छोड़ दीजिये।

शर्वि—क्यों ?

चारु—वैरी जब अपराध करे और पैरों पर पड़ कर सरन माँगे तो उस पर हथियार नहीं उठाना चाहिये।

शर्वि—तो इसे कुत्तों से नुचवा डालें ?

चारु—नहीं, उपकार से मारना चाहिये।

शर्वि—कहिये क्या करें ?

चारु—छोड़ दीजिये।

शर्वि—छोड़ दो।

सस्था—अरे बच गये ! बच गये !

(सिपाहियों के साथ बाहर जाता है)

(परदे के पीछे हुलड़ होता है)

गोद। लटकती है = कसकती है। [१४१] नए = झुके। उनतें = उनसे बढ़कर या बड़ा। [१४२] बकसियो = क्षमा करना। बौर = मंजरी। [१४३] तन = ओर। पो = तो। परमारथ = परमार्थ रूपी औषध। राजरोग = प्रबल रोग। [१४४] अनुदिन = प्रतिदिन। [१४६] दै गए = दिए हुए गए। [१४७] बापुरे = बेचारे। छार = धूल। [१४८] आयसु = आदेश, आज्ञा। वारि० = निछावर करके। नव० = नौ टुकड़े करके, टुकड़े टुकड़े करके। [१४९] तर = नीचे। मचु = सुख। [१५१] सुखेत = रणक्षेत्र। नारि = पानी, चमक। [१५२] बाय = वात विकार। पय-निधि = समुद्र। [१५३] अरे = अड़ गए हैं। राचे = अनुरक्त। वक्र० = अत्यंत टेढ़े। सीतळ = जिनके सचार (ध्यान) से हृदय ठंडे हो गए हैं। अमिय० = अब ये अमृत से विष में जा पड़े। [१५४] बढ़वत० = उसकी ओर काला सर्प क्यों बढ़ाते हो। हारे = विवश होने पर। अछत = रहते। [१५५] फुलेल = सुगंधित तेल। म यैं = गाँठें। आघोरी = भारी। ताटक = कान का गहना। जोति = शोभा। सार = घनसार, कपूर, असवास = (आश्वास) सुगंधित साँस। आक = (अर्क) मदार। [१५६] अधिकारे = अधिक। सारे = तत्व। खारे = कड़ुए। [१५७] बायस = कौआ। अँचयो = पिया। बजी० = एक ही ढंग के बाजे बजे, सब एक ही रंगत के हैं। ताँति = तन्त्री, बाजा। [१५९] कनियाँ = गोद। [१६०] कलेवर = शरीर। लौरी = लेप। पिछौरी = दुपट्टा। [१६१] ज्यों भुवग० = जैसे उस सर्प की फूँक जिसकी मणि छीन ली गई हो। दवा = भीषण ज्वाला। [१६२] अंबर = अच्छे वस्त्र। गुरु० = जो योग के हमारे गुरु हैं वे कृष्ण के हाथ की माला हैं। उसके इशारे पर नाचनेवाले हैं। [१६३] दाम = रस्सी। पानि = हाथ। चोरी० = चोरी न खोलूँगी। आनि = आकर। हठिहौ = न देने का हठ न करूँगी। जावक = महावर। वट-तर = बरगद सँकेत = संकेतस्थल। चढ़ाय = बैठाकर। [१६७] निरतेिं० = अश्रु की अपार धारा बहने लगी। प्रेम० = प्रेम की व्यथा

बुझी। अतर-गति=हृदय के भीतर। सुचित=स्वस्थ होकर। कमल=योगियों के षट्चक्र जो कमल के रूप में माने जाते हैं। [१६९] लाइ=मन लगाकर। सुमति मति=अच्छी बुद्धि। पै=निश्चय। [१७०] गात=गाते हुए। सुनात=सुनाते थे। परसात=छाई है। [१७२] सिंगी=सींग का बाजा। [१७३] लहनौ=प्राप्य। बर=दूल्हा, पति, प्रिय। सँघाती=साथी, सखा। [१७५] सरै=(सूर्य के रथ की ओर) जाता है, उसे प्राप्त करता है। [१७६] बल्लभी=प्रेमिका। मधुर=जो मीठी बोली बोलनेवाले हैं। वृक=भेड़िया। बच्छ=वत्स, बछड़े। असन=भोजन। बसन=वस्त्र। सत=शत, सैकड़ों। [१७७] बरस=बर्षा करता है। कर०=हाथ में कड़ा और दर्पण लेकर (कड़ा ढीला पड़ गया है। दर्पण में मुख विवर्ण दिखाई पड़ता है)। एतौ मान=इतना अधिक कष्ट सहने पर भी। [१७८] सहियो=सहना। मकरध्वज=काम। बहियो=अश्रु-प्रवाह के कारण। [१७९] पय=जल। पय मों=पानी से भी आग लग रही है। हा हरि०='हा हरि, हा हरि' जो कहती हैं उसी मन्त्र के पढ़ने के कारण इस आग में जलकर भस्म नहीं होतीं। [१८०] गहरु=देर, विलम्ब। [१८१] कहा बनै है=क्या बात बन लेंगे। अब हम०=हम चुपचाप वहां पत्र लिख देंगी कि ये तो गोकुल के अहीर हैं, वह पत्र उन्हें मिलेगा भी नहीं। [१८२] रूपहरी=हरि का रूप, सारूप्य मुक्ति। सुक=शुकदेव। स्यामा=युवती स्त्री। [१८४] भनै=कहे। कह०=क्यों उन कानों में ककड़ी की चोट करते हो। रग सुनै=प्रश्न करने पर भी। [१८६] बकी=पूतना। दोषन=दोष अर्थात् विषमय हो जाने से। तृनाव्रत=तृणावर्त। केसी=केशी नाम का दैत्य। [१८७] घाए=घात, चोट। कहि०=कहना पड़ा। [१८८] रसाल=रसमय, कर्णसुखद। तरनि०=सिर का तिलक सूर्य की भांति दाहक है। भुवाल=भूपाल, राजा। [१८९] बहियी=निर्वाह करना। [१९०] दासनिदासि=दासानुदासी, दासों की दासी। [१९१] चेत०=बेसुध अवस्था। रेती=बालू का मैदान। [१९३] अव-

गाहि० = दुःख में डूबती है। [१६४] स्याम० = श्रीकृष्ण की पीड़ा में पगा हुआ। ऋपि = शुद्ध, ऋजु, सीधा। [१६६] पुलिन = तट। [१६७] विरह बीज = विरहमय। सलिल० = अधर-माधुरी के जल में मिलाकर। बल न० = औषध का कोई बल नहीं लगता, औषध काम नहीं करती। मरै = हो। [१६८] हे = थे। दाम = रस्सा से। पति = प्रतिष्ठा। रसनिधि = आनन्द के सागर। [१६६] नह नग = प्रेमरूपी रत्न। सुझानी = समझ में आई। [२००] हमरे० = हमारे गुण गाँठ में क्यों नहीं बाँधे, हमारे गुणों का विचार क्यों नहीं किया। [२०१] देह० = शरीर दुःख की सीमा नहीं पाता, दुःखों का अन्त नहीं मिलता। [२०२] आन = शपथ। आमिष = मांस। हित = प्रिय। किंगरी = छोटी सारंगी, चिकारा। सुर = ध्वनि। लग = तक। ब्रजभान = ब्रज-भानु, श्रीकृष्ण। [२०४] चाली = छेड़ी। साली = धँसी। ब्रजबाली = ब्रज की बालाएँ। [२०५] इतने = इतने पक्षी। प्रतिपारे = पाला-पोसा। बिहारे = नष्ट कर दिए। कीर = नासिका। कपोत = गर्दन। कोकिला = वाणी। खजन = आँखें। [२०६] सत्वर = शीघ्र। मधु-रिपु = श्रीकृष्ण। जगी = जागरण। क्वाथ = काढ़ा। मूरि = जड़ी। सुख = अनुकूल, लाभदायक। [२०८] निवर्ति = दूर करके। [२१०] अराध = आराधना करे। वरीम = वय। पुरवौ = पूर्ण कर दो। [२११] रीते = रिक्त, खाली। कारन = कालों की। फेरनि = लपेट, पहनावा। घेरनि = एकत्र करना, घराना। कार = कड़ा। [२१३] घोप = ग्वालों का गाँव। सपुट = घ'द। दिनमनि = सूर्य। [२१४] रथ पलान्यो = रथ पर चढ़ कर गए। [२१७] पाहन = (पाषाण) पत्थर, कठिन। [२१८] जावदेक = यावन्मात्र, सबको। [२१९] चित० = मन। [२२०] विधि० = ब्रह्मारूपी कुम्हार। घट = घड़ा, शरीर। दरसन० = देखने की आशा ही घड़ों का फेरा जाना है। कर० = श्रीकृष्ण के काम आए, उनके लिए शकुन-सूचक हुए। [२२१] काती = कत्ता, छुरा। मशाली =

स्वाती [२२२] निसि लौं = रात भर। सीति = शीत, ठंडा। पुरवा = पूर्व से आनेवाली वायु, पुरवैया। गए० = उसने हमारे शरीर सरलता से जीत लिए हैं। [२२३] चौरासी = अनेक प्रकार की। हरि = हरकर। [२२४] लोकडर० = हमारा प्रेम प्रकट करने से श्रीकृष्ण को लोकापवाद का भय है (लोग कहेंगे कि ये गँवारों के साथ रहते थे)। [२२५] सो कुल = वह वंश (यादवों का), जिससे जन्म लेने पर बिछुड़ गए थे। गर्ग० = गर्ग ने कहा था कि श्रीकृष्ण मथुरा और फिर द्वारका में जा बसेंगे। जो कुल = वह सब। ज्ञाति = जाति। [२२६] अनहद = अनाहत नाद। कुम्हाड = कुम्हड़ा। अजा = बकरी। अधाना = तृप्त होना। [२२७] न परानी = नहीं हटा। चलमति = चंचल बुद्धिवाले। घेरि० = छेंकते फिरते हैं। [२२८] पनि = प्रतिज्ञा दुरहु = हटो। उसीठ = दूत। मति फेरी = बुद्धि का फेर। कै सँग = मिलकर, जुड़कर। श्री निकेत० = शोभा के घर। पानि = हाथ में। विषान = सींग। [२३०] नवतन = (नूतन) नए ढंग से। राचे = अनुरक्त हुए। रन-ढोर = श्रीकृष्ण [२३१] कारे = काले; मालिन, कपटी [२३४] ऐन = घर। [२३५] कोय० = कौन सी थी। राजपथ = राजमार्ग (भक्ति का चौड़ा मार्ग)। बरक = बलकानेवाला। कुबील = कबड़ खाबड़, ऊँचा-नीचा। अज = बकरा। बदन = मुख। [२३६] कुमोदिनि = कुई। जलजात = कमल। घनसार = कपूर। जीरन = जीर्ण, पुराना [२३७] बिदमान = विद्यमान, उपस्थित। [२३८] स्यदन = रथ। बाय० = वात व्याधि से पगली सी होकर। [२३९] कुम्भ = घड़ा। मलचरी० = बेचारी मछली। [२४१] धूरि = मिट्टी, व्यर्थ [२४२] कुबजा० = कूबरी के प्रेम में मतवाले। लेस = थोड़ा भी। हरिलट = मोरपंख। स्यामा = षोडशवर्षीया युवती स्त्री, राधिका। कछु० = सुध-बुध खो गई। प्रवाल = नए निकले कोमल पत्तों की भाँति। ततछन = तत्क्षण, तुरन्त। सुदेस = मगध। सुरेस = इन्द्र। रस = आनन्द से

अमित गतिवाले होकर, आनन्द में मग्न होकर। सेस=शेषनाग। [२४४] अङ्गराज=सुगन्धित लेप । मेदिनी=भूमि । [२४६] बरन=वर्ण, रंग। बागे=ढग के। मीढ़ि=मलकर। [२४७] समतूल्=तुल्=समान। [२४८] बास० = वासस्थान । मन्दे=मन्दे बाजार में। [२४६] कहु०=उसे भस्म रमाने से वैसे सुख मिलेगा। [२५०] चाँड=अभिलाष । बिसासि=विश्वासघाती । तीजो पथ=तीसरा पन्थ (मुरारेस्तृतीय पन्था)। वह=ऊधो। साधु=सज्जन, सीधा। [२५२] कटु=कड़वी। अङ्गनिधि०=श्रीकृष्ण के सगुणरूप के समुद से। अनमिल=बेमेल (निगुण)। अमोलत=अमूल्य या बहुमूल्य ठहरा रहे हो (सगुण से निर्गुण को बढ़कर बतला रहे हो) [२५३] अतीत=परे। [२५५] स्याम-तन०=श्रीकृष्ण की ओर देखकर, उनका विचार करके। [५६] बारे=बाल्पन से ही। [२५७] अगाउ=आगे आगे। [२५८] कचोरा=कटोरा। ताटक, खुभी, खुटिला=कान के गहने। फूली=फूल, लौंग (गहना)। सारी०=कमल और चन्द्र स अंकित साड़ी। सारस=कमल। गूदर=फटी। [२५६] भेद०=पता न चला। बदन को=कहने के लिए निश्चित करने। बायु०=प्राणायाम । ताए=तपाए। [२६०] सँचि०=एकत्र कर रखी थीं। छार=धूल। सरबरि०=कूबरी के योग्य। घटी०=बुरा किया। हम जोही=हमें देखते रहे, हमें ग्राहक समझते रहे। [२६१] राहत=रहते हैं। कोट=बाँस की कोठी। [२६२] परेखो=पछतावा । बारे=छोटे। भीर=सकट, कष्ट, कठिनाई। सरघो=पूरा हुआ। बायस०=कौए का भाई, कौआ। [२६३] पत्यानो=विश्वास किया। [२६४] करसायल=मृग। अविधि सौं=अन्याय से। [२६५] सूर=शूर, वीर, सूरदास। [२६७] बारक=एक बार। [२६८] सोधियो०=उनसे पूछना। घात=हत्या । [२६६] ज्यौं०=जैसे माता अपने जने बच्चे का पालन करती है। [२७०] गुरु०=गुड

दिवाकर यहलाभो। कोउ०=किसी प्रकार। [२७१] अन्तरमुम=भीतर। पांडु०=पाण्डु रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है। डगरी=डगरा हुआ। छपद=भ्रमर। [२७३] मदिरा०=शराब पीकर। पराग०=पराग की पीक की रेखा। कुम० 'विषकुम्भं पयोमुखम्', विष का भरा घड़ा, जिसमें ऊपर दूध हो। डपारे=धावे। कूत कर्म से। [२७४] घुटुप=घूप। नेरे=निकट। [२७५] पिछौंहैं=पीछे की ओर। उर०=जब छाती छेदकर पीठ जा निकले। पाछे०=पीछे हटते हुए भागे नहीं। कबध=धड़। मधुर०=सामना करने, भिड़ने के लिए। [२७६] चिहुर=चिकुर, केश। यह०=इस प्रकार से। नयन०=नेत्रों का हरण पूर्ण करते हुए। बटमारे=डाकू, चोर। [२७७] कागर=कागज़, पत्र। [२७८] पङ०=कीचड़ ही मैली माटी है। ब्याज=बहाने से। अनुहारी=समता। [२७९] भीति=दीवार। [२८०] हठि-हि=हठपूर्वक। प्रवेसनि=जल की धारा के प्रवेश में। विसेषनि=विशेष रूप से। [२८१] धावन=दूत। कहा०=क्या वश है। बल=बलदाऊ। [२८२] दादुर०=माना जाता है कि वर्षा के प्रथम जल से मरे हुए मेंढक जी उठते हैं। निबिड़=घना। [२८३] सारँग=चातक। सूरमा=वीर। [२८४] खरे=तीव्र। [२८५] इते मान=इतना अधिक। अन्त=मार मत डालो। [२८६] सिंधुतीर=द्वारका में। [२८७] बयन=बचन, बोली। भीषम=भीष्म पितामह की भाँति। डासि=बिछाकर। दच्छिन०=भीष्म पितामह जब युद्ध में घायल हुए तब सूर्य दक्षिणायण थे, उत्तरायण होने पर उन्होंने प्राण त्यागे। उन्हें इच्छामरण का वरदान था। [२८८] निमेष०=पलकरूपी तट। गोलक=पुतली। तट=ओठ और कपोल ही तट का मैदान है। [२८९] पोच=बुरा (सोच का विशेषण)। [२९०] एक अङ्ग=(एकांग) केवल, निरन्तर। ज्यों मुख०=जब वह पूर्ण मुखचन्द्र सामने था। रई=रँगी, डूबी। सकति=शक्तिभर। [२९१] सारि=

निकालकर, पूरा करके। [२६३] कुहू = अमावस्या। तमचुर = ताम्र-चूड़, मुर्गा। [२९६] चारि = चाड़, मुदा। बसन = वस्त्र। दसन = दाँत। [२९७] बह्नि=आग धारण करना है। छपा = रात्रि। [२९८] मापै = मुकसे। मत्त=डाट न ले। [२९९] टुगा० = वृक्षों का गिरना ही हुआ है। मिव = स्तन। [३००] तनुदगधे = शरीर का जलना। [३०१] सन = से। [३०३] सोध = पता। गहक = विलय। अम्बर = आकाश। [३०७] सीरे = ठंडे। सूरमा = वीर। [३१०] राम कृस्न० = बलराम और श्रीकृष्ण के कारण किसी को कुछ नहीं समझता थी। [३११] चिलक = शुद्ध 'तिलक', एक वृक्ष जो वसंत में फूलता है। मृगपशु = पशुजाति। वलित = युक्त। [३१३] दागर = नाशक। [३१५] सांधौ = उत्कंठा। [३१७] पलक = पँख, पलक। अम्बु = जल, आँसू। अमृत = अधरामृत। कीर = सुग्गा, नासिका। कमठ = शुद्ध 'कमल', मुख या नेत्र। कोकिला = वाणी। [३१८] मूल संस्कृत श्लोक यह है—जटा नेयं वेणी कृतकचकलापो न गरलं, गले कस्तूरीयं शिरसि शशिलेखा न कुसुमम्, इयं भूतिर्नाङ्गे प्रियविरहजन्मा धवलिमा, पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर। किं मां व्यथयसि। [३२४] उपाकर = चन्द्र, मुख। सारस = कमल। [३२६] परेखो = सोच। पौरि = द्वार। [३२८] उमापति = शिव। सोध० = पता पा गया। दसन० = दाँत से काटने का। नैनन० = खारा होने से। [३३०] भवभूति की रचना यों है—धत्ते चक्षुर्मुकुलिनि रणत्कोकिले बालचूते, मार्गे गात्रं क्षिपति बकुलामोदगर्भस्य वायौ; दावप्रेम्णा सरसविसिनीपत्र मात्रोत्तरीय, ताम्यन्मूर्तिं श्रयति बहुशो मृत्यवे चन्द्रपादान्। [३३२] दुखारी = दुखी। सलाका = सलाई (अंजन लगानेवाली)। आरति = दुःख। [३३५] हंस = परमहंस, ब्रह्मज्ञानी। [३३७] कैसे = समान। आगरे = पटकर। [३३८] जल० = जल में शीशी डुबाने से बुल्ले निकलते हैं। बार = देर। [३४०] पास = पाश, जाल।